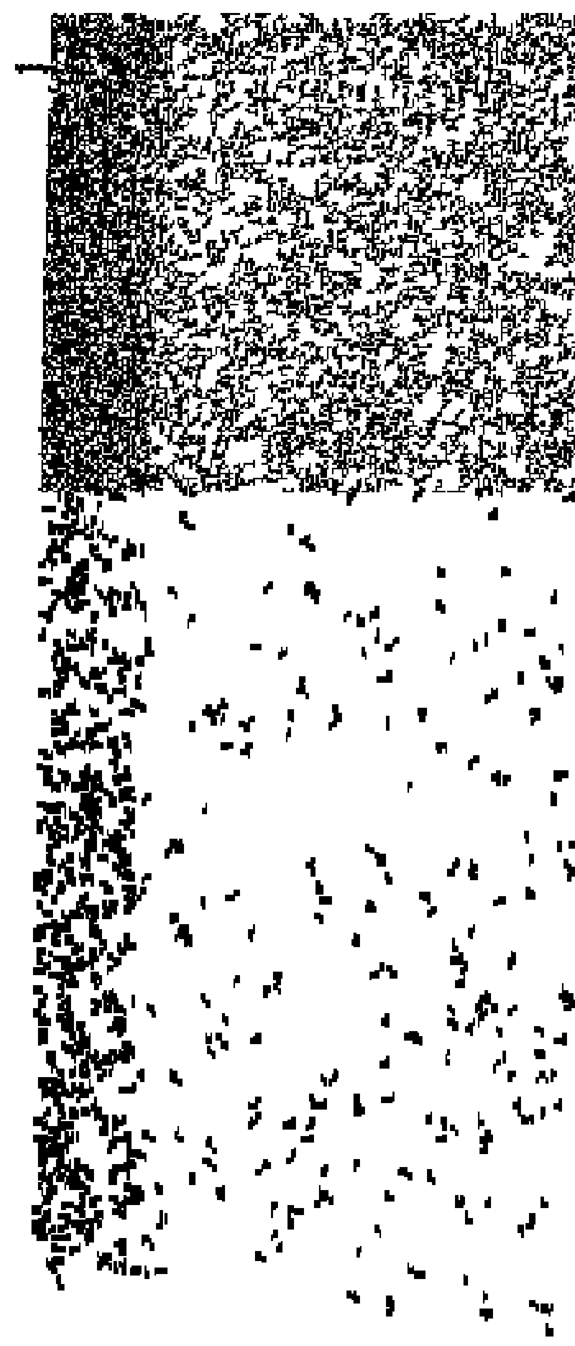
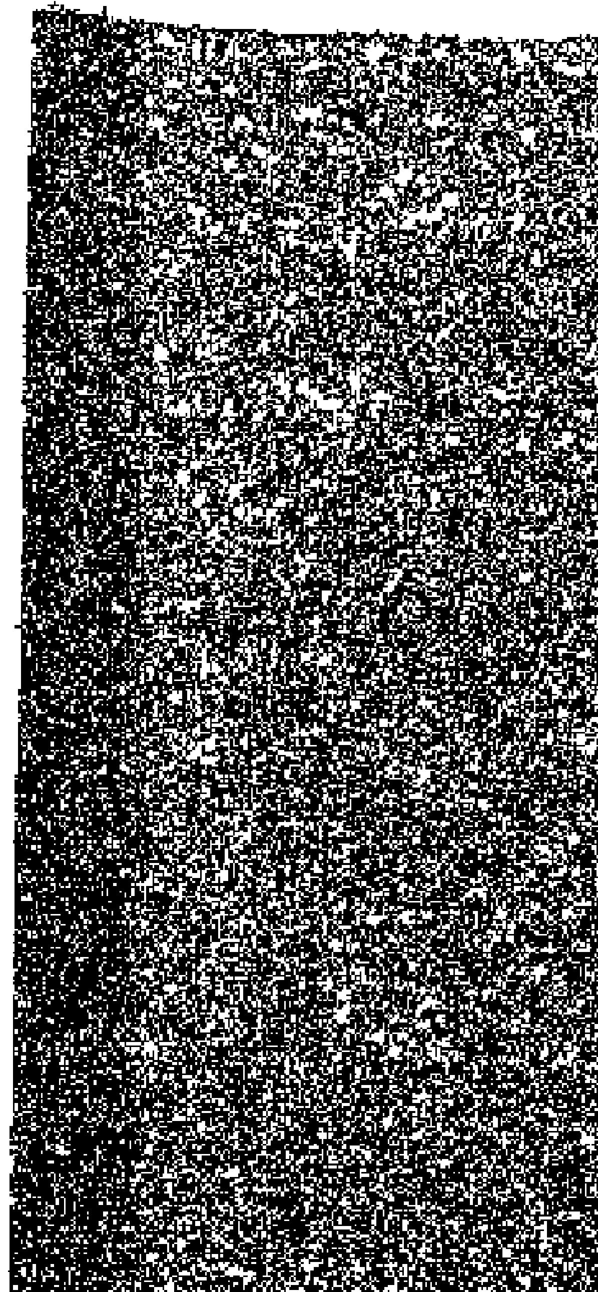
डॉ० कौशलेन्द्र पाण्डेय ने व्यंग्यकार के रूप में भी प्रकट होकर बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। हास, परिहास एव व्यग्य जीवन के मीठे-नमकीन औरे तीखे रस हैं। हास मे हम दूसरों के साथ मिलकर हसते हैं, परिहास मे दूसरों पर और व्यग्य मे हम किसी व्यापक कुवृत्ति पर शर्करावृत प्रहार करते हैं। तीनो में व्यंग्य की महत्ता स्वय सिद्ध है।

कौशलेन्द्र के व्यग्य में शालीनता है। ये कुण्ठित व्यग्यकार या क्रुद्ध व्यग्यकार या कोरे व्यग्यकार न होकर स्वस्थ-सहज एवं सोद्देश्य व्यंग्यकार हैं। इनका उद्देश्य दल या वाद का प्रचार या प्रतिक्रिया का प्रस्फोट नही, प्रत्युत समाज का परिष्कार है। इनके व्यग्य मे जीवन के सत्य विद्यमान हैं, उसे सर्वग्रासी पतन से उबारने की ललक के अतिरिक्त सरल-सहज रोचकता भी विद्यमान है। इनकी व्यंग्य रचनाओं के मूल मे सत्य एव निष्ठा के दर्शन भी सुलभ हैं।

डॉ० धनंजय सिंह
कादम्बिनी (मासिक)
नयी दिल्ली





गुदगुदी

कृति ' गुदगुदी (गुदगुदाते निबन्धो का ऐतिहासिक अभिलेख / कृतिकार कौशलेन्द्र पाण्डेय, प्रकाशन तिथि : होली, १६६८, मूल्य : मात्र छियासी रुपये (सजिल्द) / प्रथम संस्करण / आवरण शिल्पी: कौशलेन्द्र पाण्डेय प्रकाशक : सानुबन्ध प्रकाशन (प्रा०) लिमिटेड, डी-- २७३, इन्दिरा नगर, लखनऊ--१६

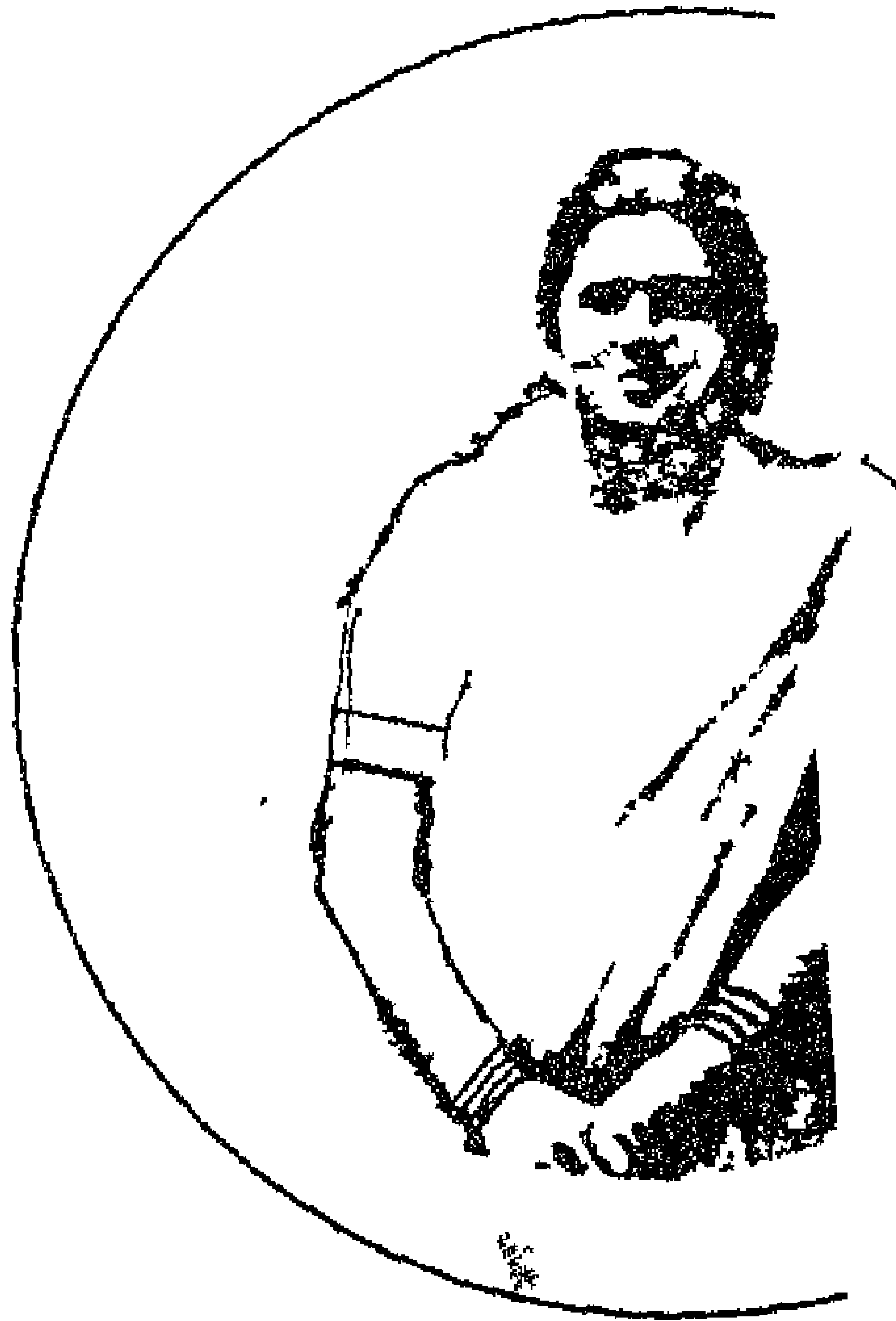
KRITI : **GUDGUDI** (GUDGUDATE GADYON KAA AITIHASIK ABHILEKH/ WRITER KAUSHALENDRA PANDEY P[illegible] TITHI HOLI 1998 MOOLYA 88/- CHH YAAS RUPYE) PRATHAM S / AVARAN

अनुक्रम

डॉ० कौश
के रूप मे भी प्रक
का परिचय दिया
जीवन के मीठे-न
हास मे हम दूस
, परिहास मे दू
किसी व्यापक कु
करते हैं। तीनों
सिद्ध है।

कौशलेन
ये कुण्ठित व्यंग्य
कोरे व्यंग्यकार
सोद्देश्य व्यंग्यका
वाद का प्रचार य
प्रत्युत समाज व
मे जीवन के सत
पतन से उबार
सरल-सहज
नकी व्यंग्य र
नेष्ठा के दर्शन

'गुदगुदी'



साहित्य-मर्मज्ञ, धर्म प

श्रीमती सुशीला दीक्षि

पत्नी श्री पी०पी० दीक्षित, आई०ए०ए

के चरण कमलों में सा

—कौ

कांव-कांव

काव-कांव का कर्कश स्वर कौवे का होता है, लेकिन इसके अर्थ यह नहीं कि मिष्ठान्न के स्वाद वाला स्वर ही कानो को अच्छा लगे। शुरू-शुरू मे पत्निया सभी के लिये मधुरस्वरी होती है, अनन्तर किसी मनोकामना की पूर्ति के लिए ही वे अपने नाम को सार्थकता प्रदान करती है। किन्तु दोनो ही अवस्थाओ मे पतिवर्ग कितने ही घोडे बेच डाले-नीद थोडा भी नजदीक नही आती। अतः कौवे का स्वर कोकिलबयनी के स्वर से कतई नाकारा नहीं। कौवा बडा ज्ञानी यानीकि कागभुसुड होता है। नागुलामी या कहिये आज़ादी की शुरुआत् के जिस दिन हमारे देश के रहनुमाओ ने स्वच्छात्मा बनने के लिए संसद मे अपने घृणित स्वरूप पर भिगो-भिगोकर अपनी ही पादुकायें गिन-गिनकर मारी थीं- एक से एक कागभुसुंडो के वचन सुनने को मिले थे। घर-घर ये दृश्य और ये वचन देखने-सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। ज्ञान का प्रकाश हो जाने के कारण मुई बिजली भी इस दौरान रातो दिन पल्थी लगाये बैठी जमुहाई लेती रही।

रहनुमाओ की जैसी दशा हरेक आदमी की हो जाती है जब वह किसी ग़मी मे शरीक़ होने के लिये अच्छे-अच्छे वस्त्र धारण करके जेब में कघी डालकर और कलाई मे घडी बॉधे घर से चलकर श्मशान पहुँचता है। मित्र का शव जलते देखकर वह भी अपना जीवन जलाने के लिए सिगरेट के लगातार कश लेता है। तब वह जीवन को निरर्थक और संसार को असार समझने लगता है। ख़ुद से ही सवालों की झडी लगा देता है- काहे के लिए बेकार की मारामारी. ..काहे की उठा-पटक और सौदे बाजी जब इस लोक मे इनकम टैक्स के और परलोक मे जमदूतो के कोडे बर्दाश्त करने पडें, बेशक़ीमती सन्तान राह भटक जाये, फिर चिता मे आग देने के लिए भी उसके लिए हाका करना पडे..... . ... पत्नी भी यह सोचकर दुलत्ती चलाये कि लक्ष्मी से डहरी उफना रही है तो इस मुए की आगे क्या जरूरत.... और सब कुछ खुद ही हडप ले-आख़िरी यात्रा के मौके पर जेब खर्च के लिए कुछ भी साथ न ले जाने दे।

मधुबयनी नारी के बोल कलेजे को कितना ही तिलमिलाहट दें- हम उसे हाथ से या ककड फेंककर या फिर ताली बजाकर भगाये तो उल्टी पड़ जायेगी, घर किसी सुलभ शौचालय की तरह सडाध मारेगा, लेकिन कौवे की बात पसन्द न आये या उसका स्वर कानों को खराब लगे तो हम उसे उक्त तरीके के अलावा गालियो की गोलियों से भी भगा सकते हैं। वह हमारे खिलाफ प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त करेगा, न पुलिस चौकी ही जायेगा। उसे हमें किसी प्रकार का कम्पनशेषन भी नहीं देना। मै दुर्वासा और भृगु के भतीजे या वह जो राष्ट्रपति का इलेक्शन बुरी तरह हारे थे.. ...संसद का टिकट न मिलने से मायूस हैं, उन शेषन की बात नही कर रहा गोकि ये वाले शरीफ़ हैं-न गुण्डे हैं, न माफ़िया-इनसे अब न किसी शाप का डर है न लात खाने का। मैं कमपेनशेषन की बात कर रहा हूँ. ... .हरज़ाने या गुजारे की।

गुज़ारे की बात चली तो इस बेचारे की बाबत थोडी-बहुत चर्चा कर लें। भब गुज़ारे का चलन बदल गया है। पत्नी अपने पति को भी देती है अगर पहले

की इन्कम दूसरे से अधिक है या दूसरा हन्ड्रेड प्रतिशत पहले पर ही जीविका के लिये निर्भर है। उत्तर प्रदेश की सीमा से गलचुम्मी करते एक प्रदेश का उदाहरण दे रहा हूँ। यहां के एक पति-पत्नी दोनो ही एक दूसरे को गुज़ारा दे रहे हैं। पति ने पत्नी को एक ज़माने तक रबडी की तरह चाटा, बाद में पुलिस की हिरासत मे जकड गये। महीनो तक क़ैद मे रहे और अब भी कुछ पता नही कब फिर यूँ ही जकड़ लिए जाये। तो पत्नी को अपनी कुर्सी ही गुज़ारे के रूप मे बख़्श दी-अब उसी गुज़ारे से वह अपने पति को भूसा-पानी दे रही है।.. छोडते है। ऐसी महान् आत्माओ के महात्म्य के अत्यधिक वर्णन से अन्तर्वस्त्र से आवृत शरीर मे खुजखुजी होने लगती है। पाचन क्रिया पर यूँ असर पडता है जैसे कि जानवरो की नाद की रोटी चुराकर खा लिया हो जो हज़म होने का नाम ही नहीं लेती।

इस कृति मे गुदगुदाते व्यंग्य नाम से कौवे के स्वर वाली गद्य रचनायें प्रबुद्ध पाठकों के लिए परोस रहा हूँ। इन्हें नींद हराम कर देने वाले या आहत करने की क्षमता रखने वाले व्यंग्य कहने की ज़ुर्रत नही कर रहा हूँ क्योकि बडे-बडे विद्वान अति कटु मादक पेय, जिसे आप ठर्रा भी समझ सकते है, जैसे लेखन को व्यग्य की सज्ञा देते है।

कुछ विद्वान तो कहते है कि व्यंग्य मे तीव्र विरेचन क्षमता होना आवश्यक है, यानी कि उसका सकेत जिस पर हो उसे विकट डायरिया हो जाय और यूँ चुभे जैसे कि रात भर दसियो हजार मच्छर लगातार नश्तर लगाते रहे हों। श्री शरद् जोशी ने स्वातंत्र्योत्तर भारत में व्याप्त विसंगतियो पर प्रहार किया। वह समाज की विसंगतियो का स्पष्ट एहसास कराने के पक्षधर थे, मूर्छित करने याकि आदमी की नींद हराम करने, अथवा जातक को जान से मार देने के नहीं। श्री के पी. सक्सेना भी अपनी व्यग्यधर्मी रचनाओं से पाठको को विसंगति के विरोध में गुदगुदाने की शैली का अनुशरण करते रहे। उनकी इस शैली को लोकप्रियता भी प्राप्त हुई, फलस्वरूप अनेक युवा रचनाकार श्री सक्सेना के पदचिह्नों पर चलते पाये गये। इनके व्यंग्य को विशिष्टता प्रदान करते है इनके

भाषायी चटखारे। मनोहर श्याम जोशी की भी होम्योपैथिक शैली रही। व्यंग्य मानकर मेरी इन गुदगुदी करती गद्य रचनाओ का दादा–परदादा के ज़माने की उसकी परिभाषा के मुताबिक ऑकलन किया जाना हो, तो समझिये अनखिले अम्बुज की तरह अपनी हथेलियां समेटे हुए मै विनयावनत हूँ। मै तो जटिलताओ के नेस्तनाबूतीकरण का हामी हूँ. . दकियानूसीपने का दुर्दान्त दुश्मन हूँ। व्यग्य के रूप–स्वरूप के बिन्दु पर माननीय आदर्श श्री शरद जोशी तथा सम्माननीय नारायनपुरी वाले भाई के०पी० सक्सेना का अनुयायी हूँ। मेरी तो कोशिश है कि व्यग्यानुरागी उधर रोज़ सुबह अपने गालो के रोयें साबुन लगाकर ब्लैड से साफ़ किया करे या राशन की दूकान पर क़तार लगाये खडे–खडे फुक्की मारा करे, उडीसा मे मुबइया कोमलांगियों के शीलदोहन की ज़बर्दस्तिया मुकम्मल तौर पर अखबारो मे पढते रहने को मिलें, नेता लोगो की कम्पनी के लिए पोलीटिक्स में नर्तकियो और किन्नरियों की तादाद में इज़ाफ़ा होता रहे, मर्द मुख्यमत्री जेल मे मालिश कराये और अपने मर्द को चटोरा बनाने वाली उनकी पत्निया मुख्यमत्री के कमाऊ ओहदे पर अपनी प्यारी जनता को मेकअप–शुदा चंदोवा दिखाती रहे

इधर मै तथाकथित व्यग्य को मात्र गुदगुदी उत्पन्न करने वाले संस्कार देता रहूँ, गुदगुदी जो विसगतियो एव विद्रूपताओं को माइल्ड झटका देने वाली चकोटी काटे और आदमी को हर नज़रिये से साफ–सुथरा बनाये।

प्रबुद्ध पाठक ही देखे कि ज़माना कितना बदल गया है। रसोई तक घर के किसी कोने से फुटपाथों और चौराहो पर चली आई हैं, पहले की तरह कपडे उतारकर भोजन का जीवन सुफल एवं सार्थक बनाने की कौन कहे, अब हम खाने-पीने के मौके पर जूते तक नही उतारते है, दावतो में खाने के लिए हाथ की उगलियो का क़तई इस्तेमाल नही करते, पेडों की कटान पर अँकुश लगे इसलिए हम अब पीढो पर बैठकर नही बल्कि खडे-खडे ही खाते है, हमारी पत्नियां जो पहले सूरज से शरमाती थी,आबदस्त लेने के लिए उसके डूब जाने के बाद ही घर से निकलती थी, वे अकेले ही कहीं भी चली जाती है। घूघट प्रथा को विराम लगा तभी तो हमे और आपको शुभांगियों की सम्मोहक अदाओ तथा अलकों, चोटी और वेणी

देखने का सौभाग्य मिला। अनेकानेक साबुन, शैम्पू और केश रगीकरण प्रसाधनो की फ़रोख्त बढी। अतएव ज़माने के मद्देनजर व्यग्य के व्यवहार तथा उसकी शास्त्रीय परिभाषा मे भी बदलाव लाया जाना चाहिये वर्ना गगारिन और बुल्गानिन वाले देश की तरह या फिर अपनी चतुष्पदी के शीशो की तरह व्यग्य महोदय विधा की ऊँचाई तक पहुंचने से पहले ही चूर-चूर होकर बिखर जायेगे। इस बात को व्यग्य के हमारे सदर्भित पूर्वज लेखनधर्मियो ने कुछ-कुछ समझा था।तो मै अपने व्यंग्य का नाम गुदगुदाता गद्य रखता हूँ और इस कृति को 'गुदगुदी' की सज्ञा से विभूषित करता हूँ।

'गुदगुदी' मे संकलित गुदगुदाती गद्य रचनायें हिन्दी अंगरेजी, उर्दू, फारसी, पजाबी, बंगाली, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगु वगैरह देश की सारी ही भाषाओ के हीरे-ज़वाहरातों से गुंथीं है जिससे ये उत्तर में पर्वतों तथा बकिया दिशाओ मे पानी से घिरे पृथ्वी के इस अजीम टुकडे के घर घर मे पढी और समझी जाय, तभी तो सभी लोग समझ पायेंगे कि कब और किस पर.. और किस बात पर क्यू हंसा जाना है। प्रबुद्ध पाठक समझते ही है कि किसी की अच्छाई पर तो कोई हंसता नहीं। बस.....गुदगुदाते गद्यों यानी गुदगुदाती रचनाओं की इसी मे सार्थकता है, साथ ही इस तरीके से श्री कृष्ण-भक्त सुदामा की नगरी वाले जगत बापू की हुकुमफ़रमाई भी हो जायेगी,.. .. यही कि पाप से नफरत करो, पापी से नही,. यही हुक्म तो किया था उन्होने।

जैसे किसी भी साल मे नवरात्र के आठ-नौ दिन बडे पवित्र होते हैं कोई भी शुभ कार्य करने के लिए, उसी तरह गुदगुदी के मुद्रण तथा प्रकाशन के लिये चार दिसम्बर सत्तान्नवे की अपराह्न तीन बजे से पन्द्रह मार्च अट्ठान्नबे तक का समय गंगोत्री से रिषीकेश तक की गगा की तरह अत्यन्त पवित्र है। .
इस अवधि की कितनी ही विशिष्टतायें है। पहली यह कि इस दौरान पैदा हुये हिन्दुस्तानी बच्चे पोलियों तथा दृष्टिहीनता के शिकार नही होगे, उनकी पीढ़ियॉ-दर पीढियॉ बोफ़ोर्स जैसे कालजयी घोटाले की उत्तम तकनीक को ह्रदयगम कर

लेने से अभावग्रस्त भी नही होंगी , वे बच्चे बडे होकर सरकारी कर्मचारी बनेगे। अगर मंत्री, मुख्यमत्री या प्रधानमत्री सरकारी कर्मचारी की कोटि में शामिल होने मे खुद को बेइज्ज़त महसूस करते है, तो ये बच्चे बाबू या सरकारी अफ़सर के अलावा देश या प्रदेश के रहनुमा भी बन सकते हैं। तीसरी खुशूसियत यह कि उन्हे अक्सर ही टीन के गुल्लक में वोट की पर्ची डालकर राजा उत्पन्न करने का स्वर्णिम अवसर मिलेगा, चौथा यह कि वह लेडी रोबोट से शादी करेगे जिससे कि देश की जनसख्या तथा बेरोज़गारी की समस्याये भी यू गायब हो जायें कि सरकार उन्हें गंदे दाग की तरह ढूढती ही रह जाय। एक खराबी की भी बात काबिलेगौर है। इस अवधि के जन्मे बच्चे कल्पना चावला, स्टेफीग्राफ, श्लेष रेखा, जूही और माधुरी से विवाह बन्धन में नही बॅध पायेंगे- उनका वात्सल्य ही हासिल कर सकेगे।

गुदगुदी के गुदगुदाते गद्य लिखने से पहले मैंने छोटे पर्दे के 'हिन्दुस्तानी' वाले रिटायर्ड पुलिस कमिश्नर और पहले वाले महाभारत के दृष्टिहीन पिता के वरिष्ठ पुत्र दुर्योधन, साहिल नामक सीरियल के हीरो साहिल के स्वर्गीय पिता खलनायक सम्राट् जीवन, मरहूम के०एन०सिंह, च्यवनप्रास कॉपरटी और कन्डोम बनाने वाली सभी कम्पनियों तथा माफियाओ द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का ज़ायका ले रहे यू० पी० के वरिष्ठ अफसरों का स्मरण किया था, टी०बी० और एड्स महारोगो के जानकार उभयलिगीय डाक्टरो की सोहबत भी की थी। इससे मुझमें यक़ीन जागा कि यह कृति भले ज़रूरत से ज़्यादा नुक्ताचीनी की प्रवृत्ति वाले मनुष्य को अरुचिकर-लगे, हमारी बहनों,भाभियो, सास और सरहज तथा उनके पतियो, पुत्रों और आत्मजाओ को नापसन्द नहीं होगी-मछली का पाउडर मिले गरम मशालो की बनी सब्जी और छोले की तरह रूचिकर लगेगी।

बुद्धि की देवी माँ वीणापाणि तथा विघ्नहरने वाले भगवान हेरम्ब के आशीर्वाद के लिए अर्जियां यथासमय पहले ही लगा दीं थी। कामपुत्तर द्वारा टाइप की गई रसीद भी है मेरे पास। वैसे ये अर्जिया लापता करने के हुनर वाले कोई भी

लिपिक उनके दफ़्तरो मे नही, न वहा रिश्वत चलती है, न मेहनताना, नज़राना या शुकराना। इन बचनो के साथ ही लेखकीय कांव-कांव अब इति के विन्दु पर ला रहा हूँ। समाज, राष्ट्र और समष्टि के कल्याण की कामना करता हूँ। यदि देश की आज़ादी की एक और स्वर्ण जयती होना उसकी तकदीर मे लिखा हो, तो कम से कम एक रजत जयती तो वह उसके बाद भी मनाये, इस बीच इसकी नस-नस मे कुछ न कुछ होता रहे।

अब एक आखिरी बात।

कृति की गुदगुदिया विभिन्न अवसरो पर लिखी गई। उन अवसरो की दृष्टि से वे प्रासगिक है। अतः इन्हे उनसे चिपकाकर पढने मे ही चूरन-चटनी और हरी मिरच का मज़ा आएगा। इन गुदगुदियों के प्रकाशन मे सानुबन्ध परिवार का अपूर्व सहयोग रहा ही, प्रेरणा ध्रुवतारे के एक-एक किलोमीटर इर्दगिर्द चमक रहे नक्षत्रो की सख्या के बराबर शुभाकाक्षियो तथा इष्ट मित्रो की थी, आभारी हूँ मैं उनका। अरब सागर और बगाल की खाडी से उठने वाले तूफान,पापिष्ठ और प्रेत, ब्याहे-अध-ब्याहे और देश के असंख्य बेसहारे, नकली बनास्पति और मिलावटी गरम मसाले, नकली डाक्टर, नकली इन्जेक्शन, टेलीविजन की धोबिनें, हरैले भारतीय खिलाडी भी मेरी 'गुदगुदी' पर आशीर्हस्त रक्खेगे- ऐसा मेरा विश्वास है।

□

पछतावा

आज मैंने रोज के दूने यानी कि सिकन्दर बाग के चार चक्कर लगाये। अंदर की एक-एक फुलवाडी मथ डाली लेकिन श्रीवास्तव जी का नामोनिशान तक न दिखा। किसी मत्रतत्र वाले के चक्कर में तो नही पड गये श्रीमान् ? रघुबीरपुरी में हो रही मच्छर मार धुवां यज्ञ देखने तो नहीं चले गये... .या फिर गैस सिलन्डर की लाइन मे.. । सहसा कुछ झुके--झुके आते हुए दिख ही गये। अपने आप बोले, "भतीजे, मच्छरो के सहार के लिए कोई धुऑ यज्ञ नहीं की जाती। इस काम के लिए तो शक्कर ही काफी है। यज्ञ का मक़सद होता है– उन लोगों की ऑखो में दिन मे दिनौंधी और रात मे रतौंधी पैदा करना जो किसी ऊँची कुर्सी को ललचाकर घूरते हैं।"

मैने फौरन भाप लिया कि श्रीवास्तव जी एक हज़ार आठ नम्बर के सत हैं शान्तिप्रिय दुर्वासा हैं नारदी स्वभाव है इनका इसी कारण उनकी बात पर

बहुत ज्यादा ध्यान न देकर सवालो की एक मुक्की मारी- यह बताये महात्मन्, आज आप इतने विलम्ब से क्यों ?.. .दूसरे यह कि किस वजह से आपकी कमर और कन्धें झुके-झुके हैं ? घर के बम्बो से क्या साफ़ पानी आने लगा है ? तीसरे यह कि प्रातः साफ-सुथरे वातावरण में सचरण करना चाहिए, लेकिन आप श्मशान की ओर से क्यों ?

बताया उन्होने- "आज तक कभी किसी पुराने जहाज पर नही बैठा हूँ, और किसी नए से नए पर भी नहीं। अर्थात् किसी हवाई हादसे में मेरी मौत होने की कभी मत सोचना। सिविल लाइन में मेरे घर के सामने इतनी ज़्यादा गन्दगी है कि मुझे जहरीली से ज़हरीली गैस से बेअसर बने रहने का अच्छा-खासा अभ्यास है। जाडो मे मेरे घर से काफ़ी दूरी पर अलाव लगता है। इससे ठण्ड से ठिठुरकर बेजान होने का भी अन्देशा नही। अकाल-दुर्भिक्ष से भी मुझ पर कोई ख़राब असर नही पडने वाला, क्योकि मैं जानता हूँ कि दूसरे मुल्कों से सेलखडी वाला दूध, फिकी-फिकाई दवाइयॉ और मरे-अध मरे फ़ौजियो की पतलून और कमीजे फौरन से पेश्तर मुहैया होगें, अच्छी-खासी ब्याज दर पर कर्ज़ भी मिल जायेगा .नकली बारिश करने वाले बादल बनाने के लिये, बडी-बडी नहरे और नालो के निर्माण के लिये।.... .और भैया! मुझे किसी ने सूराख मे डालकर नहीं झुकाया है। झुका हूँ शर्म से लदा होने की बेशर्मी से। दूसरों को इस बात का अहसास तो रहता है कि मै कगाल नहीं। अपनी ज़मात के लोगो को बुलाकर, साथ-साथ उठ- बैठकर एक दूसरे को समझ लेता हूँ, किसी होटल में जब भी चाहू शान से खा-पी सकता हूँ, लेट सकता हूँ, खर्राटे भर सकता हूँ। कर्ज़दार के घर कभी चोर भी तो नही आते। अस्लियतन कर्ज़दार आदमी कर्ज़ चुकाने मे ईमानदार होता है। एक हाथ लिया, दूसरे से पिछले का भुगतान किया। फिर तो मिलने वाला कर्ज़ जैसे पास बुक में ही जमा हो ! तुम्हे पता नही भतीजे, मै कर्ज़ा लेने का शौक़ीन इसलिए हूँ कि उसी से दूसरे की मदद करके महाजन और अच्छा पडोसी कहाऊ, उसके बीबी बच्चों को जब जहॉ जैसे चाहूँ घुमाऊँ।...और बरखुरदार, रहा जवाब तीसरे सवाल का सो भी सुनो।"

कुछ देर बाद श्रीवास्तवजी की बडी-बडी ऑखों मे मौन चिन्तन चलता रहा जैसे कि स्विस बैंक के लाकर में धरे हुए बहीखातों की प्रविष्टियॉ वह यही से पढ रहे हो। यकायक उन्होने खामोशी भग की, 'कल मेरा डाक्टर मुझे देखते ही आपे से बाहर हो गया .. ..' जल्दी मरना है क्या तुम्हें जो सफाई-वफाई के चक्कर मे पडे हो ? ..जानते हो तुम कि चेचक का इलाज चेचक का मवाद ही है। इसके ही कीडो का इजेक्शन लगाया जाता है। यह समझो भतीजे कि हम बडे ख़ुशकिस्मत है कि जो भगवान की जन्मस्थली हिन्दुस्तान मे पैदा हुए जहॉ हरेक गन्दी और ज़हरीली वस्तु चौबीसों घंटे सुलभ है.... बिक्रीकर मिला नमक और घोडो के सहयोग से निर्मित मसाले सुलभ है, यहॉ तक कि पानी मे भी तरह-तरह के मिनरलों की ही मिलावट है। दही में हम लोग कीडे खाते है, दालमोठ मे भी कीडो द्वारा बनाये गये सुराखो वाले काजू ही तो इस्तेमाल करते है.... कितने फायदेमन्द होते है कीडे हमारी सेहत के लिए ! सपरैटे की दही बड़े सा बडा उद्योगपति, बडे से बडा महाभ्रष्ट तथा छोटे तबके का अतिभ्रष्ट कर्मचारी भी खाता है, देश का भारी भरकम नेता भी खाता है और बडे सा बड़ा मुफ़लिस भी। कहते हैं इसमें चिकनाई बिल्कुल नहीं होती जिससे किसी भी इज्ज़तआफ़जाई या बेइज्ज़ती के मौके पर दिल का दौरा पडने का डर नहीं रहता।"

"लेकिन श्रीवास्तव जी ! सरकार तो विशुद्धता प्रमाणित वस्तुयें ही खाने की सलाह करती है।" मेरी इस प्रतिक्रिया पर वह भडक उठे. ......ज्वालामुखी की तरह-लावा और गले पत्थर उगलते हुये- 'तो खावो वही सरकारी प्रमाणशुदा वस्तुएं, जब इतनी देर तक समझाया कुछ भी भेजे में नही पडा।..... अरे, सरकार तो चाहती ही है कि ज़्यादा से ज़्यादा लोग बीमार पडें- जिससे चीर फाड़ के औजारो और एक्सरे मशीनों में जग न लगे, डाक्टर और नर्सो की रोज़ीरोटी चलती रहे, लौडे बीमार रहे तो स्कूल और कालेजों में भरती की भीड़ न बढे।' ....और भइये ! नशाबन्दी की वकालत करने वाला कौन मत्री दारू नही पीता !

निर्वाक-अवाक सुनता रहा, अपलक देखता रहा श्रीवास्तव जी की भगिमॉयें। उनकी बातो से असहमत था तो पढ लिया था उन्होने मुझे मन ही मन।.... ..मुझे धिक्कारते हुए बोले, "फूलहिं फलहि न बेंत जदपि सुधा बरसहि जलद! हुह, तुम्हारा कसूर नहीं बरखुरदार, कसूर तो इस देश के आजकल की हवा-पानी और माटी का है।... .बिलावज़े तुम्हारी गुरुवाई में झीकता रहा, वर्ना अब तक पॉच किलोमीटर का मार्निंगवाक कर चुका होता। आसमान की ओर चलता तो किसी ग्रह के ऊपर बैठा-बैठा गाना गा रहा होता।" मुझे बडी हिकारत भरी नज़र से घूरते हुये वह फिर दूसरे रास्ते पर मुड लिये थे।

□

आज गांधी बाबा का जन्म दिन बा

श्याम सूरत लेट-लेटे गुनगुनाया, हथेलियो से दोनों आंखों को मसला और प्रातक्रियाओं को यू निपटाने लगा जैसे कोई स्वेच्छाचारी कम्प्यूटर हो! अपने स्कूल के कपड़े पहन कर मोमबत्ती की तरह मेरे पास खड़ा हो गया तो मैने दो मीटर दूरी वाला एक सवाल प्रक्षेपित किया– 'बिना बस्ता लिये ही चला जायेगा स्कूल, और आज इतने सबेरे ?...... ..मास्टर लोगो की घरवालियाँ तीरथाटन के लिये गई हैं क्या ?'

'तो क्या आप यू ही पडे हैं इतनी देर तक बिस्तर पर बिना इस जानकारी के कि आज बापू का जन्म दिन है?' सूरत का यह व्यग्यधर्मी उत्तर सुनकर मेरे नकुने के सारे ही बाल झुलस गये। घूरती हुई आंखों के माध्यम से मेरी प्रतिक्रिया स्पष्ट थी– 'गांधी जी हमारे गाधी बाबा है पर वे तो तुझ मुए के बापू बन गये। अपने बाप का ओहदा उसको दिये दे रहा है जिसे कभी देखा तक नहीं।' समझ

गया वह मेरे नेत्रों की भाषा, तो . .मेड इन चाइना तमचा चलाया-'आप भी तो मुझसे पूछा करते है कि चन्द्रगुप्त मौर्या के पापा का क्या नाम था ? मैने भी तो इन दोनों को नहीं देखा।... आज, मैं रिक्शे पर जाऊँगा स्कूल, आने-जाने के पैसे दीजिये।'

'क्यो, तुमने कब देखा अपने बापू को रिक्शे पर'। ऊघते हुये ऑखो से ही सूरत के प्रति घिन बिखेरते हुये दुतकारने के उद्देश्य से मैंने अपनी नाक के दोनो नथुने मस्तक की ओर तानकर फैला दिये थे। तकिये के नीचे रात भर सोते रहे एक दस के नोट को चुटकी से खीचकर निकाला, मन ही मन उससे कहा भी कि .आ गई है तेरी शामत, चल दे यात्रा के लिए, और फिर किया उसे श्याम सूरत के सुपुर्द।

फिर. ..। फिर मै खुद थोडा सा सहमा क्योंकि गांधी जी ने जाते-जाते अपनी सारी ही मज़बूरी देश के गण्यमान्य नेताओ और सरकारी कर्मियों को ही तो बाट दी थी, तो कॉखते हुये मैं उठा, तर्जनी से अपनी गेवाकलर दन्तावली रगडी, तौलिये से बदन और उगलियों के तने पोछे, खूटी से रात भर फसी बूशर्ट-पैन्ट को उबारा और अपना तन सजाकर मोपड़ चालू कर दी। इसी दौरान श्याम सूरत की मां के लिये आवाज भी लगाई-'देखना भाई घर-बार.. . मै चला।'

बडे बाबू आज किसी पडोसी की गमी मे चले गये थे और अफसर महोदय अपने घर में सतर्कता अधिकारियों के साथ व्यस्त थे तो सारी कारगुजारी निपटाना मेरी मजबूरी थी। दया शंकर को फूल वाली गली की दूकान मे माला लाने के लिए दौडाया और चपरासी दलपत को गाधी जी के चित्र को चमकाने के लिए लगाया तो ज्यो-ज्यो वह उस पर कपडा फेरता गांधी बाबा साफ-सुथरे तो होते ही गये, उनके पसीने की बदबू का इजाफा भी रुका। सभी की आखो मे आखे डालकर कहने भी लगे- चलों साल मे एक बार ही सही- तुम लोगो को याद

तो आ जाता हूँ। मै तो अहिंसा का पुजारी रहा हूँ, हाथ में लिये तो हूँ लेकिन कभी भी किसी को लाठी नहीं मारी, दूसरे हाथ का इस्तेमाल तुम्हे मना करने में ही करता रहा कि किसी से दृव्य ग्रहण न करो लेकिन नहीं मानी किसी ने मेरी बात.... .उल्टे बढती ही गई यह प्रवृत्ति। तुमने मेरे संकेत का यह अर्थ लगाया कि चपरासी सिर्फ पांच रूपये ले, क्लर्क कम से कम पाँच सौ, इसी आधार पर अधिकारी का भी हक बनेगा। अब उल्टी ही तो पडी। अधिकारी जी छापे वालो को रात भर चाय पिलाते रहने में जागरण करते रहे, तुम्हारा पुत्र तुम्हें बापू न कहकर मुझे इस पदवी से अलंकृत करता है जबकि मैं तो राष्ट्रपिता हूँ, किसी एक आदमी से मेरा सरोकार ही क्या। दूसरे को हक देने मे हीलाहवाली करने या उसे परेशान करने से अपना ही हक धूल चाटता है।'

'तो फिर क्या करूँ गांधी बाबा ?' मैंने पूछा। इस समय मेरे दिल की धौकनी तेज थी। पूछता गया, 'क्या चाय-समोसे भी कार्यालय में न मगवाऊँ, नगदी-नगदी का ही हिसाब रक्खू या वह भी.....? . या अंग्रेजी से देशी पर आ जाऊँ। . .त्राहिमाम् त्राहिमाम ! मदद करो मेरे पूरे हिन्दुस्तान के पिता ! टकी से धन-दौलत और विविध व्यजन नलों मे आयेगा तो मेरा नल जूठन ही तो उगलेगा- मेरा मार्ग प्रशस्त करो मान्यवर। कोई भले साल भर में याद करे, मैं अहर्निश तुम्हारा जाप करूगा, तुम्हारी मूरत को जीन्स और फ्लाई शर्ट पहनाऊँगा, सिर पर सफेद टोपी भी धर दूगा, लाठी की जगह दिलीप कुमार के दस्तखत शुदा बल्ला भी तुम्हें दान कर दूगा-मुझे भविष्य दृष्टि प्रदान करो साबरमती के महासत।'

तो ठीक, लेकिन मुझे चाहिये कुछ भी नहीं, अपने नाम की टोपी तक सार्वजनिक रूप से मैने कभी धारण नहीं की बेटे। कमर से ऊपर कोई वस्त्र धारण करना वर्जित समझो, कमर से नीचे खादी की धोती और धोती से लटकाओं मेरी तरह की घडी, पादुकाओं में सिर्फ चप्पल धारण करो, आपसी अवैमनस्य की बात करो और सदैव सच बोलो।

'एक बात तो आप ने बताया ही नहीं बापू'-मैंने याद दिलाने के लिए एक अनुस्मारक प्रस्तुत किया।

'मैं जानता हूँ– गोली खाने के लिये तैयार रहने की बात न ? बेटे, अमर होने व ा इससे बढिया मीनार कोई नही। अस्पताल में याकि ट्रक के नीचे आकर जान देने मे, या फिर सीलिंग फैन से झूल जाने में कुछ भी लाभ नही क्योकि अखबार में सिर्फ चार पक्तियों की खबर छपेगी। सुकरात, ईशा मसीह और खुद मै-बावलें थोडे थे जो जहर पी गये, शूली पर ही चढ गये.... और शिवभक्त गुलशन कुमार को आखिरकार मेरी ही गति तो मिली वरना.......। कौन जानता उन्हे !

बस बस....... ब ऽ स ! आज आपका बरथ डे है बापू। इसलिये इस शुभ अवसर पर आपका थोड़ा सा इन्टरव्यू भी कर लू। हां थोड़ा सा ही।.... बस उत्तर बिल्कुल मुख्तसर में दीजिएगा !.........ठीक ?

बोलो बोलो– बापू की उत्सुकता आसमान पर थी, वे दत विहीन मुह से थोडा सा मुसकाये।

प्रश्न–गुलशन कुमार परम् सहृदय और भगवत भक्त थे, फिर उन्हें मरने के लिए गोली क्यो खानी पड़ी ?

उत्तर–दो भाग हैं तुम्हारे प्रश्न के, अतः उत्तर भी दो भागो मे ग्रहण करो। कैसेट किग ने किन्नरी अनुराधा से अधिकाशत शिवभक्ति के गाने गवाये। वह बखूबी जानते थे कि गोली खाकर प्राण दे देने से मृतक को इज्जत मिलती है, अनन्तर किसी प्रफुल्लित सरकारी ब्राह्मणी से उसे मेरी ही तरह हर्र मिश्रित पाचक गालिया खाने का भी सौभाग्य प्राप्त होता है।... फिर क्या ! उनका अवसान मेरी तरह ही होना था।

प्रश्न–मुहल्ले के सुलभ शौचालयों को स्वच्छ करने के अलावा अन्य कोई मानव धर्म ?

उत्तर–सूत काटना, सत्याग्रह करना, सच बोलने के अतिरिक्त अल्ला और ईश्वर को एक समान समझना। दीर्घ जीवी बनने के लिए मोरार जी के फार्मूले पर अमल।

प्रश्न–लेकिन ईश्वर और अल्लाह के अनुयायियो को.....? (गांधी बाबा निर्वाक् एवं शान्त खडे रहते हैं बिना किसी जुम्बिश के अपने फ्रेम के अन्दर, शायद सोचने लगे थे कि उन्होने तो अल्लाह को भिन्न मानकर ही उनके अनुयायियों के लिए पाकिस्तान दिया था, तो मैंने सवाल का स्वरूप बदल दिया– 'कोई बात नही बापू, अधिक दुखी न होवे प्लीज़ ! किसी जमाने की मूर्तिया मंदिरों के बन्द कक्ष मे होती थीं, आप जहां भी दिखे–चारों ओर से खुले स्थान में खड़े हुये........या फिर केवल बारिश और धूप से बचत का उद्देश्य रहा आपका।'
उत्तर–पहले मूर्तियां वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होती थीं... ....अब सिर्फ कोट टाई और पैंट वाली होती हैं ये, या फिर मेरी तरह अधनंगी... तो उनकी रक्षा-सुरक्षा की आवश्यकता ही क्या !

प्रश्न–फिर लौटना चाहता हूँ उसी बात पर। आपको अल्लाह के अनुयायियों को कही हिन्दुस्तान के बीच पाकिस्तान बनाने की जगह देनी चाहिये थी। आपने अलग-अलग हजारों किलोमीटर की दूरी पर दो स्थान क्यों दिये।
उत्तर– चाहता था कि दोनों के नागरिको को शीतलमंद सुगंध समुद्री वायु सेवनार्थ मिलती रहे। देश के अन्दर तो अलग देश मे रहकर भी नये देश के नागरिको को खुलेपन से महरूम रहना पडता।

प्रश्न–आज सिर्फ एक सवाल और..........क्योंकि आपको माला पहनाने और आपके सत्य–अहिंसा के सिद्धान्तो पर भाषण शुरू होने में वैसे ही विलम्ब हो चुका है, मुंशी इलाचन्द सत्याग्रही भी पधार चुके हैं, पंचायत अधिकारी ने चार-पांच चर्खे भी डिमान्स्ट्रेशन के लिए इकट्ठे कर लिए हैं. ....कई मास्टराइनें भी।.. ......हाँ...........नाथू राम गोडसे द्वारा गोली मारने पर क्या आपको हे अल्ला, ओ गाड, हे जरथुस्थ, वाहे गुरू वगैरह-वगैरह भी कहना चाहिए था–आपने सिर्फ

"हे राम" कहा। ऐसा क्यों?
उत्तर– मेरे ह्रदय में तो सभी एक साथ खड़े थे। गोली सीधे राम जी के लगी तो मेरी आत्मा चीख उठी तथा उस समय 'हे राम' कहने का अर्थ था- वेरी सॉरी सर्वेश्वर! मेरे ह्रदय में आप न होते तो बच गये होते। यह भी अर्थ लगा सकते हैं आप कि हिंसा सदैव परमेश्वर के विरूद्ध होती है जो अनुचित है, श्रेयष्कर भी नहीं।

गोकि गांधी बाबा के गोलमाल उत्तर से सभी असंतुष्ट थे तो भी हो रही देर की मद्देनज़र आनन-फानन दफ़्तर की नवनियुक्त बबुआनी रम्मो रानी से गाधी बाबा को सर्व प्रथम, उसके बाद मैंने खुद माला पहनाया फिर मुंशी इलाचन्द्र सत्याग्रही व उनके साथ आई पूरी कतार ने गांधी जी के पावों में एक एक फूल टपकाया, उसके बाद भाषण का माहौल बन पाया।

□

डॉ० व
के रूप मे भी
का परिचय दि
जीवन के मीवे
हास में हम व
हैं, परिहास में
किसी व्यापक
करते हैं। ती
सिद्ध है।

कौश
ये कुण्ठित व
कोरे व्यग्यका
सोद्देश्य व्यग्य
वाद का प्रचा
प्रत्युत समाज
मे जीवन के
पतन से उ
सरल-सहज
इनकी व्यग्य
निष्ठा के द

चोर

काम कोई भी हो, . . .सभी मे लगन, कड़ी मेहनत, दूरदृष्टि और पक्के इरादे की दरकार होती है। खेती के काम में चारों ही बातें सौ फीसदी होती ही है, उद्योग के क्षेत्र मे भी इन चतुर्पदार्थों की आवश्यकता होती है। मशीनें भले ही भुय मजदूर चलावे या बिजली रानी, काम तो मील के मालिक का ही माना जाता है क्योंकि जब तक फैक्ट्री चालू नही हो जाती वह शादी नही करता भले ही साल के सारे ही दिन सहालगों को समर्पित हो जाये, दूरदृष्टा होता है वह [illegible] भी सम्बन्धित राजकीय कार्यालय में हर कदम पर बड़े-बड़े नोटो की [illegible] लिए रहता है जिससे कि बाबू और अफसर के स्तर से फौरन [illegible] मनोवांछित सिद्धि हासिल हो जाये। ऐसा करने के लिए वह बड़े पक्के [illegible] यानी कि दृढ निश्चय के साथ सुबह के सात बजे तक और शाम के सात [illegible] बाद अधिकारी के घर पहुँचता है। न ठंढ की परवाह करता है, न बारिश [illegible] की। घण्टी बजाकर तर्जनी की कसरत करता है, दरवाजा खुलते ही

अधिकारी को, हाथ जोड़कर दोनो हाथो की और तुरत-फुरत अपना मन्तव्य भाव व्यक्त करते हुये सिर, सीने, ग्रीवा, जिह्वा और मस्तिष्क की भी वर्जिश करना है। इससे स्पॉन्डलाइटिस समेत दिमाग, दिल और सीने वाले कोई रोग नही। कुछ अधिकारी मील के मालिक से न मिलकर अपने छोटे अधिकारियों से मिलते है क्योंकि डिपार्टमेन्टल होने के कारण इनके यहाँ आना-जाना आफीशियल कारगुजारी मानी जाती है। बहरहाल हमारे वेदों और पुराणो मे व्यास भगवान जिक्र करना भूल गये कि अन्न उत्पादन की प्रक्रिया छोडकर धनोपार्जन की शेष सभी उठापटक चोरी की कोटि मे आती है।

नतीजा यह कि कोई भी धनोपार्जन का काम यदि किसी को बिना बताये गैर कानूनी तरीके से किया जाय तो वह चोरी है। लेकिन चोरी की परिभाषा मे और भी बहुत सी क्रियाये ख्यातिलब्ध है। जैसे रात मे दूसरे के घर मे सेंध लगाना, पर-स्त्री या पर-पुरुष को किसी अनजान स्थान पर फुसलाकर ले जाना किसी गरीब मनुष्य की जेब कतर लेना, इम्तिहान मे जेब में रक्खे चुटको से नकल करना, हनुमान जी के मंदिर से किसी दर्शनार्थी के नये जूते खिसका लेना, परिवार के सभी लोगो के निद्रालीन होने की अवधि में फ्रिज से [illegible] जाना, किसी दूसरे की जेब में बुरी नीयत से हाथ डालना टिकट [illegible] न देना, कटिया लगाकर अपने घर मे या दूकान में बिजली का प्रकाश करना [illegible] से तोड लेना भी चोरी है और इस तरह के कोई भी काम करने वाला आदमी चोर है।

मेरी यह धारणा भले ही गलत हो कि वेदो और पुराणों में कही भी चोरी जैसे खर्च रहित धनोपार्जन के तरीके का जिक्र नही लेकिन वैदिक काल मे चोरी का चस्का बहुतों का था--- आदमी भी चोरी करते थे, औरते भी। इससे समाज मे असुरक्षा तथा भय व्याप्त था क्योंकि ऋग्वेद की ६,६२०-वी ऋचा मे चोरी का पाप कहा गया है और चोर को पापी। कंजूस और कटुभाषी और दूसरे से जलन रखने वाला आदमी भी दस्यु या चोर कहा गया है। यही नही [illegible] आदमी देवताओं

अथवा अन्य व्यक्तियों को धन प्रदान नही करता वह भी वैदिक दृष्टि से चोर है। कुरआन में चोर के लिए बडे कठोर दण्ड की व्यवस्था है- हाथ काट दिये जाने की। कुरआन के अनुसार मन में कोई बात ऐसी रखना जो दूसरे को बताई न गई हो.....या ऑखें छुपाने को भी चोरी माना गया है।

जब ससार के दो बडे धर्म, हिन्दू और इस्लाम, चोरो के पीछे ही पडे है तो मेरा धर्म हो जाता है, उनके कल्याण के लिए उन्हे उसके बाद तक की बात बताऊँ। राजा अपनी प्रजा के माल-असवाब की रक्षा के लिए रातों में भेष बदलकर घूमता रहता था। इसी कारण चोर से धन-दौलत की सुरक्षा के लिए आज तक गाँवों मे और शहरों मे पहरे का चलन है, फर्क इतना ही, कि गॉवो में पहरेदार चोरी नही होने देते,इसके ठीक विपरीत शहर में पहरेदार अधिकाशत पुलिसकर्मी होते है जो मन से बहुत उदार होते हैं।

पहरेदार और पुलिसकर्मी जब किसी जन्म की दुश्मनी ही अदा करने मे अपने पुरखो के प्रति दायित्व का निर्वाह समझते हैं तो मेरे लिए भी आवश्यक हो जाता है कि इस निरीह प्राणी को खुद की बचत की युक्ति बताई जाय। अतः एक सप्ताह के भविष्य के इस खुलासे से मै चाहता हूँ कि चोरी से जुड़े युवक और युवतियॉ कृपया अपनी राशि के अनुसार लाभान्वित हो :

इति श्री लोक कल्याणार्थ चौर भविष्य दर्पणम्

मेष- चोरी में उत्कृष्ट धनार्जन के लिए कजी ऑखो वाले एक मुखबिर पर विश्वास करना ठीक रहेगा।

वृष- उत्तम सप्ताह नही। ग्रहिणी ही आपकी चोरी का सुराग पुलिस को दे सकती है। अपने मित्रों को भी सन्देह की नजर से देखें।

- चोरी करते समय उस घर की गृहिणी से प्रेम सम्बन्धों की शुरूआत।

पुलिस के पीछा करने पर सुरक्षित भाग निकलोगे-जीन्स पहने ब से शुरू होने वाले नाम की एक कन्या मिलेगी जिसकी वजह से भाग्योदय होगा।

पुलिस द्वारा दौडाये जाने पर लाल रग से पुते किसी भी घर में शरण लेने में भलाई है। यद्यपि कुत्ता काट लेगा, फिर भी, भयभीत नहीं होना है। मलाईदार गरम दूध पी लेने से सातवें दिन उदर विकार दूर हो जायेगा, तब चौरकर्म के लिए अगला हफ़्ता अच्छा बीतेगा। इस दौरान किसी विधवा पर रुचि जागेगी-उसके धन का सदुपयोग कर सकोगे।

- सफेद रग का कुरता और धोती पहने कोई इण्डियन निग्रो नुकीली गांधी टोपी लगाकर पुलिस चौकी में आयेगा और तुम्हारी जमानत करायेगा।

- इस सप्ताह कम मात्रा में भोजन करे, किसी मालामाल के घर चोरी करने का किसी भी क्षण सयोग बन सकता है।

कुछ विधायक अपनी जेब मे रखिये। चोरी की प्रकृति में परिवर्तन सम्भव है। चौपहियों की चोरी से आर्थिक स्थिति सुधरेगी।

महिला दोस्त विश्वसनीय नही। वही तुम्हारे कष्टो की सूत्रधार होगी या फिर उसे किसी अच्छी दूकान में रोज चाट खिलाओ।

सुगठित बदन वाली किसी मोहिनी को देखते ही तंदूर में फेंक देने से अर्थ भी, यश भी।

इस सप्ताह की चोरी का भंडाफोड ही नहीं होगा, पुलिस वालो की कुटम्मस

[illegible] वजह से पिछली सभी चोरियां और साथियां [illegible] लाया। दरोगा को दो सौ रूपये से ज्यादा धनराशि देकर [illegible]। उसने वरिष्ठ जनों के प्रति जिम्मेदारियां बढ जाने की [illegible] पांच सौ माँगेगा।

[illegible] - खजूर छाप नोट की बात नही कर रहा। वह तो अब राजनेताओं और अफ़सरों के शरीर को सेकते रहते हैं। इस नोट का अर्थ है 'ध्यान दें' इस बात पर कि जिन राशियो के लिए कोई फल अंकित नही है उन पर अष्टग्रह का शुभारम्भ होगा अगर हाथ हवा मे झिटक-झिटक कर सफेद बाल, सदरी और धोती वाला आदमी आर्यावर्त के हिन्दुस्तान खण्ड का प्रधानमन्त्री बन गया। इति श्री चौरादि साप्ताहिक राशिफलम्।

□

बदलेगी चौकी
भले ही अ-पुरुष..................

भगवान विष्णु के पब्लिसिटी इन्चार्ज नारद जी आयेदिन वैकुण्ठ में आकर सर्वशक्तिमान, अखिल सृष्टि के पालनकर्ता आदि सज्ञाओं से उन्हे, जबकि माते-माते कहकर महालक्ष्मी जी को सम्बोधित करते, किन्तु इसबार कई हफ्ते बाद पधारे थे। पूछा विष्णु ने- कहां गायब रहे मुनिवर! फ्लू हो गया था तुम्हे या फिर ऑखो में हिन्दुस्तान के बाहर की कोई बीमारी। संगीत प्रेमी हो तुम.......कहीं माइकल जैकिसन की नवटकी के असर में तो नही आ गये?

'बस बस बस भगवन, विलम्ब के लिए अपने भक्त को इस कदर लज्जित न करें। प्रधानमत्री.ही नहीं मुख्यमंत्री भी अपनी कुर्सी का परित्याग करने मे, आनाकानी करने लगे है।' कहते गये नारद, 'उन व्यक्तियों के पाव अगद की तरह के तो नहीं होते लेकिन कटि प्रदेश तथा जघाद्वै से कुर्सी पर यू चिपकते

है जैसे तक्षक देवराज के सिंहासन से चिपका था। सर्वदृष्टा ! आपने त्रेता अवतार लेकर जिस प्रदेश मे धनुष तोडकर विवाह किया था, उस पर कोई भी टिप्पणी करने मे बडी लज्जा का अनुभव होता है। वहाँ का कोई कोई मानव तो बहुधा नितान्त हठी व धृष्ट-भ्रष्ट प्रकृति का होता है।'

भगवान विष्णु अपनी दोनो भौहे ऊपर आधे मस्तक तक चढाकर सुनते रहे तो नारद अतिरिक्त उत्साह मे कहने लगे- 'अपने स्वसुर जी को ही उदाहरण मान ले प्रभु, क्या जरुरत थी इस घोषणा की कि शिवधनुष तोड़ने वाला पुरुष ही सीता का वरण कर सकेगा, अन्यथा उनकी कन्या आजीवन अविवाहित रहेगी। शुकर कहिए वर्ल्डफ्रेन्ड का कि वह आपको साथ लेकर धनुष यज्ञ में पहुँच गये वर्ना कहना मुश्किल था कि क्या सिचुएशन बनती। श्वसुर जी को ही लांक्षित करते सभी- अरे जनक की असली कन्या तो थी नहीं, इसलिए दुश्कर प्रतिज्ञा कर ली यह सोचकर कि धनुष न टूट पाने की दशा में भी कन्या बेरोज़गार नहीं रहेगी, जीवन भर राजभवन की फर्श ही गोबर से लीपेगी।'

विष्णु बोले- 'छोडिये नारद जी मेरी ससुराल की बातें ! अविवाहित हो, इसीलिए कोई न कोई सुसराल तुम्हारे दिलोदिमाग़ में छाई रहती है। असत्य तो नहीं कह रहा मैं? अब सीधे अपनी बात पर आइये।' विष्णु जी का आक्रोश कुछ-कुछ शान्त पडा तो संयत होकर वह फिर बोले-'अत्यधिक मुखरता अच्छी नही होती मुनिवर।'

नारद कुछ लज्जित से महसूस किये इस लताड से। बोले- वासुदेव! मैं उस भारतीय मंत्री की तरह कभी-कभी व्यवहार करने लगता हूँ जो प्रधानमंत्री का अत्यधिक स्नेह पाकर आपकी जन्मभूमि को मटियामेट करने के लिए अनर्गल प्रलाप किया करता है। आपने टोक दिया, मैंने अपनी महाभूल ठीक कर ली, तैलांजलि दे दी मैने इस मुई आदत को। अब सुनिये मेरी प्राब्लम। भारत स्थित उत्खनन कार्य के लिए विश्वविख्यात उसी बिहार प्रदेश का एक यदुवंशी व्यक्तित्व

मुख्यमंत्री की चौकी संधिलस्सी यानी कि कोई चिपकुआ पदार्थ लगाकर अवस्थित है। नैत्यिक दायित्वों तक की परवाह नहीं उसे। त्रिकालज्ञ ऋषि फर्नांडीज, वर्तमानः श्री स्वामी अटल जी महाराज, पंचनद सुवन महाप्रज्ञ श्री इन्द्र गुजराल.... तथा स्थानीय साधु संतों ने, विद्वानों ने उसे बहुतेरा समझाया-बुझाया, किन्तु उसने कानों में कपास ठूंस रक्खी है। सभवत द्वापरकालीन आपका कोई मित्र है वह, अन्यथा इतना बड़ा अहकारपूर्ण दुस्साहस उस सुषमा-सम्पन्न एवं स्वपाकी यादव के लिए संभव नहीं था।

शान्ताकार विष्णु ने प्रश्न किया-- कहना क्या चाहते हो मुनिश्रेष्ठ! क्या वह द्वापरकालीन मेरी मैत्री को भुना रहा है ?........तब तो बडा ही अनपेक्षित आचरण है उसका। नारद ! गोकुल के ग्वाले अपनी स्वार्थ-सिद्धि के उद्देश्य से मुझसे मित्रता रखते थे। मेरे साथ रहकर उन्हे दूध-दही पीने-खाने की सुविधा थी, मेरे चमत्कार के वशीभूत भी थे वे। मैं ही उनका रक्षक भी था। विश्वास करें, मुझे उस यदुवशी से कोई सरोकार नही। आखिर कितनी लम्बी लिस्ट बनाऊँगा मै अपने पूर्व परिचितों और उनके प्रति दायित्वो की ? अवश्य ही कोई फर्जी ग्वाला होगा वह। अरे, मुझे तो क्षीर सागर में मग्गा डुबोने तक का वक्त नही कि थोडा सा दूध ही पी लूँ।

इस बीच पृथ्वी से हवा का एक झोंका आया तो विष्णु और नारद दोनों को ही वैकुण्ठ की पिचपिची गर्मी से क्षणिक राहत मिली। सीने के बालो से उलझकर पीताम्बर पीठ की ओर लहराने लगा, और फिर उसी जगह वक्ष के नीचे टंग गया था। वायु के इस सुख में विष्णु ने दुर्गन्ध की मिलावट भी अनुभव की, तो उनकी नाक भौहो तक चढ गई थी, किन्तु साथ ही साथ उनके मानस के युक्तिद्वार खुल गये थे। फिर तो वह तरह-तरह की तरकीबे सुझाने लगे। 'नारद ! हमारे सप्तर्षियो में सर्वश्रेष्ठ ऋषि नायडू के पास एक से एक गुजब के तिकडम हैं- स्थूल रूप से पृथ्वी पर ही हैं वह आन्ध्र के मुख्यमत्री के रूप में। साथ में ले लो उन्हें। द्वापरयुगीन मेरा परम् मित्र पोरबन्दर वासी सुदामा सम्प्रति प० सुखराम के नाम से विश्वविख्यात्

हिमाचल की राजधानी शिमला में [illegible] मौजूद है उस-
उरा भी साथ ले लो। त्रेता युग मे जिस पाषाण शिला को मैंने पुनः ऋषि सुन्दरी का स्वरूप प्रदान किया था उसे अभी तक गौतम ऋषि ने क्लियरेंस सर्टीफिकेट नही दिया। कुछ समय से वह सुन्दरी फूलन के नाम से नई दिल्ली मे सांसद है– उसे भी ले ही लो। काली मिर्च को वटवृक्ष के दूध मे मिलाकर उस यदुवशी को अहिल्या की मध्यमा उंगलिका से चटवाओ, राबडी या दही मे कोयला रगडकर उसी का अनखन लगावो, इससे वह स्वय गौतम ऋषि के बचे–खुचे कोप से मुक्ति पायेगी ही, उसके विरूद्ध चल रही कानूनी कार्रवाइयो की श्रृखला भी छिन्न-भिन्न हो जायेगी, वह हठी भी मक्खन की टिकिया की तरह पिघल जायेगा। यदि इस नुस्खे से भी लाभ न दिखे तो पूजा भटट नाम की उर्वशी की सहायता लो। कुछ समय पूर्व वह पटना गई थी तो वह हठी यादव उस पर बाग–बाग था। इससे भी बात न बनी तो मै फौरी तौर पर अपने स्तर से कोई न कोई कार्रवाई करूँगा ही। पद–चौकी के प्रति उस दुग्धपायी का व्यामोह तो दूर करना ही है।

नारद जी इस मुद्दे पर निर्णायक भूमिका अदा करना चाहते थे। पूछ लिया– 'कुर्सी के प्रति मोहभग के लिए अतिम प्रयास का स्वरूप क्या होगा ,नारायण ?' उत्तर दिया विष्णु ने– 'कभी–कभी मुनिवर तुम्हारी शकोशुबहा की आदत पर मुझे बडा क्रोध आता है। वास्तव मे तुम्हारी आदत हो गई है कि उत्तरमाला मे उत्तर देखकर ही तुम प्रश्न हल करना शुरू करते हो। चलो, सुन भी लो अपने प्रश्न का उत्तर– मेरे नामारासी से कहना कि मैं आदेश करता हूँ कि उस अवांछनीय भ्रमित व्यक्ति को नमकीन सतुये के लड्डू खिलाकर पानी पिलाने के बहाने ले जाये और कुर्सी सहित उसे सोन नदी में फिकवा दें। तुम्हे स्मरण होगा मुनिवर, महाभारत से पूर्व मैंने कृष्ण रूप मे कौरवो को कितना समझाया–बुझाया लेकिन उनकी हठधर्मिता के फलस्वरूप अतत: 'कोअर्सिव मेजर्स' का ही सहारा लेना पडा था। उस कार्रवाई के लिए मैं किसी अच्छे मेकेनिक से अभी से अपने चक्र की सर्विसिग कराये ले रहा हूँ। ....कोयला प्रान्त मे मुख्यमत्री ही नया नहीं होगा उसकी चौकी भी बिलकुल नई होगी। बैठने वाला भले ही अ [illegible] रुष हो।

स्तवन

हे कलियुग के देव ! कुछ ऐसा करो कि बड़े-बुजुर्ग अपने छोटो को समुचित सम्मान दें, उनकी अनुमति से ही चाय-काफी पियें, खाना खायें, और चरणस्पर्श करके ही अपने दफ़्तर जायें। सेवानिवृत्त बडे अपनी पेंशन राशि का सदुपयोग करे, टेलीफोन और बिजली के बिल जमा करे, राशन पानी की व्यवस्था मे शेष राशि खर्च करें।

बेरोज़गार बच्चों को घर में ही किसी काम से लगावो। मित-वस्त्रा सुबदनाओ को ड्रिल करते हुये याकि डड-बैठक लगाते हुए टी.वी पर दिनरात दिखाओ। बडे फायदे है इससे। विश्वविद्यालय या कालेज आने-जाने से धन और समय की बचत होगी ही, मुहल्ले मे चाकू से ही काम चला लेगे, विद्यालय में कट्टे चलाने से गिरफ़्तार हो जाने का डर रहता है क्योकि चप्पे-चप्पे पर पुलिस और पी ए सी का पहंरा होता है। टीचरो को अपने कोचिग क्लास बन्द करके विद्यालय

आना पड़ता है, उन्हें दुखी करने से बच्चों को नम्बर कम मिलेंगे, ज़्यादा से ज़्यादा थर्ड पास होंगे। याफिर मुझे किसी खनिज प्रदेश का मुख्यमत्री बनाओ। मेरी पत्नी कहती है कि वह भी मुख्यमंत्री बनेगी। मर्दों जैसे वह भी करेगी घोटाले और घपले। राजनीति में वह भी बनायेगी निन्नान्नबे रन। सभी सन्तानो को सिखाएगी गुल्ली डंडा !

विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष किसी ज़माने में पैसे की कमी के कारण मायूस थे, १५ अगस्त ६७ से पहले बेचारे दुखी भी रहते। अपने को निरीह सम झते। ऊल-जलूल शादिया होतीं। इस स्वर्ण-जयंती वर्ष में अध्यापकों को आपने मालामाल नागरिकों के रूप में उभारा है, लाखों की रकम और सम्पत्ति मिली जहाँ-जहाँ आयकर ने छापा मारा है। अब उनकी कन्यायें आई.ए.एस अधिकारी के घर जायेंगी। जब तक पति महाभ्रष्ट की कोटि मे नहीं आयेगा- वे दिन में जलेबी और रात में मोतीचूर के लड्डू खायेगी।

हे देव ! कुछ ऐसा करो कि शासन शिक्षा विभाग से सम्बन्धित प्रशासनिक अधिकारियों को भी दीन-हीन न समझे। सबको सचिवालय के शिक्षा विभाग में काम करने का मौका दें। ....कर विभागो में कर्मियों को रातो-दिन खाने और पल्टी करते रहने की सहूलियत प्रदान करो- वुनके मार-मारकर इनकी भी कुण्डलिनी का फन जागृत करके खुद को समानदर्शी साबित करो।

माता सरस्वती से कहो कि परीक्षा के दिनो मे वह किसी झरने के पास बैठकर वीणा बजाया करें, जो मन मे आये गाया करें। घर में उनकी उपस्थिति से बच्चो को नकल की पुर्जियाँ बनाने में सकोच होता है। वह विलावजे फेल होता है।

अपराधियो को भी वैसे ही भूख लगती है जैसे साधू सन्तो को। अत उनके पेट पर कोई लात क्यों मारे। वह इलेक्शन लडें और मंत्री बनकर स्वास्थ्य लाभ

करे। वर्ना कहा तक दर्ज करेंगे पुलिस वाले अपने हल्के में हुई हरकतों की रिपोर्ट, कैसे फिर कहेंगे कि पिछले साल से वारदातों में इस साल कमी है, सिर्फ अपने आप मरने वालो की तादाद मे बढोतरी है।

हे देव, बच्चों को एक और बुद्धि दो। अपने राणा प्रताप की तरह पहाडो पर घास की रोटी खायें और मौके-बेमौके तलवार चलायें। मत बनना चाहें बडे-बडे अधिकारी। ये सब तो कलम से जेबे कतरते है। नेता बनावो इन्हें- जो गर्दने काटकर जेबे काटें।

हे महा विध्वंसक! कुछ ऐसा करो कि इमारतें, पुल, बाँध और सडके बिलावजे धराशायी होती जाये, नवनिर्माण हो, इन्जीनियर फलें-फूलें, छात्र इन्जीनियर बनें और देश की सुनहरी चिड़िया का रग अहर्निश चाटें। उनके निर्माण कम से कम बारह माह तक खडे रहें . ..। उसके बाद उनका कुछ भी हो. . . चाहे बारिश मे टपके चाहे भर-भराकर गिर जाये। आपके बनाये कितने ही बच्चे भी तो मुश्किल से दो घटे चल पाते है।

दफ़्तर और घर में काम करते करते थक जाती है औरते। सबको ही एक एक रॉबत मुफ्त मे बॉट दो। पति परम्परा को समाप्त कराओ, उसकी ड्यूटियॉ इन्हीं को एलाट करो। जनसंख्या तथा खाद्य समस्याये अपने-आप हल हो जायेंगी। अत मे कुछ ऐसा करो-देश का हर आदमी सिर्फ चौदह सौ पचास रूपये प्रतिमाह कमाये और रातोदिन गुलछर्रे उडाये। विनती तो और भी करनी थीं लेकिन इस बार सिर्फ इतनी ही।

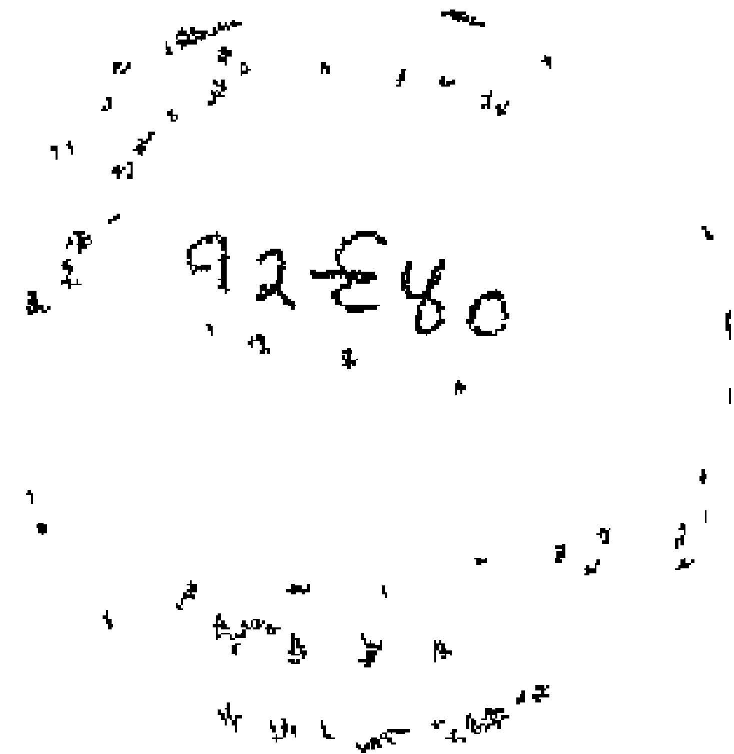
सम्पत्ति, सुख समृद्धि के दानी!

पुलिस वालो को मौका दो-चौराहो पर वसूली करने का, प्रतिदिन फलने फूलने का। उनके भी तो लडकिया होती हैं और बडे-बडे ब्रीफकेसो मे दहेज चलता है। उनके सपूत तो मज़दूर से भी ज्यादा श्रमशील होते हैं- सर्दी, गर्मी और घोर

बारिश मे रेलवे स्टेशनो पर स्कूटर और चौपहियों के स्टैण्ड पर खड़े रहते है, ब्लैड से कपड़ा काटने मे कितना खतरा उठाते हैं, कभी-कभी सामान चुराकर यात्रियो का बोझ भी हल्का करते है बेच्चरे !

हे भारत माँ को रक्षा-सुरक्षा देने वाले तथा पड़ोसी देशों के लिए दधीचि! ठिठुर कर ऐंठे हुये प्राणियो के लिए हरेक जाडे मे कदम-कदम पर अलाव लगवाया करो, यू ही सहार हो पायेगा शहर को विद्रूप करने वाले फुटपाथियों का, और और रोटी कपड़ा और मकान के अभाव से मरे आदमी के नाम भी चिट्ठियों पर चिपकाये जाने वाले टिकट जारी कराओ. ... क्रिकेट के सन्यासी खिलाड़ियों से जूते बिकवाओ .... और अविवाहित फिल्मी तारिकायें दादी अम्मा बनें क्योकि बीसवी सदी की बाउन्डरी वाल फांदकर इक्कीसवी की गार्डेन मे गिरने वाले बच्चों को पहले ज़माने की उदत दादियाँ पसन्द नही। इस बार आज सिर्फ इतनी ही प्रार्थनाये। फिर हाजिर होऊंगा अगर बोफोर्स घोटाले की तरह मुझे आपने दीर्घजीवी बनाया।

☐



हर साल आयेगी फिर आने वाली है वह

पन्द्रह अगस्त हो या छब्बीस जनवरी-ये दो इस देश के नायाब त्योहार है। ऐसे त्योहारो का आनन्द उठाने का सौभाग्य केवल सदियो तक गुलाम रहे देशो को ही मिल पाता है। नेता, ना-ईमानदार अफ़सर और ठेकेदार, उनके परिजन इस दिन देशी घी की पूड़िया खाते है, आम आदमी अपने पॉव तोड़ता है। नया शादीशुदा आदमी अपनी ससुराल वालो की दूरदर्शिता का दोहन करता है- टी०वी० पर [illegible] सब कुछ देखता है-जहाजो की कलाबाजी, मिलीटरी वालों का ऐंठे-ऐंठे चलना, प्रदेशो की झांकियां का फूहड़पन और यह सब कुछ पुराना-कोई भी नयापन नही। यद्यपि नया कुछ दिखाने के लिये हर साल आइटम की कीमत बीस से पच्चीस परसेण्ट बढ़ती है। लेकिन देश की समझदार प्रजा के लिए दुख की क्या बात! यह पैसा उनसे इन समारोहो के लिए नही लिया जाता- यह तो

देश की सरकारे अपने कोषागार से खर्च करतीं हैं, स्कूली बच्चों के अभिभावको से वसूला जाता हैं। इसके लिये सरकारें बाकायदे बजट मे प्रावधान करतीं है। शांति व्यवस्था भी इस अवसर पर सुचारू बनाने के लिए प्रशासनिक एव पुलिस कर्मियो को गाडियॉ दौड़ाते रहने के लिये पेट्रोल और डीजल देती हैं। अफ़सरो और नेताओ के रिश्तेदारो का रेलवे स्टेशन पर स्वागत सत्कार करने से लेकर उन्हे रूख्सत करने तक की अवधि में चौपहियों की सुविधा भी सरकार ही तो प्रदान करती है। सरकार अब आजाद देश की सरकार है, अँग्रेजो की गोलीमार या डडामार सरकार नही, जनता की खैरियत सुनिश्चित करने वाली सरकार है- वह अपने से जुडे लोगो को इस बात का ऐसे समारोहो के माध्यम से एहसास कराती है कि वे समझे कि अब वह गरीब ब्राह्मण, अहिर, बनिया और अछूत नही। वे अब समृद्ध हैं और देश के मौजूदा एवं भावी कर्णधार भी वही हैं। भगौती बिलावजे परेशान था। कह रहा था कि नई-नई सरकारी नौकरी मिली है लेकिन सभी लोग कहते हैं कि ऊपर की कमाई अब नही करने दी जायेगी। मैने समझाया- देख भाई ! ऊपर की कमाई- पहले सिर्फ बडे-बडे मत्री और बडे-बड़े अफसर करते थे, छोटे करमचारी तो तीन-चार साल पहले से ही इस बेलज्जत की कमाई के लिए अपने हाथ दिखाने लगे हैं, तो समझले कि तू चार साल पहले का कर्मचारी है। सब दुख सोचते रहने से होता है। आदमी और सिंह की सूरत वाले देश के एक मुखिया थे। उन्होने तो अरबों-खरबो रूपये कमाये-साधू सन्तों को भी एजेण्ट बनाकर उन्हे जर ज़मीन और जोरू के चक्कर मे डाला, बाद में कोर्ट कचहरी दौडे और कोई अलग से आमदनी अब न रहने के बावजूद कितने स्वस्थ हैं। वजन सतत्तर के०जी०, सीना सत्तर और कमर इक्यावन। डिब्बे में भरी यूरिया डायनिग टेबुल पर धरी रहती है, सुबह-सुबह भुनी सोठ की तरह पानी से निगल जाते हैं तो न डायबटीज़ पास फटकती है न डॉयरिया। इसी तरह ऐसे मुखिया लोगो के साथ काम करने वाले अधिकारी भी रूपिया परमेश्वर का ध्यान करते-करते ही जीवन यापन करते हैं। इसलिए ऐ भगौती, तू अकारण दुखी न हो। तू भी धीरे-धीरे अफसर बनेगा, लूडो और ताश की गड्डी कूडेदानी के हवाले करके छब्बीस जनवरी छब्बीस जनवरी खेलेगा, चुनाव-चुनाव खेलेगा भैंस-भैंस और भूसा-

भूसा खेलेगा। चाहते सभी है कि रूपये-पैसे का जायज लेन-देन बन्द हो लेकिन आखिर.. कब तक कहेगे वह कि चौबीसौ घण्टे दोपहरी बनी रहे। बात से मुतासिर भगौती की भगिमाये देखी तो उसकी हौसला आफ़जाई करता गया—

छब्बीस जनवरी तो दीवार के कैलेण्डर से बधी है, जैसे फूल से खुशबू, तिल से तेल और रात से अधेरा। इसलिए बेचारी हर साल आयेगी। ये देश की आज़ादी से जुडी है। देश जब तक आज़ाद है, तुम आज़ाद हो, तुम आज़ाद हो तो सरकारी बेचारी को हिन्दुस्तान मे आना ही है, छम्म-छम्म करते हुए। सभी से कहना है कि– फलो-फूलो, जहा और जिधर चाहो क़वायत करो, जो चाहे बको, चहरी-गाह मे किताबे पढ़ो, किसी की बात को बर्दाश्त न करो, किसी पर जूते चप्पल चलाओ। निशाना बैठाकर फेको तो किसी पर लाउड स्पीकर के हाथपाव। छब्बीस जनवरी जब लौट जायेगी साल भर के लिये, तब बकिया रहस्य की बाते बताऊंगा तुझे। इतना जरूर समझ ले कि आत्मा अमर है तो आज़ादी भी, आज़ादी अमर है तो सरकारी नौकरी का सरकारीपना भी। अत तू सिरिफ निब्बू पावर ह्वील भक्ति वदना करता रह- ॐ नम रूपियाय.. ..ॐ नम. रूपियाय! की रट लगाये जा जिद्दी तकलीफों से छुटकारा दिलाने के लिए यह अमोघ मत्र तो है तेरे साथ।

बड़ा आदमी

शेर का दमखम न होने के बावजूद, श्रगाल उसी का जैसा रूतबा चाहता है। आदमी तो आदमी है ही, क्यों न वह चाहेगा अपने पॉव की नाप जोख से बडी पादुकाये पहनना। अब देखिये न, बमुश्किल डेढ़ फुट क़द का होते होते कोई भी बच्चा चॉद को ही चाटने का मन बना लेता है, थोडा और बडप्पन पाते ही और भी बड़ा सौदर्य लोलुप हो जाता है। कुछ और लम्बा कुरता पहनने लगता है तो उसके दिलोदिमाग मे कोई हूरे मुम्बई महज़ दो पट्टियो से अपने सम्पूर्ण शील को आवृत्त किये डिस्को करने लगती है और तब टाइम बार्ड या जिसे हम विशुद्ध राष्ट्रभाषा मे समझाये तो कहेंगे कि भतार की कोटि में शामिल हो जाने के बाद ही वह अपना घर ससार बसा पाता है क्योकि प्रस्तावित अर्द्धांगिनी के समस्त अग-प्रत्यग उसके स्वय के द्वारा पूर्वनिर्धारित अर्हताओ के अनुकूल नही मिल पाते जिससे उसे चयन प्रक्रिया मे देर लगती है।

पचास साल पहले के हिन्दुस्तान के बडे आदमियो का जायजा करा रहा हूँ। पश्चिम की अनिग्रोवर्णी जमात का जब यहा सिक्का चला था तो हर स्वदेशवासी उसका कारिन्दा बनना चाहता था यानीकि उसकी मनोकामना होती थी उसके आगे पूंछ से हवा करने वाला चौपाया बनने की। आप अपनी सुबुद्धि के मुताबिक कोई भी संज्ञा दे उस प्राणी को। पुलिस और लगान की उगाही करने-कराने वाले ऐसे लोग असली सरकार समझे जाते थे। अनिग्रो शासक इन्ही कारिन्दो की मार्फत अपना रूतबा सभी पर गालिब करते। उन्ही दिनो एक सरकारी साड हरेक बस्ती में होता था। यह वस्तुत बैल था जो किसी भी कामधेनु का शीलहता ही नही, किसी भी हरे भरे खेत वाले हिन्दुस्तानी का सिरदर्द था। उसे प्रताडित करने वाला मनुष्य अपराधी माना जाता था—सजा काटना पडता था या ज़ुर्माना अदा करने को मज़बूर होना पडता था उसे। हक़ था उसे किसी को भी सीघ मारने का, कुछ भी सूंघने और चखने का। ऐसा ही साड हरेक गाव मे मानव रूप मे भी विचरण करता। अब भी होता है यह लेकिन स्वेदशी सरकार बनने की तारीख से वह बडी मायूसी झेल रहा है। इसे हम चौकीदार कहते रहे है। पचास साल पहले ऐसा नाम पडने के कई वज़ूहात थे। जो चोरियॉ उसके सुराग की बिना पर होतीं उनमे उसे चवन्नी का हिस्सा मिलता, अपने दीवान-दरोगा की जेबें घेघे तक भरवाने में उसकी कितनी ही अहम् भूमिका रही हो, दरोगा उसके सामने यह चवन्नी फेककर यदि तुरन्त गाली भी देता . कि अबे तेरी फलॉ फलॉ और बढिया मामले ला, तो इस सौभाग्य से उस चवन्नीदार का सीना उरई वाले माहिल के बहनोई की तरह फूल जाता। चवन्नीदार कहने मे अनिग्रोवर्णी दरोगा बडा अटपटाते तो यह नाम गुरिल्ला से खूबसूरत आदमी की योनि मे आने की तरह चौकीदार हो गया। रेलगाडी को देख-देखकर खुश होते हुये गाव के किनारे खडे एक बुत को मैने देखा है—उसी की तरह उगली उठाकर यह चौकीदार जिसे अपने रक्ताभ नयनो से निहारता-मनुष्य को जैसे लौगे फूँककर बुलाया गया हो—कालिया की तरह सिर नीचा किये उसके कदमों के पास आकर रूक जाता। खाकी कमीज, मैली धोती, एक कधे पर लट्ठ और दूसरे पर चमडे का नाग लटकाये गाव की गली गली मे रात-बिरात घूमता, कुये खुदवाता, खुद पानी पीता और

बाकी सरकारी साडो को पिलाता। इसकी शनिदृष्टि किसी भी पहाड को राई बनाने मे सक्षम थी। निहायत क़ातिलाना भगिमाओ वाले इस महान् आदमी के महात्म्य को आगे बताने से हासिल ही क्या होना, क्योकि अब तो उसके परिवार वाले बडे-बडे खद्दरधारी, सफारी धारी और श्वेत कालरी बनकर अपनी-अपनी कुबेर लकाओ के झरोखे से त्रिलोक दर्शन करते हैं, फुसफुसाना भी अगर उनके कान-कुण्डो मे पड गया तो कोई भी अनर्थ हो सकता है। गाधी बाबा इनके सबसे बडे शत्रु है।

स्वाधीनता स्वर्ण जयती वर्ष से ठीक पचास वर्ष पूर्व तक के एक और बडे आदमी का खाता खोलता हूँ जिसने अपने पहले वाले नाम को परिवर्तित करा दिया था। अपने ज़माने मे जमीदारो-ताल्लुकदारो के नयनो का तारा नपुशकलिग नामधारी वह आदमी पटवारी कहा जाता था। १९४७ मे उगलियो सहित देश के दोनो आजानुबाहु कट जाने के बाद गाव सुधार के नाम पर गली-गली मे उधर खडजे लगने लगे थे, इधर विकास के नाम पर सरकारी रजिस्टरो में उसका नाम लेखपाल किया गया, यूँकि मस्ती और मटरगस्ती पहले की तरह ही करे लेकिन नाम से लगे कि यह हिन्दुस्तानी नस्ल का ही है। लिग परिवर्तन करने वाला मानव रेवडी, गजक, गुड लड्डू वाले इलाके से सम्बन्धित एक किसान था। पटवारी और लेखपाल मे फ़र्क ख़ासकर पोशाक का दिखा– पहला ढीली लांगवाली बुर्राकदार स्फटिक धोती पहनता, जबकि लेखपाल पैन्ट और बूशर्ट पहनने लगा। यह नया रोबोट खेत से मूली समूल उखाड सकता है जबकि पटवारी यह काम नही कर पाता था भले ही शिवधनुष तोड सकता। कलम चलाने में लेखपाल पटवारी के मुकाबिले ज़्यादा करिश्माई नहीं। कलम हाथ मे लेते ही पटवारी किसान का आधा बल उसे देखते ही अपने जिस्म मे सोख लेता। वैसे भी उसकी कलम मे साठ हज़ार हाथियो का बल होता था। किसान से सोखे गये बल का सत्तर प्रतिशत भाग वह सामान्यतया ज़मीदार को ट्रान्सफर कर देता। जमीदार की खुशफ़हमी के लिये उसने अपनी खुश्कत से कितने ही गॉव वालो को मुफ़लिस करार दिया। बदले मे जमीदार उसके घर-परिवार की सारी ही फरमाइशे पूरी करता। उन्ही

दिनो गॉव मे एक और दिग्गज पुरूष होता था। ये अखबार पढ लेता था, हीरोसिमा और नागासाकी के बाद उत्तरी कोरिया मे हुये बम्बार्ड की बाबत पूरी जानकारी रखता, गाव वालो को आपस मे लडाकर कोर्ट-कचहरियो मे चहल-पहल बरकरार रखता। पुलिस, कचहरी और वकील का हितचिन्तक होता वह। इसके बावजूद वादी-प्रतिवादी हो, याकि मुद्दई-मुद्दालेह दोनों उसे अपना ख़ैरख्वाह समझते। उनकी भैसो की मलाई-राबडी वही चट करता, मट्ठा ही औरो के लिये छोडता वह।

लेखक घोर बडा आदमी होता है। अपनी घुघची भर की बुद्धि से ऊटपटाग जाने क्या-क्या बोलता है। गुलामी को देश से भागे हुये हाफ सेचुरी बरस हो चुके लेकिन उसके पहले की बातें अबतक कुरेदता रहता है। पगलेट वही रट लगाये रहता है कि हिन्दुस्तान पहले सोने की चिडिया था। सवाल उठता है कि सोने का बिलौटा क्यो नही था वह, बतख सारस या सुतर्मुर्ग क्यो नही- छटाक भर की चिडिया पर ही उसे इतना गुरूर क्यो ?... . या तो एटलस मे चिपके हिन्दुस्तान को विश्व के मानचित्र पर नाप लिया हो उसने। बहरहाल गोबर की चुहिया से ही वह इतना खुश है तो उसके कंधे पर सुमेरु पर्वत धरने से क्या लाभ, बेचारे का पॉजामा क्यो खराब करे ? सुविधालोलुप बडा आदमी होता है वह। बडे-बडे राजघराने और पूजीपति उसकी कलम की कृपा के आकाक्षी होते है। इलाहाबाद मे जिस जगह तीन नदियाँ आपस मे गलचुम्मी करती हैं, उसी जगह बौद्धभिक्षु सम्राट हर्ष वर्धन की बहन की इज्जत खतरे मे पड गई थी दिन दहाडे मरभुक्खी और निर्वस्त्र जनता ने उसकी साडी ही उतरवा ली थी। गगा मैया पर साडी चढाये जाने की यही वज़ह है जिससे कि देश की मुफ़लिस जनता आइन्दा किसी महिला के प्रति साडी उतरवाने की उद्दण्डता न करे। महाभारत कालीन घटना को मिलाकर देश के इतिहास मे दूसरी बार ऐसा हुआ था। इसीलिये आज की युवतिया जीन्स पहनती है जो उनके अगो की त्वचा से और ऊबड-खाबड अवयवो से चिपकी रहे। मारे अफ़सोस के और गुलाबी शर्म से सराबोर राजश्री ने बडे दीनभाव से चीनी लेखक की ओर निहारा। हर्ष ने भी उसकी सुविधाओ में इजाफ़े की बात कही। हो सकता है हागकाग के किसी बैक

मे उसके नाम स्वर्ण मुद्राये भी जमा कराई हो, तो उस आदमी ने इससे प्रसन्न होकर लिक्खा कि अपनी टुच्ची प्रजा की हालत देखकर आखिरी निर्वस्त्र को राजश्री ने अपनी साड़ी ही उतार कर थमा दी। जाहिर है कि उसकी संदूकची की भी सारी साडियॉ लुट चुकीं थी तभी तो उसे अपनी कमर से लिपटी साडी भी उतार देने की नौबत आई। गहने द सकती थी उस याचक को, अपनी पायजेब करधनी, अगूठी या गले का हार उतार कर दे सकती थी। कुछ भी नही था उसके पास तो पावो मे बिछिया थी ही। खैर... कुछ कुछ मेरी समझ मे आती है चीनी लेखक की चतुराई क्योकि इसी तरह अपने लिए बडप्पन हासिल करने के चक्कर मे चन्द्रवरदायी ने भी अपने दोस्त पृथ्वी जी का सीना कई गज़ की चौडाई का लिख डाला था।. तो आप ही सोचिये कि उसके हाथ और पावो की लम्बाई क्या रही होगी, किस नम्बर के जूते पहनता रहा होगा, दस्ताने और मूजे किस मेगा साइज के इस्तेमाल करता रहा होगा वह, घडी का आकार और वज़न भी एक किलो के बाट से क्या कम रहे होंगे। जाघिये के लिए भी उसे दो ढाई मीटर कपडा खरीदना पडता रहा होगा। सवाल अहम् यह है कि ऐसी यम-काया का आदमी तलवार के तेवर कैसे दिखा पाता था, संयोगिता जैसी मिसवर्ड कैसे रीझ गई उस पर, अपने भविष्य पर जानबूझकर क्यो कीड़ामार औषधि डाल दी थी उसने। यह ज़रूर है कि आधुनिक भारत मे जानवरो का चारा खाने और खेतो की चीनी फाकने के वावजूद पृथ्वीराज जैसा कोई गुरुतर व्यक्तित्व दुर्लभ है।

स्वातंत्र्योत्तर काल का लेखक बहुआयामी बडप्पन का धनी तो होता ही है, कवि सम्मेलन अथवा मुशायरे मे सिरिफ अपने जेब की साइज की अगूरी और सलाद से खातिर हो जाने पर ऊँचे से ऊँचे पहाड से कूद जाने के लिये तत्पर हो जाता है। मंच पर अचेत हो जाने के क्षण तक उसकी गलेबाजी का आनन्द लिया जा सकता है। बडप्पन यही तो है, कि विविध सहयोगी आवश्यक सामग्री की व्यवस्था वह स्वय कर लेता है। वह या तो किसी का महात्म्य चालीसा लिखता है या फिर लंगडी लूली कविताये अथवा एक सौ दो अक्षरो मे आधी दर्जन कवितायें। बडप्पन के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने के लिए वह कुछ नुस्खो पर भी अमल करता

है। ये बशीकरण मत्रो से मिलते जुलते है। जैसे प्रथम सोपान मे अपनी रचनाये छपवाने के लिए पहले वह सोमवार के बाद और बुधवार से पहले तक हरे निब्बू मे सुई कोच करके छप्पर मे छुपा देता है, साथ ही वह सम्पादक को पत्र लिखता है कि पत्र-पत्रिका के सम्पादन लाघव के लिए वह सर्वथा स्तुत्य है। दूसरे सोपान मे सम्पादक को पत्र लिखकर वह किसी जाने माने वरिष्ठ रचनाकार पर नकलची होने का आरोप लगाता है जिससे कि वह चर्चा मे आ जाये। तीसरे सोपान मे वह स्वयं को सम्बोधित एक लिफाफे के साथ प्रकाशनार्थ अपनी कतिपय चयनित रचनाये भेजता है। चौथे सोपान मे वह किसी दिग्गज साहित्यकार का साक्षात्कार लेता है। इससे उसे ढाक के पत्ते वाला सम्मान मिल जाता है, अर्थात् बडे आदमी के हाथ मे पहुचने वाले पान का वही सवाहक यानीकि कैरियर बनता है। अतिम सोपान मे वह कुछ बडे सरकारी और गैरसरकारी लिखाड़ियों को सम्मानित करता है। किसी को सम्मानित करना वैसे ही एक बहुत बडा पुण्य होता है जैसे विद्यादान करना किसी मुफ़लिस को दस नये पैसे देना, किसी रक्तन्यून को रक्त और किसी प्यारो पपींहे को स्वाति का बूद प्रदान करना। कर्ज लेकर कर्ज देने जैसा भी होता है सम्मान दान। प्रथमत. पुण्य ज़्यादा है। इसमें दोनों ही पक्ष ध्रुवतारे का फिफ्टी फिफ्टी आसन सुबह के छे बजे से शाम के नौ बजे तक के लिए पा जाते है। एम एल सी या एम पी या किसी सस्था के प्रमुख पद तो बीच के है जो लेखक के वाक्चातुर्थ की बिना पर कभी भी मिल सकते है।

बडे आदमियों मे आज के नेता का नाम न रेखाकित किया जाना अनर्थ तुल्य है। इसे शब्दो के आधार पर अभिव्यक्त करना बडा दुश्कर है। ये आज का महादेवता है क्योकि देवराज इन्द्र का सम्पूर्ण मंत्रिमण्डल इसी इकाई में निहित होता है। वही कभी भी प्रधानमत्री हो सकता है, फाइनेस मिनिस्टर यानीकि कुबेर जलापूर्ति मत्री यानीकि वरूण, रक्षामंत्री यानीकि शिव और समाज कल्याण मत्री अर्थात् महाविष्णु। इतना सब होने के बावजूद परोक्ष रूप से वह अत्यन्त निरीह तबके का अग होता है। गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन् करने वाला यह प्राणी चौदह सौ रूपये यानी चपरासी से न्यून मासिक आय वाला होता है, देश मे बच्चो

को पढाता है तो किसी पर्वत पर बने स्कूल में वरना उन्हे विलायत, जर्मनी, अमरीका कनाड़ा जैसे देशो मे पढाई लिखाई के लिए ममता से दूर--बहुत दूर भटकाता है। कारागार उसे स्वर्ग सुख तो देता ही है, सुयश और लोकप्रियता भी। आपराधिक तत्व उसके आज्ञाकारी गण होते है। काम करने के लिए पचास रूपये के लड्डू न लेकर कागज की बड़ी-बडी गड्डियो से ही सतोष कर लेता है। देश की धोखेधडी वाली किसी भी सरकारी या अ-सरकारी सस्था मे अपनी लक्ष्मी न रखकर किसी ठण्डे मुल्क के बैंक मे लॉकर लेता है, जिससे नोटे ठढी आभवा के कारण चिरायु हो और ईलेक्शन लडने के अलावा किसी भी पाजीपने मे उसकी इज़्ज़त बचाने में अपना अस्तित्व सार्थक करे।

अगर देश के बहुत बडे नेता अर्थात सबसे बड़े नागरिको मे सम्मान्य राष्ट्रपति के बगल मे पचास नम्बर तक अपना स्थान सुरक्षित करने की महत्वाकाक्षा है तो इस फार्मूले को आजमाये। स्वाभिमान के माथे पर पादुकाओं की फटाफट होने के बावजूद शांत एव सुभाषी बने रहें, पोशाक में थाकि चेहरे में तनिक भी शिकन अथवा मलिनता लाने से बचे, अपनी मासिक आय अधिकाधिक पन्द्रह सो रूपये बताये, घोटालो मे कितनी ही सक्रिय भूमिका रही हो--बयान देते रहे कि अपने रास्ते से कानून को काम करने दीजिये--वह दूध का दूध और पानी का पानी कर देगा। आदमी को स्वय पर और ईश्वर पर यकीन होना चाहिये। बस । अपनी पार्टी के ही किसी युवा नेता से अपनी प्रशस्ति में बयान दिलवाये, पत्रकारो से मधुर सम्बन्ध रक्खें, उन्हे तिक्तपेय नियमित रूप से उपलब्ध कराये। चुनाव से पहले और २ अक्टूबर को गाधी जी की जय अवश्य बोले, सत्य-अहिसा तथा सत्याग्रह के उनके सिद्धान्तो की उपादेयता पर प्रकाश भी डालें और कहे कि आप बापू ही को निर्विवाद आदर्श मानते है। यह भी ज़रूरी है कि अपने चुनाव क्षेत्र मे पांच वर्ष मे कम से कम एक बार लेकिन यदि चुनाव दो साल मे ही होने वाला हो तो उम्मीदवारी का फार्म भरने के दिन अवश्य जाये। अपनी पार्टी के किसी खास नेता की मृत्यु हो जाने की दशा मे उसके आवास पर भी जाये विधवा से मिले और उसकी चाय पीकर ही वापस लौटे। नैत्यिक जीवन मे यदि

असवर्ण है तो किसी उच्च जाति की कन्या से वरण करे और यदि [illegible] है तो दलित कन्या श्रेयष्कर होगी। धार्मिक आयोजनो मे जाये तो [illegible] दहेज उन्मूलन, अशिक्षा, हिंसा, अराजकता, मदिरापान और भ्रष्टाचार की भूरि भूरि भर्त्सना करे तथा घर लौट कर दीर्घ जीवन लाभ हेतु पनीर मे हरी मिर्च और निब्बू नमक मिलाकर अग्रेजी सोमसुरा का सेवन। नेता अधिकाशतः श्वेताम्बरी होता है, कुछ नेता अपुरुष न होने के बावजूद लगोटी का अंतर्वस्त्र भले धारण करते हो लेकिन लुगी मे लॉग नहीं लगाते, कुछ अग्रेजी कट वस्त्र पहनते है जिनका रग उनके रग-रूप यानी कि काम्प्लेक्शन के अनुरूप या काम्बीनेशन होता है कुछ बडे नेताओ का शरीर यमराज या उनके परिवार वालो जैसा होता है। वे दूधिया खद्दर ही धारण करे जिससे कि रात मे पैदल चलने पर दुर्घटना की अशका न रहे।

आदमी जब मिनरल वाटर की बोतल की सील अपने नाखूनो से तोड़ सकता है चम्मच, छुरी और काटे से पादुकाये पहने हुये खड़े ही खड़े [illegible] कुइक फुड और व्यजनो का सेवन कर सकता है, औषधि मानकर [illegible] पानकर सकता है, रातोरात कुबेर बन सकता है, भ्रष्टाचार और दुराचार [illegible] बरकरार रख सकता है तो समझिये कि ससार के सारे ही पदार्थ [illegible] मे है। बस उसे चाहिये ''कहे कुछ करे कुछ'' पूरब जाये तो पश्चिम [illegible] जहाज पर उडना हो तो पहले भैंस पर सवारी करे, मूंछे [illegible] दाढी रखवाये तो मूंछे नहीं, [illegible] शेव करे तो [illegible] सारी [illegible] सिद्धियो का स्वामी है वह। त्रिदेव बिना चप्पल पहने ही आयेगे खुद ही [illegible] देगे। इगलैण्ड की हाल ही मे ऐक्सीडेन्ट मे लोकान्तरित युवा सुन्दरी को [illegible] वापस करके आगोश मे दे सकते है, मेरी जो गियर्स, [illegible], [illegible] गोल्डेन मालिनी तथा उनकी सरीखी कितनी ही [illegible] सुबहोशाम [illegible] घटी का बटन दबायेगे एव अपना देश [illegible] आपका राज होगा, राम या किसी दूसरे के नहीं। [illegible] तो ईश्वर भी तरसता है, तभी तो वह आदमी के [illegible] राम, कृष्ण, [illegible]

गाधी बनता है। उसको ऐसी ही फीकी भूमिकायें प्यारी लगें तो कोई क्या करें अत निब्बू पावर ह्वील की वदना श्रेयष्कर है। बड़ा आदमी बनने के लिये टीवी पर ह्विस्पर का विज्ञापन और ऊट-पटांग सीरियल देखो ... भविष्य बनेगा, सफल होगा सम्पूर्ण जीवन। निश्चित रूप से बन सकोगे 'बड़ा आदमी'।

□

बाल-बाल बचे नारद भारत यात्रा से

इस बार नारद जी बैकुण्ठ पहुँचे तो वहाँ की हालत बडी खस्ता दिखी। ताज्जुब में पड गये। कही नाममात्र का धुआ या कुहरा न दिखा। इससे वह चलने मे लडखडाते ही, राह भी भूल जाते, क्योकि नीचे पृथ्वी के जाने कितने शहर साफ-साफ नजर आ रहे थे। हैदराबाद, गौहाटी, गाजियाबाद, ग्वालियर, पटना, भोपाल वगैरह-वगैरह हिन्दुस्तान वाले तो बिल्कुल स्पष्ट थे। थोड़ा भी फिसल जाने पर नारद जी पटना में गिरते तो भैस पर गिरते-बेकार की बात मे यमराज उनसे खफा हो जाते, गाज़ियाबाद में गिरते तो घूसखोरी के तेल-पिटरौल से चल रही शंकर जी की ससुराल वाले शर्मा जी की दूकान मे धरा हुआ इलेक्ट्रॉनिक सामान चकनाचूर हो जाने का डर था, ग्वालियर मे गिरते तो ग्वालियर डेवलपमेंट

पार्टी के तीसरे सदस्य बनने की तोहमत सहनी पडती, भोपाल से गिरते तो वहा की गैस से खतरा तो था ही, देश के सबसे बडे प्रदेश के गोबर–नोर भी बन जाते लेकिन इस पद से इस्तीफा भी देना पडता। ऐसी ही परेशानिया दूसरे शहरो मे भी थी क्योकि उनके बाशिन्दा भी नोट की गड्डी और सिक्के की बेइज्जती करने से बचते है। बहरहाल, भगवान महाविष्णु नगे बदन बैठे तो दिखे लेकिन उनका चेहरा उतरा हुआ था। गरुण जी गैरेज मे आराम फरमाते रहे होगे वरना अपने मालिक के पास कहीं दुबके खडे जरूर दिखते। माता महालक्ष्मी भी नहीं थी उपस्थित, तो तरह–तरह के अनुमान लगाने के बाद उन्होने अपने एकतारे को छेड दिया, दोनो पाव झटके तो चट्ट–चट्ट की एक जोडी आवाज़ हुई थी। वैसे वे कभी किसी ब्यूटीपार्लर नही गये लेकिन जब उन्होने अपनी दोनो भौहें कमान की तरह मत्थे पर चढाया तो यही लगा कि प्रस्थान करने से पूर्व उन्होने कही न कही भौहो की कन्डीशनिग कराई थी। बोले मन ही मन– प्रभु तो है ही, आगे की इनकी योजनाओ की जानकारी तो इन्हीं से मिलनी है, तो लौटने से फायदा भी क्या ? कदम बढाये, सिर झुकाया लोकपालनकर्ता को, प्रश्न भी किया– 'प्रभु! माता महालक्ष्मी किधर गई हैं, अस्वस्थ तो नही वे, फ्लू मलेरिया अथवा कन्जेक्टिवाइटिस से ?.. . शायद ही कभी ऐसा हुआ कि आप बैकुण्ठ में होकर भी अकेले बैठे हों, वह भी इस तरह उदास ? आपकी चिन्ता का क्या सबब हो सकता है, उसके निवारण का क्या उपाय है, कृपया विस्तार से बताये।

महाविष्णु तिलमिलाये मन ही मन। बुदबुदाये भी– 'जले मे रामरस छिडकने आया है यह सख्श ! इसे कुछ भी बताना अपनी ही जॉघ खोल देना है।' फिर सोचा– 'बता दी जाय पूरी बात, बाद में कह दिया जायेगा कि कही कहना नही भक्तवर।' तो बताया उन्होने– 'तुम्हे याद है मुनिश्रेष्ठ, एक बार की वह त्रासद घटना ? .. ..अरे वही भृगु वाली . . पता नहीं किस मूड मे थे– चीखते–चिल्लाते यकायक मेरे शयनागार मे आ गये थे और मेरे वक्ष पर जड दी थी एक अदद लात। सच कहूँ नारद, बुरा तो मुझे बहुत लगा था, लेकिन जैसे पृथ्वी के अफसर पत्रकारो को देखकर दहशत खाते है, मै अपने तथाकथित साधू–सतो

को देखकर, क्योकि बडे बदमिजाज होते है ये......कोई कोई साधूसत भी, बात-बात मे ऑखे सुर्ख कर लेते है, जनेऊ तोडने लगते है, भला-बुरा कुछ भी बकने से परहेज नही करते। नतीज़तन मै भृगु के प्रहार से मन ही मन तिलमिलाया तो था लेकिन इस अपमानजनक वेदना को ओठो पर मुसकान लाकर झेल गया था। सहधर्मिणी महालक्ष्मी को यह दृश्य बर्दाश्त नही हुआ तो बैकुण्ठ छोडकर पृथ्वी पर तपश्चर्या के लिए चली गई थी। किसी तरह समझा-बुझाकर उन्हे बैकुण्ठ मे पुनर्स्थापित किया गया। सब पहले से ही जानते हो तुम, तुमसे छुपा ही क्या है भला। अस्लियतन वह चाहती थी कि अनपेक्षित करतूत पर भृगु को दण्डित किया जाय तथा ऐसे ऐरेगैरो को भविष्य में मुंह न लगाया जाय। मेरी मजबूरियो से परिचित होने के बावजूद वह अपनी जिद पर अडी रहीं।

स्वय को जगन्नियता के इतना निकट पाकर नारद जी का दुबला-पतला सीना फूलकर बावन इन्ची हो गया। विष्णु ने उनकी भंगिमाओं को ध्यान पूर्वक पढा था . अपना कथन जारी भी रक्खा--मेरे वक्ष पर भृगु के पाव का निशान लक्ष्मी को अक्सर अखरता है। एक दिन मैने पीताम्बर से ढ़का भी नहीं था शरीर को, तो उन्हें दिख गया वह, अपूर्व रूप से आगबबूला हो उठी वे। तिनतिनाकर जाने कहा चल दीं। चुटकी से नाक दबाये बैठी होगी इस समय हिन्दुस्तान के किसी पहाड की खोह मे। कह गई है-- भृगु जैसे सस्ते किसिम के लोगों को यदि मेरे स्तर से लिफ्ट दी जाती रहेगी, तो स्वर्ग की सेवा मे लगी हुई सारी ही ऋद्धिया-सिद्धिया वह निष्क्रिय कर देगी। अब हाल यह हो गया है कि अवर्षण से उत्पन्न गर्भों से बैकुण्ठ मे त्राहि-त्राहि मची है, तरह-तरह की महामारिया तथा स्किन डिजीजेज से ग्रस्त होकर विक्षुब्ध है इस लोक के वासी, सफाई कर्मियो ने झाडू-पजा का इस्तेमाल न करने की शपथ ले रक्खी है, मेरे क्षीर-सागर का सारा ही दूध खौल-खौलकर खोये सा हो गया है, चन्द्रलोक से भी रिगरेट लेटर आ चुका है कि भुगतान लम्बित रहने की वजह से वह आइसक्रीम और बटर की सम्पूर्ति करने मे असमर्थ है। कई चीनी, गुड और खाण्ड उत्पादक देशो ने कुल माग की दस प्रतिशत मात्र सामग्री भेजी है, पाताल ने भी पी एल ०८४ वाला

गेहूँ भेजा है जिसका नुक्कड दूकानो के माध्यम से वितरण कराया जा रहा है।

नारद जी ! एक और बात भी मेरी चिन्ता का विशेष कारण है।

क्या है वह सर्वेश्वर ?

सुर समुदाय सदैव से नितान्त निष्क्रिय रहा है, दिन में भी धुत रहता है सोमसुरा से। कभी भी अपनी ही रक्षा-सुरक्षा नही कर पाया वह। बात-बात मे मेरे पास आकर देवगण हाथ जोडे हुये म्यू-म्यू-म्यू करने लगते है। फलस्वरूप मुझे ही हर बार दैत्यो से दुश्मनी लेनी पडती है। किस देश मे आपातकाल मे नागरिको के भरण-पोषण तथा रक्षा-सुरक्षा के लिये, निर्वाचन कार्य के लिए आर्मी तथा स्वय नागरिको और उनकी स्वैच्छिक सस्था-कर्मियो को नही लगाया जाता है ! देवताओ की सेवायें मैने लेने का मन बनाया लेकिन जनसेवा के कार्य मे सभी रिजर्व में रहना चाहते हैं या मेरे स्टाफ को चाय पिलाकर ड्यूटी से नाम कटा लेने का प्रयास करते रहते है। शिक्षण कार्य और बैको से जुडे देवता कोई भी ड्यूटी लगाई जाने पर सत्याग्रह की धमकी देते है। उनके इस रवैये से राशन सामग्री का वितरण कार्य बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। सोचता हूँ अपनी जन्मभूमि भारत से ही कुछ निवर्तमान प्रधानमंत्रियो, मंत्रियो और आला-अफसरो को कुछ समय के लिये सेवायोजित कर लूँ तो शायद निवारण हो जाय मेरे चिन्ताजन्य तनाव का। एक पखवाडे से अधिक के तजुर्बे वाले तो कई प्रधानमत्री ही इस समय घुइयां छील रहे है। ... पर आप निस्तेज क्यो होते जा रहे हैं मेरी बात सुनकर भक्तवर ?

नारद बोले— ऐसा आत्मघाती निर्णय न लें चक्रपाणि ! ये सब आपसी साठ-गाठ करके सारी सामग्री स्वय ही हजम कर लेगे। अपने साथ-साथ पुत्र-पुत्रियो और रिश्तेदारो के सीने और कमर के बीच के गोदाम भरेगें। इसलिए हे अतर्यामी प्लीज !

'ऐसा .....?' महाविष्णु ने ताज्जुब भरी भंगिमायें बनाकर प्रतिक्रियात्मक प्रश्न केया।

'जी', नारद जी बोले– 'मेरी समझ मे सर्वोत्तम समाधान यही है कि मेरी माता महालक्ष्मी को समझा–बुझा लें। आपसे रुष्ट हो जाने पर वह भी तो दुखी होगी... .. . । आप दोनो ही परस्पर जल और मीन हैं प्रभु, उनकी सारी आकस्मिक व्यय राशि खलास हो चुकी होगी, आखिर एक ब्रीफकेस ही तो साथ ले गई होगी वह . जिसमें रोज़मर्रा के इस्तेमाल के कपडे भी होंगे. ....टॉयलेट और साबुन की बट्टियॉ . ...वगैरह।

'ठीक है– करूँगा कुछ ऐसा ही। सर्वथा उचित है तुम्हारी सलाह'। भगवान को अंधकार में आशा की एक किरण के दर्शन हुये। 'किन्तु वीणावादक ! भूखे-प्यासे बैकुण्ठ वासियो का कोई जत्था अपनी शिकायते लेकर इधर ही न आ जाये, उससे पहले ही चलो दिखाऊं तुम्हे निकटस्थ राशन की एक दूकान।'

'अ अ अ अ.. .. ... प्रभुवर ! भेष बदलकर चलिये की-यू मे हम लोग स्थान ग्रहण कर ले।' नारद ने सुझाव पेश किया तथा कथन जारी रक्खा– 'की यू' का आशय समझ गये होंगे आप अतर्यामी। इसका तात्पर्य होता है– कतार या पक्ति। आपकी सृष्टि यानी भूमण्डल के ठढी जलवायु वाले मुल्कों में तो कीयू मे खडे होना शान्ति एव अनुशासनप्रियता का परिचायक है। हॉ लगभग सभी गर्म देशों मे कीयू की भावना को लोग ताक में रख देते है। बस–टिकट चाहिये हो या सिनेमा का, नौटकी या सर्कस का टिकट,लोग या तो खिडकी से चिपके साथियो के कंधों पर चढकर खरीदते है या अदर जाकर बुकिग बाबू की कालर या कुर्ता नोच कर। फिर भी हेयर कटिग सैलून मे सभी बडे अनुशासित रहते हैं। अह् . मै भी कितना निरर्थक प्राणी हूँ। . . . कण–कणवासी को ही सामान्य ज्ञान प्रदान कर रहा हूँ।' नारद संकोचवश बडे शर्माये।

यकायक विष्णु जी नारद के कधे पर चुटकी काटकर बोले– नारद नारद! देखो तो, मुश्किल से दस लोगो को चीनी देकर दूकान होल्डर ने "चीनी समाप्त" तख्ती लगा दी है। हो ही नही सकता यह।

नारद ने शान्त किया— आवेश मे न हो सर्वशक्तिमान ! ऐसा किया जाता है। यह अनुभवी प्राणी है, इसकी फाइल दिखवा ले .. यह एशिया के किसी देश का ही होगा। . हो सकता है भारत का ही हो। अत उचित होगा.... आप स्वय सभी दूकानो पर पार्टटाइम चौकसी बरते। लापरवाही करने वाले को मुअत्तल करे। .. जगतपति, वणिक कार्य का अपना ही मजा है। इसके अलावा अपने आवास से बहुधा भिन्न स्थान पर रहने से पत्नी के मन मे पति के प्रति श्रद्धाधिक्य भी रहता है। सब कुछ सामान्य हो जाने पर भारतवर्ष में यदाकदा आप वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी का पद संभाल लिया करे तो कहने ही क्या ! अश्वेत लक्ष्मी तथा देवभोगी सुख-सुविधाये विपुलता मे प्राप्य है वहॉ।

विष्णु ने प्रतिक्रिया व्यक्त की— 'बहुत विनोदी हो गये हो नारद जी देशाटन करते-करते।' कहकर विष्णु के ओंठ और ऑखे शीतल-हसी हँसे थे, फिर बोले वह— "बैकुण्ठ का शासन-प्रशासन कौन सभालेगा फिर ? मरणोपरान्त सेलेक्टैड लोगो को ही पृथ्वी से बुलाता हूँ लेकिन यहॉ पहुंचकर उनके भी क्रियाकलाप बडे क्षुद्र हो जाते है।'

बोले नारद- साधू-सत सही नहीं कहते जनता से या अपने भक्तो से कि सब कुछ पृथ्वी पर ही धरा रह जायेगा। वास्तव मे प्राणी अपने सस्कार साथ-साथ ले आते है। कोई बडा कर अथवा पाबन्दी लगा दे प्रभु, वर्ना पृथ्वी के सारे ही प्रदूषण, लूट और चोरी और कत्तल, आरक्षण और जाति-सम्प्रदाय की मानसिकता भारतीयो के साथ-साथ आकर बरबाद कर देगी आपके ह्वाइट हाउस को। मेडिकल चेक-अप की व्यवस्था भी लागू कर दे वरना.. ..।

एक बार मस्तिष्क मे आई थी यह बात नारद। .. अब बैकुण्ठ मे तो कोई आयुर्विज्ञान सस्थान अथवा आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज है नही। भूलोक से आये जो हैण्ड्स मिलते हैं उन्हीं से स्वास्थ्य, शिक्षा, स्पोर्ट, नागरिक सुरक्षा आदि की

व्यवस्था पृथ्वी से ही आये हुए भक्तों के लिए कर देता हूँ।....... एक डाक्टर ने अन्डरहैड डीलिग प्रारम्भ कर दी। बेड एलाट करने के लिए मुद्रा की अपेक्षा करने लगा। प्रात और साय रोगियो के वार्डो का राउन्ड लेता तो भी वह खुद एव नर्स, वार्डमास्टर आदि के माध्यम से हरेक साइज की मुद्राओ की उगाही में व्यस्त रहता। स्वास्थ्य विभाग की ऐसी करतूतों से मेरी बडी थू-थू हो गई नारद जी। तुम बता पावोगे कि पृथ्वी की किस जलवायु से सम्बन्धित हो सकता है यह डाक्टर?

क्या लाभ कुछ कहने से जगन्नियता! पृथ्वी की छोटी-छोटी बीमारिया भी अब महामारी का रूप ले चुकी है। कभी-कभी सदेह की महामारी से भी वहां सरकार के अरबो रूपये का वारा-न्यारा हो जाता है। समुद्र की लहरो को अपनी जिह्वा से चाटते हुए भारत के एक पश्चिमी भू-भाग मे खबर उड गयी कि वहा के चूहे नाचते है, नाचते-नाचते ही मर भी जाते है। चूहो की इस आचरण की बीमारी से नागरिक बेइन्तेहा परेशान हुए, लेकिन अंतत: टाय-टाय फिस्स!' अथक श्रम के बावजूद चुहिया तक नही निकली।

'अरे नारद! तुम्हारे व्यावहारिक ज्ञान के प्रति मै नतमस्तक हूँ।..... 'चीनी खत्म' की सूचना तो लग गई है लेकिन बाकी लोगों के घर में अब चाय कैसे बन पायेगी? मिल्क और सपरेटा पैकेट भी पृथ्वी से ऐरावत पर लादकर देवराज इन्द्र ने मंगवाया था, वह भी चौराहो पर प्लास्टिक क्रेट्स मे धरे-धरे बेस्वाद हो जायेगे।' नारद की ऑखो मे ऑखें गडाकर बोले विष्णु-एक विशेष आदेश है मेरा तुम्हारे लिये-- शीघ्रातिशीघ्र जावो तुम मेरी जन्मभूमि को .यानी कि भारतवर्ष।

न न न न भगवन,। ऐसा आदेश करके मुझे अकारण ही दण्डित न करे।

महाविष्णु को 'न' शब्द नापसन्द था। बोले-- 'चुप।' अनन्तर कुछ देर तक अपनी सांसों की रफ़्तार को सन्तुलित करके वे फिर बोले- दबे पांव गलियो-कूचो मे घूम-घूमकर पता लगावो-भारत के राजनेताओ मे क्या कोई ईमानदार

भी है, चौकीदारो मे क्या कोई रात्रि–जागरण करता है, किसी अधिकारी को घूस लेने से अरूचि भी है, क्या किसी सत को मदिरा और महिला से अरुचि है, क्या कोई वरिष्ठ शिक्षा अधिकारी पुस्तके क्रय करने में बोफोर्स सौदे से भिन्न व्यवहार भी करता है, क्या कोई राज्यपाल खरबपती नही, कोई महिला बियर–शियर की लती नही ?

भगवान के आदेश के दौरान नारद मूर्छित होते-होते बचे। फिर ललाट नासिका, नाभि तथा नाभि से नीचे पावो के अगुष्ठ तक सम्पूर्ण शरीर धूलि को अर्पित-समर्पित करके "त्राहिमाम् त्राहिमाम्" करने लगे। विष्णु चिंतित हो उठे- किसी प्रकार का इन्फेक्शन तो नहीं इस पण्डित को, दिल का मरीज़ तो नही है ये नही तो फिर नरवस टेम्परामेट का हो सकता है ये। नारद को तो पृथ्वी के चुप्पाबाबा शकरानदी की तरह किसी भी स्थिति का चमकते चेहरे से मुकाबिला करना चाहिये था। अब किया भी क्या जाय इन्हे किसी अस्पताल भिजवाने के लिए ! इस बीच वैकुण्ठ के टेलीफून ऊँघते ही रहते है, गरुड स्वय रुग्णावस्था मे है, इन्द्र का वाहन तलब कर लेता किन्तु वह बेचारा तो पृथ्वी से दूध के पैकेट ढोते-ढोते यू ही पस्त है, कुबेर जी आज सुबह खुद ही बता रहे थे कि उनके रथ की बियरिगे कट गई है जिससे दोनो पहियो मे डग्ग है, सूर्यदेव का रथ तथा उसके घोडे एसेशियल सर्विसेज मे है।' नारद से पूछा– "त्राहिमाम्" उच्चारण की आवश्यकता क्यो प्रतीत हुई भक्त श्रेष्ठ ?"

दयानिधान ! मुझे चाइना, हागकाग, पुर्तगाल, स्विटजरलैण्ड, तुर्की, ईरान, उज़बेकिस्तान वगैरह–वगैरह कही भी जाने का आदेश करे; अन्टार्कटिका की खामोशी और तनहाई को भी झेल लूंगा, जर्मनी जाकर स्टेफीग्राफ़ के घुटने की चोट का जायज़ा ले लूगा, अथवा अमरीका में मोनिका सेलेज जैसी खेल–प्रतिभाओ की कुशलक्षेम से अवगत हो जाऊगा, माइकल जैकिशन जैसे गधर्व तक भी चला जाऊँगा, गौराग राजकन्या डायना की दुर्घटना विषयक सदर्भ के प्रति सवेदना भी व्यक्त कर आऊगा, किन्तु भारत जाने के लिये बाध्य न करें सरकार ! वहा

का हर खिलाडी हरैला है, हर पहलवान दुर्बल है, राजनेता खुद तो यूरिया फाकता है पर पशुचारे से आपका भोग लगाता है, चौकीदार चोरी कराता है, तन्त्रमत्री भक्षाभक्षी है। आपके भक्त भी जूते पहनकर खडे-खडे खाते है, पत्नी को तदूर मे पकाते है, आवास के अंदर ही दीर्घशका से राहत पाते हैं। औरते बेपर्दा यानीकि दिगम्बरी है, मिर्च सी तीखी है और पान मे जर्दा है। भारत मे शेर तराजू मे रहता है, भेडिया खूखार है, आदमखोर कहलाता है। मुझे क्षमा करे सर्वेश्वर, मेरी रक्षा करें जगत के रखवाले।

विष्णु कुछ कहते– नारद को चुचकारते-पुचकारते या फिर डाट का कैपसूल खिलाते कि इसी बीच एक ज्योतिशिखा उनके समक्ष हवा मे लहराती सी दिखी उसके चारो ओर पहले की तरह ही अधकार--मिश्रित कुहरा था, धुध थी. .स्नो-फाल जैसा ही दृश्य स्पष्ट था। महाविष्णु का सीना फडफडाया, दाया नेत्र भी स्फुरित हुआ। शनै शनै. ज्योतिशिखा पहले तो धूमिल होती गई अनन्तर दोनो ही करतल जोडे हुये स्वर्णाभ महालक्ष्मी के रूप में परिवर्तित हो गई। स्वत' बोली वे-- नाथ, मै अब आपको और अधिक दुखी नहीं देखना चाहती। मै कभी भी किसी भी परिस्थिति मे आपका साथ नही छोडूँगी। यू ही आ गई बात मेरे दिमाग मे .कि आपको थोडी सी जर्क दे दू और भारत की ब्रह्माण्ड सुन्दरी तथा विश्व श्रेष्ठा के नाकनक्श का जायजा भी ले लूँ भावी विश्वकन्याओं की संभावनाओ का सर्वेक्षण भी कर लूं तो भादुडी–पति तक भी हो आई हू। मुबई मे मुझे दूरदर्शन से बैकुण्ठ की बदहाली की खबर लगी। किन्तु सशर्त है मेरा आत्म समर्पण। पहली शर्त– आपको अब कभी भी भारतवर्ष को अपनी जन्मभूमि नही बनानी। आपकी पैदाइश की जगह अकारण ही भारतीयो की पारस्परिक कटुता का सबब बन जाती है, और गदगी इतनी कि उस देश मे कहीं पाव तक धरने की जगह नही, बिना काला चश्मा लगाये चलना दृष्टिहीनता को आमन्त्रित करना होता है–इलेक्शनाइटिस का रोग तो घर–घर मे व्याप्त है, सक्रामक भी है, बालिग होते ही लग जाता है, मृत्यु के बाद पीढी–दर पीढ़ी चलता है ... हर साल किसी न किसी अंचल मे सभी को इसका दौडा पडता है।... और.भ्रष्टाचार तो इतना

कि किसी-किसी नेता और सरकारी कर्मच री की देह की बदबू लन्दन और इन्द्रप्रस्थ से अधिक की दूरी चुटकी बजाते ही तय करती है।

लक्ष्मी का बयान सुनते-सुनते 'नारद का चेहरा चमक उठा। अपने पीताम्बर से उन्होने उसे रगड-रगडकर और अधिक अमल किया, तर्जनी से उन्होने नासिका के दोनो छिद्र साफ किये, कानों के कुण्ड की काई भी हटाई– कुल मिलाकर सतोष की सास ली कि फिलहाल उन्हे भारत जाने से मुक्ति मिली। बाल-बाल बचे वह इस हादसे से। फिर उन्होंने अपना मस्तष्क माता लक्ष्मी के पावों की उगलियो पर रख दिया था।

□

अब हम क्रिकेट खेलेंगे

कबड्डी-कबड्डी करते हुए जिन्दगी के बीस साल गाव के लडको ने गँवा दिये तो सबसे ज्यादा बुरा लगा कटोरी काकी को। स्कूल की फील्ड में धूल और पसीने से तरबतर छगालाल के पास आकर खडी हो गई। बहुत लताडा उसे और सभी को।...तुम लोग इतनी उमर बीत जाने के बावजूद रहे गँवार के गँवार। एक भी चिह्न तुम्हारे शरीर मे याकि दिलोदिमाग मे नही जिससे तुम्हे जमाने का हमसफर माना जा सके-क्योंकि दादा-परदादा के जमाने का सडियल खेल खेलते हो- कबाडी कबाडी। अरे कबाडी बनकर ही बाकी अपनी जिन्दगी बिताओगे....! कोई भी महत्वाकाक्षा नही तुममें ?

कटोरी काकी के इस सवाल से सभी सकपकाय जिससे उसकी और कुछ भला-बुरा कहते रहने की हौसला आफजाई हुई। चहकी- अरे अगर जिन्दगी मे बेनाम रहकर ही रुख्सत हो जाने को तय कर रखी हो तब तो कुछ भी नही कहना, वर्ना कुछ ऐसा काम करो कि जमाना याद करे, और देश के इतिहास के किसी पन्ने में तुम्हारा नाम लिख जाये। तुम्हे रोज अखबारो मे तुम्हारे काका पढे, तुम्हारे भैया, दीदी, मम्मी और दादी पढे तो तुम्हारे पिता का सीना चौडिया जाये। . .अब भी नही पल्ले पड़ा कुछ ? अरे बेटा, ऐसा कुछ करो कि तुम्हारे पीछे सी०बी०आई० लग जाये।'

छगालाल दाये हाथ की मध्यमा से अपना अंगूठा ठनकाते हुए बोला— "इसके लिए तो घूस लेना पडेगा काकी।" सुनते ही बमक उठी वह— 'अरे बुद्धू इतना भी नही पता तुझे कि घूस दफ्तर वाले और बडे बडे अफसर लेते है। यह काम नौकरो का है। इज्जत वालो का नही। तुम मन लगाकर पढो या सिर्फ मटरगस्ती करो, आपस मे लडो-झगडो और पीटे जाओ। एक इज्जतदार घर का दीया जिस स्तर की बेइज्जती सहेगा वह उतनी ही लोक-संवेदना का अधिकारी बनेगा। बस समझ लो नेता बन गया वह। इलेक्शन भी जीतेगा, मंत्री भी बनेगा और उन्नति की इन चोटियो पर पहुँचते ही करोडो और अरबो की रकम का स्वामी बन जायगा। रातो मे रात के रग वाले ब्रीफकेस कितने ही लोग लायेगे . . बस उन्हे सभालकर लोहे की अल्मारी मे धर लेना है। तुम भी कर सकते हो ऐसा, कोई नेता बनते ही। घोटाले मरीजो की दवाओ के हो सकते है, ऊसर और ऊबड-खाबड जमीन की हीरा मोतियो से खरीद के, और जानवरो के भूसा-सानी के भी। डालरो की पेशगी लेना भी घोटाला है, घूस नही। यह पेशगी अपने देश मे लो और रिश्तेदारो के नाम बैक के लाकरो मे रखो, विदेश मे जाकर लो तो उसे इधर लाने की जरूरत नही- वहीं जमा करा दो किसी बैक में- वहॉ पर पैसा चूसने वाली सस्थाए नर्सिग होम या स्कूल खुलवा दो। बैठे ही बैठे पैसा भी और पुन्न भी।'

"सबसे आसान किसिम का घोटाला कौन होगा काकी ?" सुमिरन की इस जिज्ञासा से काकी को खुद के प्रति बडी इज्जत महसूस हुई और साथ ही साथ उनकी झुझलाहट भी खर्च हुई–"अरे मैं कोई घोटाला–विशेषज्ञ नहीं हूँ लेकिन तुम्हारे काका पशुचारा घोटाला की बडी तारीफ करते हैं, इसका आविष्कार बिहार मे हुआ और उधर असम के महतों के बीच फला–फूला। ... तुम्हारे काका तो अखबार पढ–पढ कर हसने लगते हैं। इसके मतलब ये है कि सबसे आसान, तनाव रहित और सभी के मन को प्रसन्नता और सेहत देने वाला घोटाला पशु चारा वाला ही है।"

छगा ने अपनी चिन्ता कही– "काकी जानवरों का चारा हडपने मे कुछ अर्हताए जरूरी है। ऐसा मगरमच्छ अन्य जरूरी बातों के अलावा कम से कम एक दर्जन बच्चों वाली स्त्री का पति हो, स्त्री का नाम किसी दुग्ध उत्पाद पर होना चाहिए।" "तो रख ले तू अपनी घर वाली का नाम जो भी चाहे। बच्चों वाली बात भी तेरे ही हाथ की है।" काकी की इस बात पर सभी ठहाका लगाकर हसे थे। अहिबरन हकला कर बोला था– लेकिन मेरी तो अभी किसी से गांठ ही नही जुडी और जुड भी गयी तो रबडी नाम पडते ही वह रातो दिन की नींद् हराम कर देगी। कहेगी– चलो खेले मुख्यमत्री मुख्यमत्री।

यह बात सुनते ही काकी छरक कर वापस लौटने लगी। पीछे देख–देखकर कह रही थी–'नाश काटे तुम सब बेत हो बेत। तुममें फूल लगने ही नही चाहे जितनी खाद दी जाये।" काकी अन्धड की तरह आयी, बवन्डर की तरह उपदेश करती रही फिर आधी की तरह चली गयी लेकिन सबके दिमाग मे एक–एक दाना डाल गयी थी इस बात का कि कबड्डी का खेल बहुत पिछडे लोग खेलते है– उसकी जगह कोई और ही खेल खेला जाना चाहिए। .... खेल शिक्षक मटकते हुए आये, कोई बहुत ही कसी सफेद चड्डी पहने हुए बोले–'कहता तो रहता हूँ कि तुम सब क्रिकेट खेलो। देश के एक जमाने तक मालिक रहे गोरे–गोरे साहबो का खेल है यह, लेकिन तुम लोगो के मगज मे चढती ही नहीं बात। यह खेल

भारतीय खिलाडियो के लिए बडे फायदे का है। गिनवाता हूँ कुछ फायदे-फिलिम की नायिकाओं से रोमांस चल सकता है, छोटे पर्दे की धोबिनो से भी पट सकती है. ..तब मनचाही शादी हो सकती है। देश घूमोगे ही, विदेशो की भी हवा का सेवन करोगे। बिलायत की दूकानो मे चोरी करनी तो मुश्किल बात है लेकिन भइये उनमें धरा सामान देख-देखकर लार टपकाने का मौका तो मिलता है। हा.. अच्छी शादी होने मे अच्छी सूरत होना जरूरी नहीं। ज्यादा पढा-लिखा होना भी गेर-जरूरी ही समझो। नौकरी आसानी से मिलेगी, काम कुछ नहीं करना सिर्फ क्रिकेट खेलते रहना होगा। इस खेल में कमी सिर्फ इस बात की है कि लडकियाँ लडकों के साथ नहीं खेल सकतीं तुम्हारी टीम को कोई मैच जीतने का झझट नहीं झेलना पडेगा। साल के १०० मैचों मे ६७ भी हार गये तो तुम्हारा रिकार्ड बरकरार है। कोई कह तो नहीं सकेगा कि कभी कोई मैच नही जीते। नौसिखियो की विदेशी टीम से खेलने मे भी तुम्हें दांतों मे पसीना लाना होगा। किसी से मैच हारने में काहे की बेइज्ज़ती! कोइ डिफफीकल्ट नहीं है यह गेम न खर्चीला ही। बिल्कुल अपनी गुल्ली और डंडा समझो। बस, गुल्ली-डंडा तुम अडरबियर और बनियानी ही पहन कर खेल सकते हो जबकि क्रिकेट के लिए तुम्हे एक लोहे की टोपी या एक सूती कैप खरीदनी होगी, साथ ही साथ सफेद पैन्ट और कमीज बनवानी होगी– बुश्शर्ट बिल्कुल नहीं चलेगी, तुम्हारी शादी वाला सूट और टाई भी नहीं चलेगे।

"कुछ और शिक्षक जी ?" सभी ने एक स्वर से यह जिज्ञासा जाहिर की तो शिक्षक जी फिर चालू हुए– "और कुछ नहीं, तुम्हें हारने मे शर्म न करने का रिकार्ड बनाये रखना होगा, अगर टीम मे लगातार बने रहना चाहते हो। रिकार्ड शून्य रन बनाने का होना चाहिए, इस बात का होना चाहिए कि कितनी बार १० रनो पर आउट हुए, कितनी बार एल०बी०डब्लू०, कितनी बार लड़-खडाकर गिरे और कितनी बार बोल्ड हुए। और हॉ– बोलर्स और फील्डर्स के लिए ज़रूरी होगा कि वह गेद मे जीभ का पसीना लगाते रहे, उसे पैन्ट मे अपनी जॉघो या कमर के पीछे वाले भाग में रगडते रहे। इससे उसमे चमक आती है, तो वह सभी फील्डरो

को साफ-साफ दिखाई देती है। टी०वी० दर्शको को भी उसकी धुनाई साफ-साफ नजर आती है। छक्का लगने से वह गुम नहीं हो सकती– उसे सरलता से खोजा जा सकता है, और और और . और पूरी टीम के थूक पर कैप्टन का थूक लगता है तो आपसी भाईचारा बढता है। वसुधैव कुटम्बकम् वाली बात भी चरितार्थ होती है।

"किस तरह से ?" यह सवाल भी सभी ने आकाशवाणी के राष्ट्रगान की तरह पूछा था तो शिक्षक जी बोले– "दूसरे मैच में शामिल न किए जाने पर निकाला गया खिलाडी भाई चारा निभायेगा, कैप्टन को गाली नही देगा न उसकी कमीज ही फाडेगा। वह अपने कैप्टन की गुप्त बातें भी किसी से नहीं कहेगा, इससे खुद का भी फायदा है।"

"गुप्त बाते क्या हो सकती है शिक्षक जी !" बोले वह– 'सब जानते हो तुम ?.. यही जैसे कि हारने के लिए किसी दूसरे देश की टीम से शुकराना लेना। वगैरह वगैरह....। वास्तव में इससे एक साथ दो फायदे होते है। पहला फायदा यह कि हारने का रिकार्ड बरकरार रखने के लिए हारना तो है ही, लेकिन उसके साथ द्रव्य-लाभ दूसरा फायदा कहा जायेगा। इस दूसरे फायदे से जुडे हुए जाने कितने फायदे है। उंगलियो पर अभी गिन लो– इन्क्वायरी कमीशन बिठाया जायेगा या सी०बी०आई० से इन्क्वायरी करायी जायेगी तो माँ-बाप भी समझेगे कि उनका कुडा बिल्कुल कूडा नही– कमाऊ है, छोटे पर्दे की डिटरजेन्ट का विज्ञापन करती धोबिने भी उसकी पत्नी बनने का ख्वाब देखेगी, यह समझकर कि बडा पैसे वाला है ये और नामी-गरामी भी। गली की जाने कितनी सुराहीदार गर्दनवालियाँ दूध भरे कटोरे जैसी आँखो से देख-देखकर ठडी-गरम हवाएं छाती मे भरेगी और मुंह से निकालेगी। सारी बातें अखबारो मे साया होगी, खेल पत्रिकाओ मे छपेंगी और फिल्मी मैगजीनो मे। इन्हे लोग हेयर कटिग सलूनो मे और फुटपाथो पर पढेगे, कबाडियो को बेचेगे तो उनसे खोखे बनेंगे जिनमे बनिया अपने ग्राहको को नमक मिर्च और मक्खन देगा, लाई-चने और गरमा गरम समोसे और जलेबिया

भी। लिफाफे पर बना हुआ हाथ में बल्ला थामे तुम्हारा रंगीन चित्र देखकर जाने कितनी कोकाबेरियाँ तुम्हें चूमेंगी.....अपना पुस्तक चिह्न बनायेगी। बस समझ लो क्रिकेटर क्या बने, परी लोक में पहुँच गये। .....तो कल से हम लोग बडी वाली फील्ड पर क्रिकेट खेलेगे।

क्रिकेट खेलने के फायदो को सुनकर सभी के मुह गीले हो गये, गाल फरकने लगे, कान आंखे और नाक भी अपनी अपनी जगह पर उछलने लगे। सीने मे भी किसी मेढक ने कई छलागें लगाईं थीं। सुनहरा भविष्य सामने था . सभी को अपनी बाहो से लपेट लेने के लिये . ...तो वे चिल्लाये–हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे।

□

अथ नाम महात्म्य

नाम के लिए तो आदमी जाने कितने पाप करता रहता है, और पुण्य भी, तो वह बदनाम कहा जाता है या फिर भला–मानुष। भला मानुष कहे जाने के लिए आदमी को परोपकार और हमदर्दी के उदाहरण पर उदाहरण समाज के सामने पेश करने होते हैं। जैसे कोई जानवरों को पेयजल सुलभ कराने के लिए पौशाला बनवाता है या तालाब खुदवाता है, जबकि आदमी के इस्तेमाल के लिए जगह-जगह हैण्डपम्प लगवाता है। यात्रियों की सुविधा और आराम के लिए धर्मशाले यानी कि यात्री–निवास बनवाता है जिसमे घर जैसी कुछ बाते रहती है। मसलन आबदस्त की, खाने–पीने और सोने की। पेड लगवाता है जिससे कि थका–मादा मुसाफिर कुछ देर ठहरे और सुस्ता कर- अपनी थकान मिटा सके। दुर्गम रास्ते भी इसी संज्ञा के लाभ के उद्देश्य से चौरस कराता है वह, रास्ते में खडन्जा लगवाता है। ... .नाल और खडन्जे भाई-भाई है क्योकि एक ही तरह की दोनो की जिम्मेदारिया है। फर्क रत्ती भर का यह है कि नाल घोडे के पॉव मे ठुकी होती है जिससे कि पक्की सडक पर दौडने से वह घिसे नही और उसे ठोकर का भी असर महसूस न हो। इसके ठीक विपरीत खडन्जा मे इमारत बनाने

मे नालायक समझी गई ईटे गली-गलियारे को बिछा दी जाती है जिससे उनकी मिट्टी न बहे, और न ही पिच-पिच कीचड हो। शेरशाह बहुत बड़ा बादशाह था उसके दाये हाथ या-फिर बॉये पॉव में जितनी उंगलियां थी उतने ही साल उसने शासन किया, लेकिन अपना नाम आने वाले कितने ही जमाने तक के लिए जिन्दा बना गया। अपने बचुवा से जब मैंने यह कहा तो साबित कर दिया उसने कि वह योग्य पिता का सुयोग्य पुत्र है। बोला- डैड! जितने साल और जिन सालो मे दूसरा विश्वयुद्ध चला, उन्ही सालों मे शेरशाह की भारत में बादशाहत थी- फरक सिरिफ इतना कि उसका ज़माना सोलहवी सदी की सन ३९ से ४५ था जबकि सीकण्ड वलर्ड वार बीसवीं सदी मे हुआ। उसकी इस बात से खुश हुआ मै साथ ही दायें हाथ के रोयें भी सुलग गये, क्योंकि इस दरिद्र को आज के जमाने मे भी सही-सही अंग्रेजी बोलनी नही आती-वर्ल्ड को वलर्ड उच्चारित करता है। ...हा तो यह शेरशाह यूं ही उस नाम से नहीं जाना गया। माना कि पशुचारा उसकी खुराक नही थी लेकिन था वह सासाराम यानीकि बिहार प्रदेश का ही, जहॉ का अपना ललुवा है। इन दोनो में भी फरक सिर्फ इतना कि शेरशाह कोई बहार खा लोहानी के यहा चाकरी करता था जबकि ललुवा तालाबो से भैसे यानी कि जमराज की सवारी की घर-वालियों को सूखी जमीन पर वापस लाने के लिए नाना प्रकार की हिकमतो का इस्तेमाल किया करता था। दूसरा फर्क यह कि फरीद एक शेर को मार कर शेरशाह कहलाया जबकि ललवा ने अपनी छडी से किसी सियार तक की जान नही ली। एक फर्क और गिनवाया जा सकता है कि शेर मारने पर वह बहादुर बादशाह बना जबकि अपना ललवा धूल धक्कड भरे एक प्रदेश का मुखिया ही रह गया। बकैत तो है मगर डरपोक भी है ये। बात को पूरी रोक तक लाने के लिए एक फर्क और गिनवा देना ही बेहतर होगा। यही कि शेर खां याकि शेरशाह ने चुनार के ताज खां की बेवा से शादी की थी, लेकिन ललवा बचपन से ही एक खूंटे से यू बॅधा कि हर नौ महीने बाद चमत्कार करता रहा है। हॉ..... तो इसी शेरशाह ने चार बडी-बडी सड़कें बनवाईं जिनके नाम नही बताऊंगा क्योकि ललुवा ने सिर्फ अपने घर की सडक रफू कराया जिससे के प्रदेश के विकास कार्य का धन आसानी से लाकर घर में सुरक्षित रक्खा जा

सके। देश के सबसे बड़े प्रदेश की मुखियानी माया वाली बेन शेरशाह के नक्शे-कदम पर ही तो चल रही है। पूछिये कैसे। सुनिये-शेरशाह ने अपने पांच साल के दौरान राज्य में कई प्रशासनिक सुधार किये। पूरा राज्य सैतालीस सरकारो अथवा जिलो में बाँटा ; फिर उनके भी उपजिले बनाये। उत्तर प्रदेश की इस दलित क्वीन ने अगर दूसरे को राजपाट सौंप देने की गल्ती न की तो सिरिफ छे महीने की मुखियागीरी में सारे ही गॉव एक एक जिला बना देगी- सभी मे एक-एक कलक्टर, कप्तान और हेड डाक्टर नियुक्त कर देगी। आज के जमाने मे हेड डाक्टर की कुर्सी महाभ्रष्ट प्रशासनिक अधिकारियों की तरह ही बेमिसाल है। कलूटी लक्ष्मी की टकसाल होती है ये। प्रदेश की माया बेन भी पैसे वालो को गुदगुदा तो रही है, पार्कों और सड़कों मे बदलाव भी ला रही है और शेरशाह जी से कम मायावी नहीं। दोनो में इत्ता फर्क जरूर है कि शेरशाह पल्ले दर्जे का मर्द था जबकि माया बेन एक नम्बर की मरदानी औरत है। इस वजह से यही मानो कि दोनों मे पोशाक के अलावा कोई खास फर्क नहीं।

हिन्द महासागर के पड़ोसी हिन्दुस्तान के सारे ही नेता शेरशाह की नकल करने मे मशगूल है, चाहे किसी भी पार्टी के क्यों न हो। अनाथाश्रम, बुजुर्ग विल्ला और बेवा 'याकि बेसहारा बिहार' तो आये-दिन बनवा रहे हैं। य तीनो ही बडी कमाऊ एव आरामदेह, साथ ही साथ कम खर्चीली सस्थायें होती है। मरहम-पट्टी के लिये समाज कल्याण विभाग उनका चोली-दामन होता है। वैसे और चाहिए भी क्या-इन संस्थाओं मे सरफरी संवासिनिया है जिनके लिये साल-दो साल मे एक-एक सी [illegible] धोती और हरा ब्लाउज, बृद्धो के लिए खांसी-खखार के सीरप और बच्चों के लिए एक माउथ आर्गन-डफली और ढोल और एक एक पेंसिल के साथ कुछ रसीद बुकें। हाँ तो हमारे ये सामाजिक-कार्यकत्ता-शिरोमणि सस्था की इमारत बनने में पहली ईट खुद रखते हैं, खुद ही अपने नाम का पत्थर लगाते है,। इससे फायदा यह कि यदि इमारत विद्यालय की है तो उससे पढकर निकले सारे ही बच्चों का भविष्य पथरीला होता है, उनमें पग-पग पर सघर्ष करते रहने की मनोवृत्ति का विकास होता है.. ...और जिन्दगी मे कोई भी काम स्वार्थ

और लोक-प्रचार के उद्‌देश्य से करते है। इतर संस्थाओ के सदस्य स्कूली लड़कों की तरह पत्थरों को पृथ्वी प्रक्षेप्यास्त्र की तरह इस्तेमाल करने का कौशल रखते है। 'उपलन्यास' यानीकि शिलान्यास एक ऐसा अवसर है जिसके बहाने सामाजिक कार्यकर्त्ता नई पीढी को यह सदेश देते है कि मुह का प्रयोग सिर्फ खाने और दूसरो को भला बुरा कहने याकि ससद मे बकैती करने से ही करना चाहिए जबकि पत्थर का प्रयोग नकल विरोधी दस्ते, पुलिसकर्मियो के विरूद्ध तथा दगे उकसाने और ऐन्टी इन्क्रोचमेट कर्मियो को छठी का दूध याद दिलाने मे करना चाहिए। आवश्यकता पडे तो अपने बाप का कपार भी इससे विद्रूप किया जा सकता है। मेरी यह बात सुनकर बचुवा की आखे चमक उठीं थी, तो वह बोला-'नाम का बड़ा असर होता डैड। दुक्खी अक्खा जिन्दगी दुखी बना रहता है, भीम सिह बड़ा होकर भीम की तरह के ही डीलडौल वाला होता है।' मैने बीच मे बात काट दी- और पृथ्वीपाल तीनो लोक का स्वामी होता है। हुह !'

प्रतिक्रिया व्यक्त की उसने- सही भाषण कर रहे हो तुम फादर ! किस्मत और नाम परस्पर टकराये भी है। अब देखिये न 'गरीबदास सेठ है, जाने उसने कितने दीवाले निकाले होंगे ! सोचता रहा कुछ, सोचता सा रहा। इस दौरान बड़े-बड़े योद्धाओ के चित्र भी देखे एलबम पलटकर-इग्लैण्ड के जानमेज़र, पाकिस्तान की अरब-खरबपती मुसम्मात बेनज़ीर, हिन्दुस्तान यानी अपने देश के ही सर्वश्री प्रातः स्मरणीय नरबाघाराव, अस्पष्ट भाषी श्री देवगोरा और कांगो के कुछ ही पहले तक के खासुलखास करकारिया साहब यानी कि मौबूटू। सेलेस की पीठ पर वह जगह भी देखता रहा जिस पर किसी ने खेलते वक्त चाकू कोंच दिया था। फिर यकायक अपनी अलपटें ऊपर की ओर झटककर बोला— फादर, मेरी एक दोस्त के डैड का नाम मदन है तो वह उसे प्यार से 'मैड' कहकर पुकारती है.. (कुछ बिसूरते हुए उसने अपने एक निर्णय को शब्दायित किया)' लेकिन मैं तो आपको 'डैड' ही कहूगा क्योकि आपके नाम से मैड जैसा कोई भी शब्द नही बनता।' फिर काफी देर के लिये शान्त हो गया वह।

थोड़ी देर तक बचुये की आखिरी बात का व्याकरण समझता और गुनता रहा मैं। उसकी अट्ठारह इन्ची पलास्टिक की पटरी से अपनी पीठ की अलकनन्दा की मरोरियाँ भी घिस घिसकर नेस्तनाबूत करता रहा कि इसी बीच तल-ए-समन्दर से पन्द्रहवें रत्न की तरह का वह कुछ ले आया। प्रश्न किया 'डैड ! मेरा नाम तुमने पवन क्यों रक्खा— जो चीज आखों से दिखती न हो, उस पर किसी का नाम रखने से फायदा ?' मैंने उत्तर दिया— 'मेरा नाम श्रीकिशन है तो क्या तुझे मै हाथों में बांसुरी लिये और सिर पर मोरमुकुट लगाये दिखता हूँ ?'

नहीं डैड ! तुम्हें मेरा नाम 'ज' अक्षर से रखना चाहिए था।

तौ कौन सा तीर मार लेता तू ?... पूछा मैंने। "तेरा नाम पवन शेरबहादुर है— क्या कमी पाई तैंने इसमें ? शेर बहादुर जो हवा की तरह दौड़ता है" मेरे इस सवाल पर आनन-फानन उत्तर फेंका उसने- पवन की कमी तो अभी बताई मैने, और शेर नाम वाले लोग शेरशाह की तरह सिरिफ पांच साल शासन कर पाते हैं, बाद में मार डाले जाते हैं, जबकि 'ज' नाम वाले लोग बडी-बडी अच्छाइयो के मालिक होते हैं।

जैसे ?.......... अरे जहाज रखता तेरा नाम तो आसमान पर ही उडा करता तू याफिर घासफूस और चारा ही चुगता रहता। देख न, भोजपुरी वह.. अरे वही अपना जगन्नाथ।.... .जमना परशाद रखता तो जाडो और गर्मियो मे कीचड ही कीचड दिखता तू। बहुत ही एहसान फरामोस है तू रे।

नहीं डैड ! जवाहर लाल रखते मेरा नाम तो कैसा था ! जलालुद्दीन अकबर और जहाँगीर भी बुरे नाम नहीं। बीच मे ही बात कतर दी मैने— 'तो यह क्यो नही कहता कि तेरा धरम परिवर्तन ही करा देता मै। देवनागरी नागरिक बनाता तुझे हिन्दुस्तानी जमहूरियत का।

मेरी असहमति की सीराकेसरियन मुद्रा देखकर उसने मन ही मन हार मान ली। मेरी ओर बिना देखे ससद मे मैजोरिटी खो देने वाले लीडर की तरह शरमाया हुआ कमरे से बाहर चला गया। जैसे मैने कोई पाप कर दिया हो, द्वारचार वाले दिन की दोपहर मे ही दो गिलास चढा ली हो, जानवरो के भूसा सानी की जगह गल्ती से मालपुये खा लिये हों। हाफने लगा अपनी काली करतूत पर . .तो मैने आधे दर्जन इष्टदेवों का मन ही मन ध्यान किया, मजनू और फरहाद जो अपनी अपनी प्रियतमाओ के लिए जाने कितने जुल्म बर्दाश्त करके फना हो गये, के साथ-साथ हम लोग सीरियल की भागवन्ती का भी स्मरण किया, अत मे वेस्टइन्डीज और श्रीलका के द्वारा हाल ही मे लतियाये गये हिन्दुस्तानी क्रिकेटरो का, दो-दो शंकराचार्यो के बुजुर्ग चेले मौनी बाबाराव जी का भी स्मरण किया जिन्होने इस देश की गरीब जनता को बताया कि पेशगी नजराने की रकम एक करोड से कम लेने से खुद को बेइज्जती महसूस करनी चाहिये, आदमीयत और ईमान खुद ही खुद को बेईमान समझने लगते है। आखिर में याद किया तामिलनाडु की हस्ति-गामिनी का तो जैसे माथे के अन्दर ही अन्दर मगज का मोतिया बिन्द साफ हो गया। बचुवा की गल्ती नजर आई कि वह बिलावजे ही ज से शुरू होने वाले नाम का ख्वाहिशमद है। फिर अपनी गल्ती का भी एहसास हुआ कि इस बेचारे का नाम सुखराम, नरशेरराव या कि मोहहता जैसा क्यों नहीं रक्खा।

□

मजबूरी समझो भैया !

भगवान विष्णु को आज नारद मुनि से दिल्लगी करने का मन हुआ। उनके आते ही प्रश्न किया– 'इतना उदास क्यो दिख रहे हैं मुनि श्रेष्ठ । क्या राशन की दूकान पर तुम्हें शर्करा उपलब्ध नही हो सकी, या सिनमा का टिकट अथवा किसी अँगरेजी गुरुकुल में दाखिला नही मिला?' कुछ चिडचिडेपन मे बोले नारद–' बस बस बस विकारशून्य दयानिधि, मुझे मखौल का विषय न बनायें। . . भला मुझे शर्करा की क्या आवश्यकता ? जाने कितनी वाहियात बीमारियो की जननी होती है यह ! इसी कारण पृथ्वी पर आर्यावर्ती धनाढ्य इसके स्थान पर यूरिया का सेवन करने लगे हैं।..... ..मैं तो नमकीन सत्तू के स्वाद का गुलाम हूँ। इसकी पिन्डियॉ मुझे अति प्रिय हैं। देवराज इन्द्र की अप्सराओ को देख लेने के बाद दिगम्बरी भारतीय सुन्दरियां देखने का मन भी नही होता ...और कालेज या यूनीवर्सिटी मे दाखिले की जरूरत ही क्या ! आपने जगन्नियन्ता रूप मे मान्टेसरी की भी शिक्षा नहीं पायी तो आपका यह भक्त कालेज और यूनीवर्सिटी मे शिक्षा पाकर

आपको नीचा क्यो दिखाना चाहेगा ? मैं ज्योतिष सम्बन्धी अनुमान तो कर ही सकता हूँ, फिर गिनतियों और पहाडे के पहाड बिलावजे ही क्यो चढूँ !

विष्णु को अपने प्रश्न का उत्तर फिर भी नही मिला तो पुनः वही प्रश्न दोहराया-- 'तो चेहरे पर तीन बजने का क्या कारण हो सकता है ? टीवी सीरियलो की सुबदना कन्या पर मुग्ध तो नहीं हो गये जिससे मेरे रूप की याचना करने आए हो ?' नारद को उत्तर देना ही था। बोले- प्रभु ! जैसे आप अपने भक्तों के हित साधन के प्रति उत्सुक रहते हैं वैसे ही आपका यह मसखरा भक्त भी औरो की तरह परम स्वार्थी न होकर आपके हित की बात सोचा करता है। पिछली बार आप मुझसे उखड गये थे जिससे वाक् सकोच मे पडा हूँ। कृपया अन्यथा न लें मेरी बात का, क्योकि मै जानता हूँ कि इन्द्रपुत्र गुजराल भी दो-दो की एक साथ रक्षा नही कर पायेंगे। कहेगे कि श्वेतकेशी उस पाटलिपुत्र वासी गौराग की रक्षा करुँगा तो मेरी भी भैस पानी मे नहीं जायेगी ? आपकी रक्षा करने में क्या धरा है नारद जी नथुनों से सॉसे खींचते और वापस करते नर्सिंग राव खुद ही अपने कारनामों का प्रायश्चित करने मे तल्लीन है तो उन्ही से क्या उम्मीद की जा सकती है। बहरहाल, अपने आक्रोश को थपथपियाये रहें, मुझे अभयदान दे और बडे मनोयोग से सुनें मेरे सुझाव को।... .... .बोर हो जाते है, आप और माता लक्ष्मी निर्जन बैकुण्ठ धाम में अकेले बैठ-बैठे। यहॉ आपको न तो कोई अखबार पढने को मिलता है न कोई कैण्टीन ही दिखती है, बस बैठे-बैठे धुआ खाते और पीते रहते हो; वही मुँह से निसृत भी करते हो। मुझे भय है कि कहीं आप मृत्युलोक की पापूलर महामारियो की गिरफ्त मे न आ जायें- कोई होम्योपैथ भी नही है यहॉ पर, आपकी दवा-दरमत के लिए पृथ्वी के ही किसी शफाखाने की शरण लेनी पडेगी। वैसे भी ध्वनि प्रदूषण और अत्यधिक खामोशी प्राणी के लिए समान रूप से हानिकर है। यहाँ आपको सिर्फ टेलीविजन और मौनी टेलीफून का ही आराम है। टेलीविजन मे चौरासी लाख चैनल होना भी सुविधा ही कही जायेगी। लेकिन यही तो सब कुछ नहीं है जिन्दगी में।

'तो बोलो देवर्षि, क्या कर डालूं मै। तुम्हारी माते और बैकुण्ठ का परित्याग करने के अलावा कुछ भी कर सकता हूँ।' नारद के समक्ष सशर्त समर्पण किया विष्णु ने। हिचकिचाकर नारद बोले– 'आधी शर्त वापस ले लें प्रभु, क्योकि मातृश्री के त्यागने की बात कहने का दुस्साहस मैं कर नही पाऊँगा। एक बार भृगु की गुण्डागर्दी से कितना विक्षुब्ध हुई और उसके फलस्वरूप आपको कितने पापड बेलने पडे--सब मुझे पता है। मेरी तो प्रार्थना है कि दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन में भगवतदयाल की जगह साक्षात् नारायण और उनकी श्रीमती विमला के बजाय माता कमला के साथ-साथ निवास करो। उसमे रहने, खाने-पीने और सोने का बाकायदा आराम है। आपने यू०पी० का मधुवन देखा होगा, कर्नाटक का वृन्दावन गार्डेन भी, लेकिन यह मैं शर्त लगाकर कह सकता हूँ कि राष्ट्रपति भवन का मुग़लगार्डेन सपने मे भी न देखा होगा। परिस्तान की ही नहीं, देश-विदेश की तिलोत्तमायें भी उसकी स्वच्छ-शीतल वायु और सौन्दर्य का आनन्द लेने के लिये चक्कर काटा करतीं है। भवन के अन्दर तथा बाहर एक एक सेन्टीमीटर की दूरी पर नौकर ही नौकर दिखेगे। वहाँ कोई वायुमार्ग से आते है तो कोई एयरकण्डीशन्ड वाहनों से शायद ही कोई सायकिल से। असख्य शौचालय और मरमरी स्नानागार, बडे-बडे भोजकक्ष उसकी विशिष्टताये है। किसी भी आगन्तुक से मुबलिक तीन-तीन मिनट की मुलाकात, चाय-पानी और फिर आराम। प्रत्येक दिन यही क्रम ....यही क्रम। कुछ दिनो के लिए गरूड महराज को भी गैरेज मे मलहम पट्टी कराने का बाकायदा मौका मिल जायेगा। आपको पता नहीं, वाहन की पीरियाडिकल सर्विसिग बहुत जरूरी होती है।'

नारद की निर्गतिरोध बात पर विष्णु जी बहुत हँसे। हँसते हँसते गला हुसक गया तो लगातार खाँसी आने लगी। महालक्ष्मी ने एक गिलास ठण्डा दूध उन्हे थमाया जिसे वे शिव-शैली मे घुटक गये, तब कही उन्हे खाँसी से राहत महसूस हुई। आँखो से निसृत पानी और रूमाल से नासिका पोछकर वह शान्त हुए। बोले- तुम संभवत अनवगत हो इस बात से कि दो उपमहा ज्ञानी अर्थात विद्वान पुरूष उस भवन मे रहने के लिए पहले से ही सघर्षरत है।' बीच मे ही नारद ने अपना

मतव्य प्रकट किया। अपने विस्तृत ललाट पर दो सौ चौबीस छोटी-बड़ी रेखाऐ बनाकर बोले- 'सर्वशक्तिमान! अनारायन और अशेष की बात कर रहे है न ?

जो नारायण नहीं हैं न शेष हैं, तकरीबन अश्वेत है तो उन्हें भ्रमर सम्प्रदाय का मानना अनुचित नही। उनमें से किसी के दर्शन करके तो मुगल गार्डन के प्रसून तबिया जायेगे, अशेष के ताप से झुलस भी जायेगे। प्रकृति की भी अपेक्षा है कि इस बार राष्ट्राध्यक्ष कोई उसी के समान सुषमा सम्पन्न बने। आपको देखकर तो हर एक फूल चौगुने आकार का होकर स्वय को कृतकृत्य महसूस करेगा।

विष्णु ने मन की बात रख दी नारद के सामने-'भक्तवर, उनमे से एक वही है जिसने मेरे वक्ष पर लात से प्रहार करके गार्हस्थिक जीवन अस्त-व्यस्त कर दिया था जबकि दूसरे ने त्रेता मे मुझे सुरसरि पार कराया था। फिर भी यदि आतंक और विनयशीलता को नजरन्दाज भी कर दूँ तो सवाल यह है कि बैकुण्ठ और मेरी शेष शैय्या का क्या होगा ? किसी चाणक्य ने यदि स्वप्न में जाकर भी पाटलिपुत्र के सम्प्रति उद्दण्ड एव कदाचारी यदुवशी को बैकुण्ठ के आकर्षण एव मेरे प्रवासी होने की जानकारी दे दी, तो मेरा बैकुण्ठ ही नही हड़पेगा वह, यहाँ पर सत्तू और भूसा-सानी असुलभ होने के कारण सारा क्षीरसागर ही सुरक लेगा। उसके बच्चो की फौज क्षीर सागर में ही अपने नैत्यिक कार्य-कलाप सम्पन्न करेंगे। खखार और बलगम थूकेगे। गगा जल की सफाई के सारे ही अभियान असफल हुए तो क्षीर सागर का प्रदूषण-रहित होना असम्भव ही समझिये। यह फौज़ रातोदिन मेरी शेषशैय्या पर परेड और जॉगिग करेगी तो उसकी हालत ढाबे की चारपाई से भी बदतर हो जायगी।'

दो घूँट शीतलित दूध गटक कर फिर बोले विष्णु- 'मैने स्वय की काबिलियत को भी टटोला है। कई अर्हताऐ मेरे पास नहीं जिससे एक से एक तिकड़मी, पद-लक्षक एव अश्वेत लक्ष्मी के लोलुप अधिकांश राजनेताओ की आँख की किरकिरी बना रहूँगा। तब किसी न किसी सावैधानिक प्रक्रिया से वे राष्ट्रपति भवन से मेरी शेरवानी और चूडीदार पायजामा भी सडक पर फिकवा देगे। बैकुण्ठ-वासियों सहित

सारे ग्रहों पर मेरी थू-थू हो जायगी . . महालक्ष्मी की नजर मे भी मैं गिर जाऊँगा। बवाले, घोटाले, कत्ल, शीलभग और विवेकशून्यता का मैनेजमेण्ट कोर्स कर लेने के पश्चात ही मै अपनी जन्मभूमि यानीकि भारत जैसे देश का प्रथम नागरिक बनने के उपयुक्त हो सकूँगा। वर्तमान मे इस पद के दोनों ही दावेदार भी समयानुकूल क्वालीफाइड न होने के कारण शायद ही सफल हो सकें। उनमें झगडा झझट होगा या फिर विजयी उम्मीदवार हस्ताक्षर-पति बनकर ही अतत रिटायर हो जायेगा ' . . . . नारद ! मै किसी गोल्डेन मालिनी या बर्फी दीक्षित से तुम्हारी शादी करवा दूँगा, भ्रमण करते रहने के कष्ट से निवृत्ति के लिये टी०वी० टेलीफून और पेजर की व्यवस्था करा दूँगा लेकिन . ना बाबा . ना बाबा . राष्ट्रपति पद हथियाने के लिये मुझ पर दबाव न डालो। मुझे खुद ही बुनने दो अपने भविष्य की लुगी।

तू तो ब्रह्म

आज मैंने जीवन मे सफलता के कई नुस्खे राहुल को दिये। कहने लगा– 'बेटे यह कलियुग है, सतयुग और त्रेता नही जिनमे जीवन जलगत और वायुगत होता था, इसीलिए लोग काम कम करते और आपसी लडाई–झगडे ज्यादा। सभी मुख्यत तपस्वी गृहस्थ हुआ करते थे, औरतें त्रिया–चरित्र की विशेषज्ञ थीं, भाई–भाई राजपाठ के लिए लडते झगडते नही थे, नगे पांव और बिना कुरता-कोट पहने जंगलों मे चले जाते। द्वापर युग भी नही यह। कलियुग की इतनी मंहगाई मे प्रति भाई एक गाव मिल जाने से क्या बनता है। मिसाइलो और बमो का जमाना है, तलवार, मुगदर, तीर और गुलेल का नही, चौपहिये वाहनों और बहुपहिये टैकों का बाहुल्य है, घोडों, ऊँटो और हाथियों का नहीं। ऊँट बेचारा तो खासुलखास रेगिस्तानी हो गया जबकि घोडे और हाथी बेगानी शादियों में रातोदिन दीवाने दिखते है। अब खालिस दारू पी जाती है, दूध और दही नही। अब जगल इमारतो के इर्द–गिर्द रहते है। उनके इन्क्रोचमेण्ट से मुक्त जगहों पर अब फैक्ट्रिया या फिर फार्मिंग

के लिए खेत होते है; मुर्गी पालन और उत्पादन कार्य भी होता है। कुत्ते भी उत्पन्न होते है उस पर। इन्हे पिलवा नही, पपी कहते है। शानदार भविष्य वाले होते है, पैदा होते ही उनकी कीमत पाच हजार हो जाती है, फिर वे हुस्नाओ की गोदी मे गद्दी लगाकर बैठते है , सुस्सू और छिच्छी करते हैं। हुस्नाये अपना शिशु तक ऊपर नही बैठाती, कोई दूसरा पुरुष उन पर अपनी तर्जनी तक रखने को तरसे। पर वे पपी को अपनी कार पर शहर के बाजारो मे घुमाती या नदी के किनारे किनारे हवा खोरी कराती है। इस दौरान वह हुस्ना के कपोल कुडो का रस चाटा करता है, मक्खियों से उनकी रखवाली भी करता है और चेहरे पर धूप का असर नही होने देता। ये हुस्नाये कलियुग की सिद्धिया है, हमारी भौतिक उपलब्धिया है। इनके लिए अब बडे से बडे महापुरूष को धोखा धडी नही करनी पडती, देवताओ की तरह अपना रूप नही बदलना पडता। तेरे पास पैसा है तो वे स्वत चक्कर काटती है। ऐसा नही कि इनके पति परमेश्वर की माली हालत दुखियों जैसी हो। वे खुद दफ्तर जाने-आने की तनख्वाहे पाते है।, ऊपर से उसकी सौ गुना रकम नज़राने या शुकराने में। सुपरिणाम-स्वरूप वे अक्सर किसी दूसरे की रसोई मे भूख मिटाते है। अस्लियतन वे ऐशोराम की जिन्दगी जीते है। तो . इस युग मे जीना तभी सार्थक समझ तू जब किसी भी उस चीज के लिए तुझे तरसना या गिडगिडाना या किसी से चिरौरी विनती न करनी पडे। इस सिद्धि के लिए एक सीरप की यह शीशी तू रख ले; जब भी मन मे निराशा छाये, चारो ओर अधेरा ही अंधेरा दिखे, सफलता की रफ्तार तेरी चाल से सुस्त दिखे, इसी शीशी से चार बूँद अपनी जबान की नोक से दो सेंटीमीटर अन्दर टपका लिया कर।

.....तेरी भक्ति वन्दना से प्रसन्न निब्बू पावर हील तेरी मदद करेगी .. समय की प्रहरी घड़ियॉ तुझे ठीक ठीक समय बतायेंगी। अथ सीरपम् ।

(१) रोज बिना दातून-मंजन किये काच के गिलास मे काच की शीशी से कोई रगीन पेय गिलास की क्षमता का एक बटे पॉच हिस्सा लेकर मुह का कीचड घुटक लिया कर।

(२) पेड-पौधे न तो नेकर पहने न गाऊन तो तू भी इन दोनों ही कपड़ों के प्रति अपनी रूचि को त्याग– बिना बटन वाली कमीज पहन और छतरी के कपडे की पैन्ट, ऊँची हील वाले जूते... चप्पलों और सैंडिलों की अपेक्षा उत्तम रहेंगे, क्योंकि चप्पलें ओर सैंडिलें तो आयदिन किसी कुमारी कन्या या महिला को देखकर दायी ऑख का दॉया कोना दबाने से ही मजबूर होती रहती !

(३) परीक्षाओ में सामने किताब रख और किताब की बगल मे रामपुरी। कट्टे की करामात भी सीख ले। बसो और रेलो पर बिना टिकट चल, पसिन्जरों से मारपीट कर जिससे बस किसी दूसरी बस से या किसी बिल्डिंग से टकरा जाये, रेलगाडी हो तो इसके कुछ डिब्बे भी पटरी से उतर जाएं ......हर एक घटना मे खुरच लगने पर ही कम से कम दस हजार मुद्राओं का मिलना पक्का समझ, और घायल पसिन्जरों से मिलने वाली रकम मे कमीशन भी बांध ले। यह कमीशन ज़मीन ज़ायदाद, तोपताप या पशुओं के लिए खरीदी जाने वाली भूसा-खली याकि दवाओं की फर्जी खरीद से बेहतर है क्योंकि थोड़ा बहुत तुझे भी चोट लगनी ही है- तो फर्जीपन कैसा ?

(४) तेज़ बुद्धि वाला बालक अब प्रायवेट मुलाजिमत में आता है क्योंकि उस ससुरे को सरकारी नौकरी की नबाबी नागवार लगती है। लेकिन तू मेरे बुढ़ापे की बेहतरी की खातिर बडा सरकारी अहलकार बन। सरकारी मुलाज़िमत की नबाबी बेमिसाल होती है। महाभ्रष्ट बनने की यह सीढ़ी न पा सके तू, या यह चढाई कठिन लगे तो छोटी छोटी कारें और दुल्हन के इस्तेमाल के लिए उसके साथ मिले स्कूटर और हीरोहोंडा दुपहियों की दुआ तो है ही तेरे साथ। किसी भी सवारी पर चढले...... उसे चीविंगगम दिखाकर।

मैने जो बताया यह बातें..... 'युगधर्म शास्त्र' में लिखी मिलेगीं लेकिन अभी यह छपा नही। बुकर पुरस्कार से सम्मानित होने की संभावना वाली इस महान् पुस्तक की कम से कम एक अरब प्रतियॉ तो अपने ही मुल्क में खप जायेंगी

और इसकी चौदह गुनी ससार के बाकी मुल्को मे, क्योकि कई भाषाओ मे उसके अनुवाद भी तो होगे। इसके अदगाहन पर हिन्दी के कितने ही बाल-साहित्यकार तुकबन्दी करेगे, कितने ही नये कवि अष्टाबक्र कवितायें गढेगे, अकादमी सम्मान भी पायेगे और लक्षणग्रन्थों का अध्ययन किये हुये कितने ही बुजुर्ग साहित्यकार छद और सवैसा लिखकर अपना-अपना माथा पीटेगे। सारा ही लेखन समग्र रूप से खजुराहो सस्कृति का हो जायगा और यही असली साहित्य माना जायेगा। आम शब्दो में इसे हम प्रगतिशील साहित्य कहेगे। वस्तुत. समाज में जो कुछ हो रहा है—अच्छा या खराब, काला या सफेद, खुशबुआ या बदबुआ, पाठको को वही साहित्य के रूप मे परोसना उचित होगा। दोनो हाथ मे उगी हुई उगलियो की संख्या के बराबर अफसानानिगार इसे बोल्ड रॉयटिग अथवा यथार्थ बोधकारी साहित्य होना बताते हैं। इसीलिए कहता हूँ कि किसी डिटर्जेन्ट पाउडर की तरह पडना तू जिद्दी सफेदी के पीछे-सफेदी जो सतयुग की है, त्रेता और द्वापर की है क्योंकि शायद ये हमारे आधुनिकीकरण मे बाधक है। वर्ना तो डिफेक्टिव साडियॉ कौन खरीदेगा फिर . ...साडियॉ जिनकी अनाम उत्तमताओं का ध्यान से देखने पर भी पता नहीं चलता। तुझे अपना भविष्य बुनना है, मेरे आने वाले दिन सवारना है और देश का रगरूप दिन-ब-दिन निखारना और चटकीला बनाना है। ..तो बन जा तू भी राजकुमार !.... नहीं जानता तू स्वय को. ? . अरे तू इस युग का ब्रह्म है. पहचान ले स्वय को।

□

सुषमा सम्पन्नायें

कल से बडा दुखी दिख रहा था सुखी राम। कभी इस बात से दुखी रहता था कि उसे एक भी पुत्र नही, सिर्फ लडकियॉ ही लडकियॉ हैं ... तो उसकी पत्नी उसे डाटकर समझाती कि दो ही तो है .. . वह मॉ–बाप क्या करे जिनके चार चार, छे–छे कन्यायें होती है।

वास्तव में किसी पुरुष को पुत्र– प्राप्ति न होना चिन्ता का विषय होता ही है. . और कन्याये ही होने में उसके जीवन की तराजू ही असन्तुलित हो जाती है। इतना अच्छा है कि इन दिनो सरकारी मुलाजिमों को अर्थचिन्ता नही होती। उससे सम्बन्धित फिक्र सिर्फ यह रहती है कि रोजमर्रा थैलियां भर–भरकर लाई गई गड्डियों के रखरखाव के क्या तरीके अपनाये जाये। प्लाट खरीद लिया जाये तो उसके चोरी हो जाने का तो डर नही लेकिन कोई न कोई उस पर जबरिया कब्जा तो कर ही सकता है। फिरतो सिर का एक–एक बाल काफूर हो जाता

है– मुकदमें-बाजी में। न्यायकर्त्ता को खुश करने मे...... और वकील को अतत कुछ भी हाथ न लगने की दशा में कब्जा कर लेने वालो के हाथ मे पेशगी रखने की प्रक्रिया मे। जमीन–जायदाद खरीदने या पैसे को घर में गुप्त मंजूषा में रखने पर भी इन्द्रप्रस्थ में बैठा हुआ लुंगी–कमीज़ वाला छैला क्या नहीं देखता ? जुर्माने और जेल की दुनाली दिखाकर वह किसी भी श्रमवीर अर्थोपार्जक को सांप की पूछ पर लाकर पटक देता है। इस पटकनी से मन राना सागा हो जाता है। कहते है कि इस राजा की देह भर में भाले और तलवारो के घाव ही घाव थे लेकिन उसकी छोटी से छोटी शिराओं मे खून और फिटकरी दो और आठ के अनुपात मे होने के कारण आखिरी सास आने तक वह फुदकता रहा था। हम या आप उस जमाने मे होते तो सवेदनशीलतावश इसी मुगालते में होते कि बेहद दर्द से लडप–तलफ रहा है ये। क्या करता फिर बेचारा वह ? .किससे कहता कि दर्द के मारे मौत बार–बार दिखने लगती है। पहले ज़माने की औरतें तो पहले से ही कह देती थीं कि लडाई में जीत कर ही लौटना वरना सिर्फ गर्दन से ऊपर वाला हिस्सा ही स्वागत योग्य होगा।

उह, देखिये बिलावजे मैं भटक गया। हैदराबाद जा रहा था जैसलमेर पहुँच गया। समस्या तब होती है जब किसी की कन्याये अपने पिता के नाकनक्श की दिखें। मॉ के साचे वाली लडकियां ज्यादातर आकर्षक होंगी बशर्ते मॉ त्रिजटा की बहन या भतीजी न हो। कन्याये रूपवती हो तो समस्या का कोई न कोई हल निकल ही आता है। नारी और रूप एक ही म्यान मे रहना पसन्द करते है। शूर्पनखा अगर धीरज न खोती, गुस्से में अपने असली स्वरूप में न आ जाती–जैसे खूबसूरत रूप में वह आई थी, वैसी ही बनी बनी नाककान काटे जाने पर विलाप किया करती तो राम और लक्ष्मण को दुख ज़रूर होता और तब कटे हुये नाक और कान उनकी माया से चुटकी बजाते जुड जाते। हो सकता है कि सीता जी अपने मायके या बिहार मे किसी रिश्तेदार का पुत्र उसके लिए प्रस्तावित भी करती।... या पचवटी मे उसे सहेली के रूप में ही नियुक्त कर लेती।

लुब्बेलबाब यह कि सुन्दर कन्याये पिता के लिये जरा भी समस्या नही बशर्ते वह पिता अपनी सतान के लिये मार्गदर्शन करें। स्वयं को अपनी कन्या के लिए एक अनन्य आदर्श रूप मे प्रस्तुत करे। हूरे हिन्दुस्तान डायना हेडिंग, ऐश्वर्या और सुस्मिता को कौन भला पूछता–ज़्यादा से ज़्यादा हवाई जहाज़ पर वे दूसरो के बच्चो की नाक और छिच्छी साफ किया करती या अमरीका जाकर आसमान के भी सातवें आसमान पर हफ्ता भर के लिए घूमधाम आतीं लेकिन 'हूरे वर्ल्ड' न बन पाती अगर उनके पिता बचपन से ही उनके रख–रखाव, लालन पालन, उच्च किस्म की शिक्षा–दीक्षा दिलाकर उन्हे अखिल सृष्टि सुन्दरी बनने के निशाने की ओर प्रेरित न करते। अपने लखनऊ को ही ले लीजिये। 'गर्ल आफ दि इयर' की सेक्सी सज्ञा से विभूषित गुलगुली अविवाहिता महुआ रे ने साफ़–साफ़ लब्जो मे शहर के सौन्दर्य पारखियों, और अख़बार नवीसो को बताया कि उन्नीस सौ छियान्नबे के इस नायाब तोहफे मे खुशूशी किरदार उसके पिता हैं जिन्हे वह अपना आदर्श मानती है। चाहिये भी उसे अपने पिता का एहसानमद होना। आखिर उन्होने ही महुआ टाइटिल की एक खूबसूरत औलाद पैदा की, उसे निखारने, सजाने और सवारने तथा अग प्रत्यगो को आम आदमी की नज़र मे लाज़वाब बनाने मे उनकी तपस्या या साधना तथा परोपकारी चिन्तन दृष्टि किसी प्रकार से न्यून नही मानी जा सकती। लोकरजन के लिये अपने सीने पर पत्थर रक्खे बिना ही इन विशिष्ट दृष्टि वाले अभिभावाको ने अपनी अपनी संतान के मानस में ज्ञान का प्रकाश भरा कि इस माटी के तन के किसी भी अंग को प्रच्छन्न रखकर ईश्वर के प्रति गुस्ताख़ी नही करनी चाहिये। आखिर कौन सी मादा हंस अथवा मोर, पर्वतशिखा या सम्पूर्ण प्रकृति ने कुरता–पजामा पहन रक्खा है, बूंद भी आसमान से नगी ही चलती है, नगी ही गिरकर बिखर जाती है, मदिरा भी बोतल में नंगी ही बद रहती है . और खूबसूरत से खूबसूरत नागिन ने भी कब बनियानी पहनी है! ईश्वर ने जिसे जैसे भी उत्पन्न किया उसमें किसी प्रकार की तरमीन ग़ैरवाज़िब ही कही जायेगी। चाहे हूरे दुनियाये हो, चाहे सफेद मारकीन के थान वाले छविगृह की सुषमायें, सभी के भविष्य शिल्पी उनके अभिभावक, विशेषकर पिता ही होते है। आप कहेंगे कि छोटे पर्दे की विज्ञापन सुन्दरिया तो श्वेत वस्त्रावृता होती है,

कोई भी अग किसी को खोलकर दिखाने मे जैसे बड़ा परहेज हो उन्हे। उत्तर आसान है। देखिये यह सुन्दरियॉ धोबने होती है या खाने पकानेवालियॉ यानीकि मिसरानियॉ। ये सृष्टि सुन्दरियो की अपवाद है। ये जमाने के साथ आगे नही बढ़ते रहना चाहती तो हमे आपको इससे क्या हर्ज़।.. यह भी बता दूँ.. कि भारतीय उपज की तकरीबन सभी विश्वसुन्दरियो की यह ख़ामी होती है कि धीरे-धीरे वह भी दकियानूसी ख़याल की होने लगती हैं . तो ढकना शुरु कर देती है ढले हुये ह्वाइट गनमेटल मलाई और राबड़ी से निर्मित अपना सारा शरीर। कारण यह कि सठियाने के करीब पहुँचते-पहुँचते माताओ-पिताओ को तींगुर लगने लगता है तो वह अपनी संतान को आगे के जीवन के लिये दृष्टि प्रदान नहीं कर पाते।

'चन्द्रकाता' की तरह कलावतीत्व प्रदान करना नही चाहता मै बात को, इसलिए आख़िर मे यह बताकर ही अपनी तक़रीर के कण्ठ को अगूठो से दाबूगा कि किसे आप अनन्य सुन्दरी समझेगे। वे उर्वशियॉ तो इस कोटि मे पहले से ही है जो अंतर्राष्ट्रीय श्रम-संविदा की परिणति है, या जिनकी पूज्य माताओ ने सागर और महासागर की चौपाटियो मे उन्मत्त विचरण करते-करते दाभ का अतर्जल घुटका हो, प्रस्तर खरिल मे अण्डे, कच्चे प्याज और गिरी के गोले घिस घिसकर उसे दही और बिलायती अगूरी में समिश्रित करके रातों मे चार-चार चम्मच की मात्रा में चाटा हो। उनके अलावा भी किसी सुषमावती के निम्नलिखित लक्षण कठस्थ किये जा सकते है।

जिसकी-ऑखे निर्लज्ज लज्जा वाली हो, जिसकी नासिका देखने मात्र से मानव मन मे उत्तेजना का सबब बने, बोलते या हसते समय जिसके कपोलो पर लहरें उठे, दॉत दो सेटीमीटरी हो तो कहना ही क्या!

जिसके होठ अनन्नास के रस वाले स्वाद के हो, माथा मुर्गी के अंडे सा उभरा हो और केश ग्रीवा तक उतरे, कधो पर आकर ठहरे, पूरे तन का शील जो सिर्फ दो वस्त्र पट्टिकाओ से आवृत कर सके, किसी अजगर के अण्डे

की तरह गोलाकर हो जिसका वक्ष, कण्ठ के नीचे की हंसली हड्डी यानीकि जूही चावलियन होने की वजह से साफ़ दिखती हो।.......कटि सीने से कुछ सत्रह हो, पेट बारह, जिसकी मुसकानमयी नाभि की उत्तमता से कोई राजनेता, अभिनेता या अधिकारी उन्मत्त हो जाये ....अजायब घर के गैडे, जेबरा, जिराफ़ याकि सारे ही जन्तु आत्मविस्मृत हो जाये; सुन्दरी की चाल मे भूचाल दिखे, लौटनवा चक्कर खाकर भूलुण्ठित हो जाय . किसनवा का गुड लाने के लिए बनिया के खोखे तक भी पहुचना कठिन हो जाय. . पच्चीस साल पहले सेवानिवृत्त हुये शास्त्री जी भी अपनी खासी के सीरप का नाम भूल जायें..... ..और इन्द्र का जीवन जी रहे विश्व के असख्य प्राणी अपने अपने घरो से पक्के गोले तक आ जायें।.. पाठको की जिज्ञासा शान्त करने का संक्षिप्त प्रयास मात्र है यह विवरण जिसमे यह प्रतिबन्ध भी जोडना चाहूंगा कि बहनें, श्रद्धा की पात्र लब्धप्रतिष्ठ मातायें और देविया. .. सुषमा सम्पन्नाओं की कोटि में आने के लिये अर्ह नही। वे भी इस श्रेणी मे नही आयेंगी जो तमसो मॉ ज्योतिर्ममय, असतो मॉं सद् गमय, पति परमेश्वर एवं वसुधैव कुटुम्बकम् जैसे जीर्ण शीर्ण पुरातन विचारधारा की पक्षधर हैं।

□

अधिकारी-वर्ष फल

सामान्य संभावनायें

इस देश में प्रजातांत्रिक प्रणाली अभी अपनी किसी करवट नहीं बैठी। अतः इसके बैठते--बैठते यूं धक्के लगेंगे कि उसकी पीठ पर बैठे हुए अफसर भरभराकर नाक के बल नीचे गिरेंगे लेकिन जो अपनी कुर्सी को धन दारू और दारा की फेवीकोल से पकड़े हुये होंगे, अपना तन और अपने सारे ही संलग्नक अपने बॉस और मंत्री की तर्जनी के नाखून से बॉधे होंगे उन्ही के लिए प्रबल संभावना बनती है कि वे सुरक्षित और निर्बाध बने रहेंगे। हालाकि राहु-केतु और शनि के संयुक्त मोर्चे का अधिकारियों को समर्थन मिलेगा तथा वे सूर्य और चन्द्र का विरोध करने के लिये हाथ मिला चुके हैं, मगल और शुक्र भी मोर्चे मे शरीक हो चुके हैं तथापि बृहस्पति और बुध द्वारा सूर्य और चन्द्रमा को नैतिक समर्थन अपने-अपने स्तर पर देने से मोर्चा अपने अफसरों की कोई खास मदद नही कर पायेगा। इसका मुख्य कारण यह भी है कि मोर्चा का ध्यान वालीबुड की श्वेतमुखी कोमलकायावालियो और विश्व

एव अखिल सृष्टि सुन्दरियो के नैकट्य के लिये अपेक्षाकृत अधिक उत्सुक है। उनक प्रयास भी है कि वे उनके दलो मे शामिल हो जाये तो सयुक्त मोर्चा कोई भी मुकाबिल. जीत सकेगा। यह स्थिति मात्र असरकारी सरकारी अफसरो से सम्बन्धित है। कुल मिलाकर सभी राशि के जातको को मृत्यु से निर्भयता प्राप्त होगी क्योंकि मृत्यु अधिकाशत. चूजो यानीकि बालक-बालिकाओ को ही एक डाक्टरी नुस्खे के तहत ग्रहण करेगी या कन्याकुमारी से आगे समुद्र पार कही अपना उदरपोषण करेगी। डाक्टर ने उसे बताया है कि सरकारी अफसरो के उदर विकारग्रस्त होने के कारण उनका मांस तथा रक्त उसे हेपाटाइटिस बी का विषय बना सकता है...अत वह भोजन में अल्पवयी प्राणियों अथवा अ-अफसर जीवात्माये अपेक्षाकृत ग्राह्य समझे।

अथ विभिन्न राशि के सरकारी अफसरों का वर्ष फल

मेष-- मार्च ९६ तक का समय मकान या विधवाओं एवं वृद्धजनों की सम्पत्ति पर जबरन कब्जा कर लेने के लिए उत्तम है। थाने की ओर से कुछ उलझनें अवश्य आयेगी लेकिन वे स्वत निराकृत होती रहेगी। गृह विभाग को पहले से ही पोटना पडेगा। अपने विभागीय किसी एक अधिकारी का काम बनाने के एवज़ में उसी से कह देना है कि अस्सी हजार या लाख की जो भी रकम लगे--वह तैयार रक्खे और इशारा पाते ही हाजिर कर दे।

वृष-- विभाग के मुखिया/मुखिया के मुखिया की संतान की शादी मे तन और धन समर्पित करने तथा जरुरत पड़े तो जीवन का भी बलिदान कर देने की खातिर कृत सकल्प रहना होगा। जीवन बचेगा लेकिन काफी दवादरमत के बाद। वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी की बीबी की विकलांगता अथवा बीमारी का परहेज किये बिना उसे जितना तन्मयता से शहर की बाजारे घुमाओगे--मुअत्तिली या छटनी की आशका खत्म होगी। हथकडी पडने की नौबत आने पर वही वरिष्ठ अधिकारी काम आयेगा। बृहस्पति की अर्चना-वन्दना करे। वह जातक से प्रसन्न होकर संयुक्त मोर्चे वाले ग्रहो का अधिक विरोध नही करेगा।

मिथुन— अर्थभूतों द्वारा धूमधाम से आयोजित समारोह मे किसी ठंढे मुल्क की कामिनी से हार्दिक मिलन सभव है किन्तु उसके बाद वर्तमान पद से च्युत अवश्य हो जाने का प्रबल दुर्योग है। इस राशि वालो के इससे पूर्व के ऐसे आयोजन भी ताजे हो उठेंगे। अपनी धर्मपत्नी का विश्वास बनाये रखना जरूरी है। हानि, अनिद्रा, चिन्ता भय तथा अनेकानेक आशंकाये मस्तिष्क मे हथौडे चलायेंगी।

कर्क— नियुक्तियो की मनचाही सूची जिसमे उम्मीदवारो के फेके टुकडे खाये गये है, प्रकाशित होने से पूर्व ही सूर्य के मुखिया हो जाने से लटक जायगी, अतत रद्द भी हो जायगी। दरोगा के तलवे चाटने पडेगे, न्यायालय मे जमानत के लिए चिरौरी करनी होगी। उपायस्वरूप रबड के चप्पल हाथो मे और पावो मे पोलीथीन पन्नी के मूजे पहनना श्रेयष्कर होगा। इस बीच चन्द्रमा के प्रभाव से अलपटें श्वेताश्वेत दिखेंगी। इसके तनाव से मुक्ति हेतु प्रायवेट एयर लाइन एजेंसियों मे लगाये गये धन के व्यामोह का परित्याग करना होगा। ऐसा न करने पर गोपुत्र की त्वचा के किसी उत्पाद से शरीर पर विशेषकर ललाट और कपोलो .. तथा कधो पर चोटे आने का प्रबल एव अमिट दुर्योग है।

सिंह— गला फाडकर बोलना अश्रेयष्कर होगा। मधुमिश्रित वाणी से बडे-बडे शहरो मे फर्जी नामों से ली गई अथवा बनवाई गई इमारतो के बारे में अस्लियत जानने वाले भी शान्त रहेंगे। महाभ्रष्ट की श्रेणी मे आने की खातिर भी लिपिक वर्ग को विश्वास में रखना होगा। अपने रहस्यो की पूर्व जानकारी वाले लिपिक को सेवानिवृत्ति के बाद भी शासन-प्रशासन की सेवा करते रहने का अवसर देने से फायदा होगा। इससे कई तूफान उठेंगे ही नहीं। पत्नी तथा घर की अन्य महिलाये समय मुख्यतः पूजन-अर्चन तथा फूलों की अल्पनाये बनाने मे व्यतीत करेंगी। इससे कोई भी तूफान हल्के पड जायेगे।

तुला— हानि-लाभ बराबर रहेगे। द्वितीय का पलडा कुछ जिन्दा रहे तो उत्तम है। छोटी उ की मात्रा को बडा करके बोलना ठीक रहेगा। उदाहरणार्थ तू ला तू ला

तू'ला करता रह। इससे अपार काली सम्पत्ति अर्जित करके अगली वी.डी.आई एस.के तहत उसे सफ़ेद कराना होगा। इस बीच काग़ज वाली लक्ष्मी को बटोरना नासमझी होगी क्योकि पूरे साल की बेहद सर्दी और नमी से वह फगस से प्रभावित हो सकती है। मन सतत् रूप से किसी अज्ञात कारण से भयग्रस्त रहेगा।

कन्या— मीन राशि वालों की तरह ही तुम आदर्शो से बधे रहोगे जिससे पूरी जिन्दगी पान सिगरेट का डौल भले ही हो जाय,विपुल धनादि की गुंजाइश नहीं। कुण्डलिनी चक्र जागृत हो जाने के कारण तुम्हे प्यास तो लगेगी ...भूख नही। इससे उदर सकुचित हो जायेगा, आते भी सिकुड जायेगी और दूसरे अग भी। खून की कमी रहेगी। किसी को बिना सूचित किये ही सितारों की दुनिया में पहुंच जायेगे। उपायस्वरूप मगलवार के दिन किसी शीर्ष हिन्दी फिल्म अभिनेत्रीशुदा कलेण्डर अपनी तकिया के ठीक सामने की दीवार पर कुकरेल नाले का प्रवाहमान जल छिडककर टॉगे। निकल आयेगा कोई न कोई समाधान।

मकर— विशेषकर अज्ञात महाभ्रष्टो को किसी छूत की बीमारी के कारण शरीर के अस्वीकृत जल त्याग मे परेशानी का अनुभव, भूख भी कम लगेगी। दफ़्तर कम जायेगे जिससे आय प्रभावित होगी। मत्री दूसरा प्रमुख नियुक्त कर लेगा। आर्थिक तगी का सामना करना होगा। पत्नी को सतुष्ट रखने के लिये पूरनचन्द्र फैक्ट्री की सस्ती साडियाँ खरीदकर बढिया पैकिंग में उपलब्ध कराना होगा। पानी से जिन्दा जोक निकालकर नीबू के रस मे जीरे के साथ एक सौ एक बार डाले, हर चौबीस घटे बाद उसे भैसाकुण्ड में उपलब्ध जल से प्रक्षालित करें. ...... फिर सुखवाकर पत्थर के खरिल मे गर्दभ के सूखे कान के साथ रगडकर देशी दारू मे मिलाकर पी जायें। ईश्वर अच्छे दिन लौटायेगा। पत्नी की घाट घाट के पानी की प्यास मे कमी आयेगी।

वृश्चिक— मुअत्तिली की आशंका। कफ सीरप और पुस्तकालयो के लिए पुस्तको की खरीद में गुप्त रूप से लिया गया धन वापस भी करना पडेगा। सामाजिक—

अपयश अवश्य–भावी। गृहिणी के दो लगामे लगाये– एक मुह से-एक गर्दन से। आवास के प्रत्येक कमरे में मंहगे टीवी न रक्खें। अश्वेत लक्ष्मी को फोम के गद्दो के गर्भ में डाल दें। विदेश मे रह रहे मित्र से मिलने के लिए सपत्नीक जायें। इससे अश्वेत लक्ष्मी की अपच शान्त होगी, कलोरियॉ कम हो जाने से दो महीने निर्द्वन्द्व होकर सोयेंगे। उसके बाद अवैध रिश्तेदारो के मशविरे का पालन करे।

कुभ– अपने लॉन में खुद ही झाडू लगाना पडेगा। आम सडक पर भी ऐसा करने की नौबत आ सकती है, वीडियो कैमरा की देखरेख में। दफ्तर के एक काले रग और आर.एस.एस. दातों वाले बाबू के सानिध्य से अल्पकल्याण संभव है। किन्तु बाद मे उसकी लडकी के विवाह का सारा खर्च बर्दाश्त करना पडेगा। उसके दामाद को नौकरी भी दिलानी होगी। सारे मामले सेवानिवृत्ति से एक माह पूर्व उद्घाटित होगे। इस बीच विग लगाकर उसमें पीत धातु के छल्ले लगवाओ जो किसी को दिखाई न दें। कमर से नीचे के अंतर्वस्त्र में भी इसी धातु के तमगे लगाओ। सन्देह तक किसी को नहीं होगा कि तुम कुबेर के रिश्तेदार हो।

धनु– मत्री को सिल्केन सूटलेन्थ का गुप्तदान करें, बॉस को देश की राजधानी की विशिष्टताओं का दर्शन लाभ करायें। शान से शा से शुरू और न से समाप्य नाम के फिल्म अभिनेता के साथ फोटो भी खिचवायेगे। सुरा-सुन्दरी और सम्पत्ति से उदर कुंभ सदैव उफनाया रहेगा। कोई भी घपला मृत्यु से पूर्व प्रकाशित नही होगा।

मीन– किसी ताम्रवर्णी को काली टाई का दान करने से साढेसाती का प्रभाव निराकृत होगा। फोटो पहले बनाकर फिर उसी पर आधारित कविताओ की किताब से आय होगी। रचनाओ की चोरी के इल्जाम से बचने के लिए अंगूठे में हथवाल के अंकुश का छल्ला पहनना लाभ प्रद होगा। अर्द्धांगिनी अपने कार्य–व्यवसाय से, सम्बन्धित व्यक्तियों को पाशबद्ध कर लेगी जिससे कि वे तुम्हें राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत करा सके। गौरांग हैं तो किसी ताम्रवर्णी से, अश्वेत हैं तो रजतबदना से

प्रणय सम्बन्ध स्थापित करे। पदच्युत नही होगे।

सभी राशि के भ्रष्टाधिकारियों को एक विशेष सलाह

सारी शासकीय घपलेबाजियाँ तथा पारिवारिक कार्यकलाप जनहित से जुड़े होने आवश्यक हैं। दावतो और गुप्त बैठको में कच्चे टिमाटर, कच्चा प्याज मूली और पालक की पत्तिया खाये, प्रत्येक पेय असमिश्रित ग्रहण करे, पत्नी या नौकर की बनाई बिना घी लगी चपाती खाये, दही मे मछली का पाउडर मिलाकर ग्रहण करने से आत्मशुद्धि होगी, ज्यादातर घर से बाहर समय बिताने पर तो आत्मदर्शन भी हो सकेगा। खल्वाट अधिकारी विग लगवाये तो उनके पौरुष मे अभिवृद्धि निश्चित है। ध्यान रहे कि सभी अधिकारी ऐसे राष्ट्र की एक पीढ़ी हैं जो संसार में सबसे अच्छा है। इसमे जरूरत पड़ने पर व थोड़ा भी लालची होने पर बीफकेसों रकम एक--एक दिन मे अर्जित की जा सकती है, जानवरों का चारा भी उदर पोषण के लिए सुलभ हो सकता है, इनामी अपराधी होने के बावजूद आसानी से राजनीतिज्ञ बना जा सकता है, सरकारी गाडियो का बीबी की मार्केटिग के लिए, घर बनवाने के समय दूकान से सीमेट ढोने के लिए इस्तेमाल हो सकता है--अत. जरूरी है कि दकियानूस परीक्षित को शिकश्त का स्वाद देने वाले अपने कलियुग राजा की मान्यताओ तथा निर्देशो का यूं अनुपालन करे कि आज की स्वस्थ परम्परायें घूमकर सतयुग मे ही छुछुवाये, द्वापर और त्रेता मे भी। इस प्रकार अपनी महान् युग संस्कृति को निरंतरता भी दे सकते हो, उसे हवा मे झूमते तरू की तरह काटकर गिरा भी सकते हो।. .चाहे बनाओ अपना इतिहास चाहे हमेशा हमेशा के लिए दफ्न करो। स्मरण रहे कि पत्नी या पति परिवर्तित किया जा सकता है, पायरिया हो जाने पर दूसरी बत्तीसी भी लगवाई जा सकती है किन्तु सम्मान्य भ्रष्ट संस्कृति और जीवन शैली के विकास में भागीदारी न करके प्रत्येक जन्म में खनखजूर की छाया से नही बचा जा सकता। अत: दुराचार, व्यभिचार और भ्रष्टाचार के सुलभ नस्कार सभी को सन्मार्ग दिखावे और सात्विक प्रवृत्तियों की मिलावट से सबकी क्षा करे। □

न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्

देश के अब तक तकरीबन पौना दर्जन राष्ट्रपतियो मे वर्तमान मुखिया ने पहली बार लोक सभा चुनावों मे सामान्य नागरिक की तरह कतार मे खडे होकर अपना मतदान किया। इस बात का गवाह वीडियो कैमरा है जो मतदान, शादियॉ, मुण्डन तथा भॉति-भॉति के समारोहो के अलावा नेताओं की कुर्सी दौड और मारपीट का भी चश्मदीद साक्षी होता है। दिमाग़ की परेशानी यह है कि आखिर इन्होने किसे वोट दिया होगा। मुखिया जी भले किसी को न बतावे लेकिन चुनाव आयोग तो जान लेगा और उससे भी पहले दफ्तर के चपरासी के सज्ञान मे आ चुकी होगी यह गुप्त बात। चपरासी अर्थात् पोलिग अफसर ने मुखिया जी के दस्तखत भी तो ले लिये थे। जो दो दिन के लिये अधिकारी बना– मतदान अधिकारी तो बात गोपनीय कहॉ रही क्योकि उस नम्बर और ठप्पे के मतपत्र को कुछ समय के लिए आक्सीजन दी ही जायगी। आयोग के आयुक्तो या किसी मतदान अधिकारी या गणना अधिकारी ने तो लिखकर कसम खाई नहीं कि वह किसी

को नही बतायेंगे कि मुखियाजी को किस नम्बर का मतपत्र मिला और उन्होने रबड के मुडे तीरो का ठप्पा किस निशान पर लगाया। मेरा बचुवा भी इस इलेक्शन में अधिकारी बना-- गिनती अफसर। मतदान के दिन बोला था-- पूज्य पिताश्री महोदय, अपने मतपत्र का नम्बर सिर्फ बता देना मुझे और मैं बता दूँगा कि आपने किसे विजय दिलाने का प्रयास किया। बोला मैं-- अरे चमड़े का सिक्का एक दिन के लिये चलाने वाले झाडफन्नूस! अभी से मैं बताये देता हूँ कि मैं अच्छी सरकार बनवाने की गरज से ईमानदार उम्मीदवार को ही वोट दूँगा।' तो प्रतिक्रियात्मक अनुमान पहले ही सुना दिया उसने-- पिताजी जान गया मैं। आपका मत उस पार्टी के कन्डीडेट को मिलेगा जिसकी प्रचारक किसी कुमारी महिला से भिन्न महिला होगी। उसका पूर्वानुमान ठीक था क्योकि मैंने देश के हाथ की रेखाओं को कई बार साबुन की बट्टी से धो-धोकर ऐसा पढ रक्खा था। मतगणना से लौटकर उसने अपने घोषित पुर्वानुमान को कन्फर्म भी कर दिया था। ग्यारहवीं लोक सभा वाले इलेक्शन में भी वही बात हुई थी। अब आप भली-भाँति समझ गये होंगे कि महामहिम हिज एकसे लेन्जी मुखिया ने किसको वोट दिया होगा।

क्यों ?

उत्तर स्पष्ट है। कोई कोई पार्टियां होती हैं जिन्हे आम आदमी और स्कूली बच्चों को देश कें इतिहास की मानिन्द समझना चाहिये। अनुभवी पार्टी के उम्मीदवार को मैं भी इसलिये प्राथमिकता देता हूँ क्योंकि वह सस्कारी होता है। पैतृक सस्कार भी उसे होते हैं। गर्भ से ही उसे पता होता है कि कैसे देश का शासन चलाया जाना चाहिये, नज़राना शुकराना वग़ैरह वग़ैरह ग्रहण करने के लिये किस तमीज की दरकार होती है, पूरे कार्यकाल मे खासकर अगले इलेक्शन से पहले अपनी फाइलों का काम किस सलीके और किस 'माइनस रेडटेपिस्म' की भावना से याकि जनकल्याण की नीयत से निपटाया जाता है। ऐसी पार्टी के रहनुमाओं को बैक खाते कहाँ और कैसे खोलने का भी सऊर होता है, इन्हें तदूर पर सामिश भोजन पकाने की प्रक्रिया का भी समुचित ज्ञान होता है। जानते है वे कि किसी अल्पमत सरकार को खंभा बनकर कैसे रोके रह सकते है और कैसे धराशायी कर सकते हैं। इसी पार्टी मे सिद्धान्त और कट्टर विचारधारा और कुर्सी से चिपकने वाले दरियाव

दिल नेता है जो अपनी माँ के भी विरोधी हैं क्योंकि उनकी असली माँ तो विभिन्न भाषाओं, रंगरूप, सम्प्रदायों और विचारधाराओ से बनी देश माँ है। इस माँ के पूतो मे कितने ही काम प्रभाकर है जो सच और सट्टेबाजी की लेटेस्ट परिभाषा से भी अपरिचित है। सफ़ेद को सफ़ेद और काले को काला वह पचास साल पहले के नज़रिये के मुताबिक कहते हैं।... .. ऐसी बहुत कम पार्टियाँ होती है जिनके मेम्बरान ख़ुद ही आग लगाकर दौडो-दौडो चिल्लाते और आगजनी करने वाले की हुलिया भी पूछते हों, आत्मवेदनावश घटना की भर्त्सना भी करते हो। चुनान्चे मैं तो आश्वस्त हूँ इस बात से कि मैं सौ फीसदी उचित निशान पर ही ठप्पा ठोकता हूँ। कह नही सकता कि माननीय विद्वान मुखिया का इस बारे में क्या दृष्टिकोण रहा। बहरहाल जिसकी भी सरकार बनेगी वह पार्टी चुनावी अभिलेख निकलवाकर जानना चाहेगी जरूर .. कि मुखिया अपने खेमे का है या विरोधी के. .. और आयन्दा किसी बिल पर दस्तखत न करके उसे लौटा देने की दशा में मुखिया का मतपत्र ही उससे मधुमक्खी की तरह लिपटेगा।... . इसलिए मेरी तो धारणा यही है कि वर्तमान नम्बर एक ने एक बार फिर नया इतिहास रचा तो है, लेकिन उनके कुर्सीय पूर्वज भी कम विद्वान नहीं थे, दार्शनिक थे, एल एल डी और पी एच.डी थे। इतिहास न रचने मे उनका कुछ सोच तो रहा ही होगा। लेखनी के लिये इस कारण मौन व्रत अधिक अपेक्षित है। अत ॐ निब्बू पावर चक्रम....... ॐ शाति. शातिः !. न ब्रूयात्......न ब्रूयात्. .....मौनं श्रेयष्कर।

□

अचरज की बातें

हमे और आपको इस बात का गौरव हासिल है कि हम एक महान् देश के बाशिन्दे है। परमेश्वर द्वारा बरसाई गई आत्मायें किसी भी क्षण कई खरब की तादाद मे होती है। केन्द्रीय वितरण केन्द्र से छिटककर जाने कितने प्राणी अफ्रीका की जमीन पर गिरते है तो वे 'ब्लैक्स' कहलाते है, ठण्डे मुल्कों मे गिरकर वे योरोपियन की सज्ञा पाते है, जल्दबाजी मे बनाये जाने के कारण जाने कितने प्राणियो की नाकनक्श अज़ीबोगरीब होती है। प्रत्येक अग बौनीकृत होते है। भगवान वामन के वशज समझिये उन्हे, लेकिन जो खेप हिमालय पर्वत श्रृखंला, गुजरात, पश्चिम बंगाल और कन्याकुमारी से चिहिन्त धरती पर रूक जाती है उसके कहने ही क्या ! यहाँ वह साधना करे तो अपने डिस्पेचर अर्थात् परमेश्वर के दर्शन कर सकता है, दूसरे देशो मे यह सुविधा किसी को मयस्सर नही क्योकि परमेश्वर ने उनकी जमींदारी अपने प्रतिनिधियो और अपनी मडली के कितने ही लोगो में तकसीम कर रक्खी है।

प्रश्न यह कि हिन्दुस्तान मे ही क्यो दबिश बनाये रखता है वह। कई वजूहात है इस बात के। यहॉ उसे अपने तीर गुलेल और चक्र चलाने की अच्छी रिहर्सल हो जाती है। अपनी तकनीकी खामियो का भी एहसास हो जाता है। यहॉ के चतुर आदमियों की वाहियातपना झेलकर वह इस काबिल बन जाता या कहिये कि यूँ क्वालीफाइड हो जाता है कि दुनिया की किसी भी कौम का बखूबी मुकाबिला कर सके। आज आये यदि वह हमारे हिन्दुस्तान मे तो उसे दूध दही और मट्ठा, फल और जडी बूटिया खाने पीने की पहली जैसी सहूलियत तो नहीं रहेगी ताहम् वेज और नॉनवेज या कहिये निरामिश और सामिश व्यजनो की कमी नही, चाहे वह तो मिस्सी, ज्वार या बाजरे की रोटी-चटनी के अलावा, अखुयेदार मूग, चने, मसूर, बिना क्रीम के दूध और नमकहीन एव मधुरिमा विहीन भक्षामक्ष की भी कमी नही। कम अचरज की है यह बात !

अरे यहॉ का आदमी सुस्वाद भोजन के लिये ही जीता है, पापी पेट के लिए ही लोहे की चूडियां पहन कर जेल जाता है, पशुचारा का भोग लगाता है, और शुगर फ्री यूरिया फांकता है। इस देश का खाने पीने वाला आदमी ही हवाई जहाज से उडता है, कार से बैठे-बैठे चलता है। वही गगा सागर जाता है और मानसरोवर मे कपडे धोता और नहाता है। गलत है यह धारणा तो आपही बाताइये कि कौन सा ईमानदार और तन मन से साफ सुथरा आदमी देश के सारे ही तीरथ घूमा ?. .शिमला, श्रीनगर, मंसूरी और ऊटी, कोदई कैनाल और नैनीताल की पर्वत चोटियॉं क्रो चूमा?

यहॉ के बहादुर राजे महाराजे अपने आत्म सम्मान के लिए आपस मे एक टुकड़ा जमीन के लिए जरूर लड़े, लेकिन नारी का इस्तेमाल मिल बांटकर करे। सरकारी सर्वेश्वर और सोशलवर्कर दोनों ही एक से एक बढकर होते है। यहा के फालतू खिलाडी जूता-विशेषज्ञ होते हैं- जानते है वे कि इस देश के जूते भी सास लेते है, वेन्टीलेटेड होने की वजह से वे पायो की उंगलियो मे खुजखुजी नही होने देते। पत्नियो को पता होता है कि पति की धब्बेदार कमीज को किस तकनीक

से चमकाया जा सकता है, पति के मुह की बदबू को किस दत-मंजन से भगाय जा सकता है। भगवत्प्राप्ति हेतु आत्महत्या करने के नवधा तरीको से भी परिचित है वे। आपही बताइये–कम अचरज की बात है यह !

इस देश के आसफुद्दौले एक खंभा तक नहीं खडा कर पाये, लेकिन इसकी सरकारी ढ़िबरी चुटकी बजाते ही महल बना लेती है, विश्वकर्मा की फ्री सिर्विस ले लेती है, कितने ही इन्द्र उसे पेश करते है अपना पुष्पक, चढ़ा देते हैं उसके चरणो पर अपना सर्वस्व।

ताज्जुब भरी इन ढेर सारी बातों से पहले तो मुझे बडा ही ताज्जुब हुआ तो तुलसी दास रचित पुस्तक हाथ मे लेकर जटा शंकर मुझसे रूबरू हुआ। बोला- आदरणीय पिताश्री। अमृत समुद्र से कब निकला ?

मैने कहा– 'त्रेता से पहले, कभी सतयुग मे .... या उससे भी पहले !'

कितना था वह ?

ज्यादा से ज्यादा मिल्टन साइज वाले घडे भर।

उसे कितने लोगों ने पिया ?

यही सिरफ़ एक दैत्य ने......... वर्ना सारे ही देवताओ ने।

पिताश्री ! पोलियो ड्राप्स की तरह नहीं पिलाया गया था वह, हथेली को कपनुमा बनाकर पिलाया गया था सभी को, न मालूम कितने लिटर जाया भी हुआ वह, हजारो हजार साल सूखा भी नहीं वह, रात्रि भोजन से पहले कितने ही देवता दूध में मिलाकर उसका सेवन भी करते रहे हैं।

'तो– कहना क्या चाहता है तू ?' मैने गुस्सा भरी आंखों के सहारे प्रश्न किया।

बोला वह– कितने ही हजार गैलन फिर भी स्टोर में धरा रहा, उसका इस्तेमाल बानर और भालुओ को लडाई मे फिर से जिन्दा करने मे हुआ।

जटा की बात सुनकर तब मेरे मगज को महीनों से मंडराते प्रश्न का उत्तर मिला– यही कि जांघ मे उगे फुटके जैसे सीलोन में सालों से सैकडो हजार विभीषणी जवान और मेघनाथ के पोते-दरपोते मौत की नीद सुलाये जा रहे है आखिर वहां हाई कमिश्नरियों और दफ्तर के कर्मचारियो के अलावा बचा ही कौन होगा अब तक, और यदि वहा की आबादी मौत के आंकडो से सन्तुलन बनाये है तो किसी का भी यह सोचना लाजिमी है कि राम-रावण महासमर में मारे गये चुनिंदा भालू और बलवान बन्दरो मे अमृत जैसा कोई भिन्न घोल तैयार करके उनकी नाकों और कानों मे देवराज इन्द्र के मेडिकल अफसरो और नर्सो ने टपकाया होगा। मैं चार-पॉच क्षणों तक आह्लाद और अचरज मे झूमता रहा जटा शकर को देख-देखकर! एहसान प्रदर्शित करता रहा उसके प्रति मानस का जग लगा ताला खोल देने के लिए .. .. क्योकि समझ में आ गई यह बात कि गरीब तबके वाला राष्ट्र होने के बावजूद कैसे हिन्दुस्तान अपने पडोसियो के बुरे समय में उनकी मदद करता है, बावजूद इसके कि हम बाशिन्दे खुद भी गटकते रहते हैं लगतार . अपना वाटर आफ इण्डिया !

मेरा देश महान भारत देश महान!

क्यो ?

क्योकि इसकी तीन दिशाओं मे चलने फिरने के लिए जमीन नही, समुद्र भरा है .. पानी ही पानी रहता है अकखा साल।.. .और इसके एक ओर यानीकि ,खोपडी और पीठ पर बडे बडे पहाड लदे हैं, खेती लायक जमीन पर बिलावजे पेड-पौधे, झरने और नदिया काबिज है, जिससे सायकिल चलाना भी बड़ा ही मुश्किल है वहॉ, और अगर स्कूटर या कार का हैंडिल फेल हो गया तो वे सैकडो फुट नीचे गिरने पर मरम्मत के काबिल भी नहीं रहते। उन पर सवार लोग टूट-फाटकर बह जाते हैं। इससे नुकसान तो है ही, फायदे भी कम नही। उनके क्रियाकर्म में लकडी की बचत होती है, तो जाने कितने वृक्षो को अतिरिक्त जीवन मिलता है, पर्यावरण विलम्ब से असन्तुलित हो पाता है। मृतकों की जमीन-जायदाद पर बहनोई

और दामादो को कब्जा मिल जाने से उनके दिन सुधर जाते है। सरकारी अहलकारो को रपट भेजने में कोई दुश्वारी नहीं होती... आसानी से लिख सकते है कि बस पर सवार केवल पाच पसिन्जर मारे गये या लापता है। राज्य सरकार को भी मृतको को एक-एक लाख रुपिया की मदद देने मे बाल-बाल बच जाने से अरबो रूपये की आकस्मिक बचत होती है, जो सामाजिक कार्यकर्त्ताओं और सरकारी नौकरो के बुरे वक्त मे काम आती है। वे घर के बेलन से अपनी खोपडी बरकरार बनाये रखने के लिए ज्वेलरी की दू ानो मे जाने का सौभाग्य प्राप्त करते है, मनचाही जगह पर अपना तबादला कराने या जॉच-वॉच याकि गिरफ्तारी से बाल बाल-बचने में बेचारे इसी सरकारी बचत का तो इस्तेनाल करते है। यह रकम वास्तव मे लक्ष्मी तो है ही..... इसलिये हथेली से फिसलती रहती है। दूसरी बार भी विधायक का टिकट कटाने से लेकर चुने जाने और टिमटमाती बत्ती वाली चौपहिया पाने तक यही हाथ के मैल की प्रकृति वाली निग्रोमनी ही मदद करती है।

जाडे की धूप में मंत्री जी की देह मे सरसों का तेल पिलाते-पिलाते बजरगी ने पूछ लिया— 'सरकार, आप जब सिर्फ विधायक थे... तब की नेतागीरी उन्दा थी या आज की .. जब आप फैक्टरियों, सडकों, सिचाई और पढाई-लिखाई वाले मोहकमो के मुखिया है।' उस ससुरे की आदत ही ऐसी है कि बात करते करते वह मालिस कराने वाले का रोया-रोया देख लेता है, पोशीदा से पोशीदा सुराग निकालने में यूं माहिर .. जैसे धान की भूसी से तेल निकालने वाले सेठ। . . अगर उत्तर न दे कोई या लगातार हुंकारी न भरे वह उसकी बात पर तो तेल्हरिया का सारा ही तेल अपने जांघों मे पोत करके अपनी दोनो हथेली मसलने लगता है।....तो संक्षेप में बोले मत्री जी—'विधायक के रूप में होटल में खाने, कहीं का सफर करने या सिनमा देखने में जेबकतरी करना पडता था, घर बनवाने के लिए सिरीमिन्ट का परमिट भी पंचायत घर के नाम लेना पडता था— अब ऐसी बात नहीं।' बजरंगी ने अपनी करोटीनुमा आखे कटोरे की तरह फैला फैलाकर मत्री जी के उत्तर की थाह ली थी। फिर खू खूं करके अपना नासिका उत्पाद अपने

दाये कर के अंगुष्ठ एवं ज्येष्ठा के सहयोग से छिडककर अवशेष से मंत्री जी की पीठ का लैमिनेशन किया था। इस दौरान एक निश्चित धारणा बना ली थी उसने कि पहली स्थिति में क़ोई शायद टुटपूजिया होता है जबकि दूसरी हैसियत में वह दारोगा से दस हजार गुने बड़ा।

तेल्हरिया का तेल अगूठे से काछ काछकर दोनों कानों की गुफायें तर किया, अनन्तर उसने एक और छुर्रा छोड़ा-- सरकार ! अब तो बडा बुरा जुग आ गया है. . तुम जब मत्री नही रहोगे और आगे के चुनाव मे भी चित्त हो गये. .....तब क्या करोगे? कान मे मफलर बॉधकर यूँ ही बैठे बैठे अख़बार पढ़ोगे या फिर..?

अरे तब तो वक्त ही वक्त रहेगा मेरे पास। तू मेरी पावों की उगलिया चटकाता रहेगा और मैं किताब लिखूगा। इसमें जिन्दगी के तजुर्बों का लेखा-जोखा करुँगा। आगे अपने मन मे ही बुदबुदाते रहे वे-- जिन जिन बातों पर मेरी कानखिचाई या मिट्टीपलीत हुई है उनके बारे मे जनता जनार्दन के सामने खुद को बेकसूर बताकर बड़े बडों को बेनकाब करुँगा। कहूगा कि मै कोई बुरा आदमी या विल्लन नहीं।

यकायक बैठे-बैठे ही वह किसी योगिक क्रिया के प्रभाव से सीने की अंदरूनी दीवारों में चिपका मलाईनुमा पदार्थ मुँह तक लाये फिर उस पर जीभ के बल्ले से स्कैवरड्राइव मारा तो वह बिना ठप्पा खाये गली में जाकर गिरा। बजरगी पहले से ही कायल था ऐसे दृश्य का। मंत्री जी के इस प्रतिभा-प्रदर्शन पर ज्यादा ध्यान न देकर बोला वह-- 'जिन जिन वोटरों ने आपको बार बार वोट दिया, उनके घरो में मुडन छेदन शादी वगैरह होते ही रहते है। एहसान चुकता करने के लिये ऐसे मवाको पर घुइयॉ छीलने का काम कम इज्जत का नहीं। उसके बाद वाले मतदान मे तुम्हारी यही सेवायें काम आयेगी. ...... साल साल पर तो होते हैं कोई न कोई चुनाव !

इस बात से मत्री जी को कुछ खुशी और कुछ खुन्नस महसूस हुई तो अपने कथन का औचित्य स्थापित करने के लिए बजरगी बोलता गया- अब देखो न ....ठाकुर का मतलब तो मालिक होता है। आप ही इतने बडे होकर हमे नाऊ ठाकुर कहते हो। मैंने जो काम बताया, उससे आपकी इज्जत मे कम इजाफा नही होगा। अपने मतदाताओं से ली गई बेगार का इस तरह से प्रायश्चित भी कर सकते हो।

यह तो हुई समाज और देश की खातिर जी-जान अर्पित-समर्पित करने वाले देश के महान रहनुमाओं की महानता......... चलिए आगे बतायें कि और क्यों महान है अपना देश ! इसमे गुलामो ने भी बादशाहत की, राजेश्वरी रजिया बेगम तो एक गुलाम को ही दिल दे बैठी, जोधा बाई ने भी एक तीर से ही दो शिकार किये-- अकबर बादशाह की बीबी बनी और अपने भाई को नौकरी भी दिलाई। अकबर बादशाह ने बुद्धिबली बीरबल को तो विश्व विख्यात मसखरे का रूतवा दिया- टोडरमल से खेतों की मेडें बनवाई। नीद लगने के लिए तानसेन से सितार सुनता।

किसी पुराने जमाने की बात बता रहा हूँ। देश की महानता से प्रसन्न होकर इसमें एक आदमी आता था। इसे दस खोपडिया थीं, नाके भी दस, मुंह भी दस और तीन सौ दस दॉत थे। पाव सिरिफ दो थे। चारो तरफ समुन्दर से घिरे गुब्बारे की सूरत से मिलते-जुलते देश का यह आदमी भारत की खासुलखास औरतो पर हाथ साफ किया करता।.......... वैसे तो यह देश हमारे आज के मतदाता से एक हजार पीढ़ी पहले से ही गुलाम था लेकिन हम अग्रेजो के शासन की शुरूआत के पहले इसे कतई गुलाम नही मानते। .. .और सन् १९४७ में जब से अग्रेजो के मुह से उबरा यह, हम इसे भारत माता कहकर दिनरात चूसते है। इस कदर के शोषण के बावजूद वह हरिद्वार की एक बहुखडी की ग्राउन्ड फ्लोर में वस्त्राभूषणो से सजी-धजी लगातार पान चबाती नितान्त निश्चिन्ता सी खडी रहती है। उसे खबर तक नही होती कि उसके सारे ही केश-काट काटकर नेस्तनाबूत किए जा

चुके है, गैरमुल्की हमलो और मुल्की तू-तू मैं-मैं से रक्त न्यून हो चुकी है वह, कितने ही करोड बच्चे भूखे प्यासे है, नगे है कमर में अंगौछा तक नही लपेटे.. . स्कूलो मे दाखिला तक नहीं पाते, और अशिक्षित है।

इस मुल्क का अफसर फाइल मास्टर है, न-ाम का करामाती है, कुबेर का पनाती है। अर्जुन पुत्र अभिमन्यु की तुलना मे बुद्धिमान भी-- कहीं भी नही फसता।

द्रव्यन्यून पिता की बालिकाये कुवॉरेपन में ही फासी लगाती हैं, अधिकाश शादी के बाद जलते स्टोव से काम चलाती है.... ...या सीलिंग फैन से लटककर जीवन सफल बनाती है। ऐसी नौबत न आई तो चौदह गरम्मसालो के समिश्रण से छोले पकाकर खाने-खिलाने और पति की कमीजों को जिद्दी मैल से छुटकारा दिलाने मे ही वे अलौकिक गार्हस्थिक सुख पाती हैं।

देश की महानता के आख्यान को अब विराम लगाता हूँ वर्ना पाटलिपुत्र की खाया देवी के बच्चे फ्रिज मे धरी सारी रबडी चट कर जायेंगे, ना-फूल देवी फूलने फलने से महरूम रहेगी, मेरा इकलौता लडका इम्तहान में ठीक से नकल नही कर पायेगा, नर-सिंह की शक्लोसूरत वाला वह सख्श अदरक शहद के बिना ही टेबल पर धरी सारी ही यूरिया फॉक जायेगा।

कन्धो से कटे हाथों वाले इस देश की महानता की चर्चा यहीं बन्द समझिये। इसको पढने से नि:सन्तान को गोकर्ण, धनहीन को श्याम लक्ष्मी, नास्तिक मानव को राहु-केतु, कालभैरव और महाशक्ति का साक्षात्कार आदिक परम् फल-प्राप्ति सुनिश्चित है। इसका पारायण न करने वाला पुरुष अपुरुष हो सकता है, और अकारण सात्विक एव निर्विकार भी।

□

कौशलेन्द्र पाण्डेय हिन्दी जगत के लब्धप्रतिष्ठ बहुविधा साहित्यकार हैं। विदेशो में भी ये बडी ही रुचि से पढे जाते हैं। हमारे द्वारा प्रकाशित की गयी 'गुदगुदी' कृति इनके जागतिक देखे-परखे का आक्रोशजन्य विवरण है। ये जिस ईमानदारी से विभिन्न विसंगतियों की ओर सकेत करते हैं, उसी तरह उनके समाधान भी प्रस्तुत करते हैं। इसके पारायण के पश्चात् आप भी समाज और राष्ट्र-हित में ठोस योगदान करने का उद्योग करेंगे, इस कृति को इनकी पूर्व की कृतियो की तरह ही सम्मान प्रदान करेंगे, ऐसा विश्वास किया जा सकता है।

'सानुबन्ध '